वर्ष 4, अंक 12, इलाहाबाद अक्टूबर 2005

ट्रीय हिन्दी मासिक

हसमाज

A+ Rated IT Institute

by All India Society for Electronics & Computer Technology

MIIT

MICROTEK INSTITUTE OF INFORMATION TECHNOLOGY

(Direct Admission Notice for Session 04-05)

Affiliated with Makhanlal Chaturvedi University, Bhopal Recog. By U.G.C. & A.I.U

3 Years Full Time Regular Degree Programme

BCA

Bachelor of Comptuer Application

Eligibiliy: 10+2 With any discipline

Fee Structure: Rs. 10,000/- per semester

BSc(IT)

Bachelor of Information Technology

Eligibiliy: 10+2 With Mathmatics

Fee Structure: Rs. 8,000/- per semester

PGDCA

Post Graduate Diploma in Computer Application

Eligibiliy: Graduation in any disciplineFee : Rs. 7,000/- per semester

MICROTEK

NIRMAL COMPLEX, MALDAHIYA, VARANASI Tel: 0542-2207001, 2207002, Fax : 0542-2208248

Separate Hostel Facility for Boys and Girls

विश्व स्नेह समाज राष्ट्रीय हिन्दी मासिक
वर्ष : 4, अंक : 12 अक्टूबर 2005

संपादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

कार्य. संपादकः
डॉ0 कुसुमलता मिश्रा
साहित्य संपादक
डॉ0 भगवान प्रसाद उपाध्याय
विज्ञापन प्रबंधक / प्रबंध संपादक
श्रीमती जया शुक्ला
उप संपादक
रजनीश कुमार तिवारी
सलाहकार संपादक
नवलाख अहमद सिद्दीकी
ब्युरो प्रमुख / गिरिराजजी दूबे

सम्पादकीय कार्यालयः
एल.आई.जी.-६३, नीमसराय,
मुण्डेरा, इलाहाबाद -२११०११
मो०: ६३३५१५५६४६

इस अंक में

१. कहीं भारत में लोकतंत्र की हत्या तो नहीं हो गई है ५
२. मुस्लिम दलितों को भी दिया जाना चाहिए आरक्षण ६
३. विदेशी कल्चर के कहर से खुद को बचाएं ७
४.उदियमान व उर्जावान विधायक, ई० उदयभान करवरिया ८
५. चक्कर एडमिशन का ६
६. देवरिया महोत्सव एक रिर्पोट १०
७. कहॉनी १२, २३
८. साहित्य मेला २००५ १४
६. इस्लाम और औरत २०
१०. कैसा रहेगा शनि साढ़े साती के दौर में ३२
११. समीक्षा ३४

आपके विचार स्नेह के साथ

स्तरीय सामाग्री आपके सम्पादकीय कौशल का परिचय देती है

मान्यवर, आप द्वारा प्रेषित विश्व स्नेह समाज का अंक मिला. आप बहुत अच्छी साहित्यिक पत्रिका प्रकाशित कर रहे हैं. इसके लिए आप बधाई के पात्र हैं. पत्रिका की स्तरीय सामाग्री आपके सम्पादकीय कौशल का परिचय देती है. पत्रिका हर कोण से उपयोगी और पठनीय हैं. दाऊजी का होली पर विशेष आलेख बड़ा अच्छा लगा. कैरियर पर सलाह बड़ा अच्छा कार्य हैं. आप जैसे मनीषियों के कठिन तप से हिन्दी विश्व भाषा बर कर रहेगी.

दर्शन सिंह रावत, ज–10, से.5, हिरण मगरी, उदयपुर,

आपका संपादकीय विवेक व कौशल निश्चय ही अभिनंदनीय हैं

अत्र कुशलं तत्रास्तु! 'विश्व स्नेह समाज अप्रैल05 का अंक मिला. साभार ध न्यबाद. एक लघु किन्तु नियतकालीन मासिक पत्रिका में आप अपने पाठको के लिए कितनी ढेर सारी पठनीय सामग्री जुटा लेते हैं–सचमुच विस्मय होता हैं. सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक के साथ–साथ इसका साहित्यिक स्वरुप भी आप बखूबी निभा लेते हैं. 'भिन्न रुचिर्हि लोकः' सूक्ति का आप पूरा ध्यान रखते हैं. जरूरी समाचार और स्वास्थ्य परक संक्षिप्त लेख भी पत्रिका को महत्वपूर्ण बनाते हैं. श्री अशोक अंजुम की कविता 'आग का राग' और श्री अवधेश कुमार अवस्थी की कविता 'मेरी मां' मुझे विशेष प्रभावी लगी. पूरी पत्रिका में आपका संपादकीय विवेक व कौशल निश्चय ही अभिनंदनीय हैं. शुभमस्तु!

प्रो. भगवानदास जैन, बी.10, मंगलतीर्थ पार्क, मणीनगर, अहमदाबाद

तीन रुपये में तीस पृष्ठ की पत्रिका

आदरणीय भाई श्री द्विवेदी जी, नमस्कारम्!

पत्रिका का अप्रैल05 अंक मिला. हार्दिक आभार. यह अंक काफी कुछ समेटे हुए है–अपने ऑचल में. कहानी, व्यंग्य, होली के रंग, कैरियर, साक्षात्कार, व्यक्तित्व, चुटकुले, कविता, अध्यात्म, साहित्यिक समाचार आदि.

विशाल शुक्ल का जनेउ विषयक आलेख पठनीय हैं. काव्य खण में अशोक अंजुम जी की रचना इस की अंक समृद्धतम रचना हैं–आग का राग, सइसमें संवेदना के प्रखर स्वर निनादित हुए हैं. डॉ. ओकार 'खाकी' की ग़ज़ल के कुछ शेर भी पसंद आये. सभी को बधाई.

तीन रुपये में तीस पृष्ठ की पत्रिका–कमाल की बात हैं! सौदा सस्ता हैं. मेरा आर्थिक सहयोग भी मिलेगा, रचनात्मक भी. धन्यबाद!

जितेन्द्र जौहर, एल.22 / 11, रेणुसागर, सोनभद्र

आपकी प्रशंसा के शब्द चयन की सार्मथ्य इस समय मुझमें नही है

श्री सम्पादक जी, सादन नमन!

विश्व स्नेह समाज का अप्रैल अंक आद्योपान्त पढ़ा. पठनीय और सग्रहणीय सामग्री संयोजन आपके सम्पादकीय श्रम को दर्शाता हैं. भारतीय संस्कृति और विश्व स्नेह समाज में अदभुत सामंजस्य दिखा. बहुविध रचनाओं और समग्र

जीवन दर्शन से ओत प्रोत पत्रिका पहली बार मन लगाकर पढ़ा. आपकी प्रशंसा के लिए शब्द चयन की सार्मथ्य इस समय मुझमें नही हैं. हॉ एक बात अवश्य है कि 'स्नेह बाल प्रतियोगिता में प्रौढ़ प्रश्न देखकर विस्मय हुआ. इसमें सरलता की अपेक्षा हैं.

डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय, सम्पादक 'संवाद प्रभा' पत्रकार भवन, गॅधियांव, इलाहाबाद

आदरणीय द्विवेदी जी, सादर नमन! विश्व स्नेह समाज का अप्रैल अंक मिला. धन्यबाद. जब जैसा, ब तैसा. बसपा जब ब्राहमण विरोधी बनकर सफल नहीं हुई तो ब्राहमणों का समर्थन लेने का प्रयास करने लगी. सच्चाई यही है कि कोई भी राजनीतिक दल किसी खास जाति, धर्म या सम्प्रदाय को छोड़कर सफल नहीं हो सकता. उसे सफलता प्राप्त करने के लिए सभी को साथ लेकर चलना होगा. बसपा को भी यह बात अब समझ में आ गई हैं.

उषा त्रिपाठी का आलेख –रेडियों उद्‌घोषक बनकर भी कैरियर संवार सकते हैं' बेरोजगारों को एक मार्ग सुझाता हैं. विशाल शुक्ल का आलेख 'शरीर का कवच जनेऊ' आलेख 'छिपकली का सिर पर गिना मान सम्मान का सूचक होता हैं' आलेख ' राष्ट्र गौरव हेमवती नन्दन बहुगुणा', मदर टेरेसा और अनिल कोहली का आलेख 'ललिता महारानी नैमिश्वर शम्भु भवानी' ज्ञानबर्धक हैं. 'मम्मी पापा के लिए आलेख, श्रीमती मोना द्विवेदीका आलेख 'गर्भ निरोध के कुछ उपाय, तथा डॉ0 श्रीमती पी. दूबें. की स्वास्थ्य सम्साएँ उपयोगी हैं. वरुण सिन्हा का कहानी 'वो तीन दिन', व्यंग्य'नेताय नमो नमः', गौरव तिवारी की कहानी 'सुबह का भुला', अशोंक अंजुम की कविता 'आग' का राग, जरा हंस दो मेरे भाय, मुझे विशेष रुप से पंसद आई.

अन्य आलेख एवं काव्य रचनाएं भी पठनीय हैं. आशा है कुशल होगें. पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना के साथ. आपका

अभय कुमार, ओझा, सहायक, व्यवहार न्यायालय, खगड़िया, बिहार

गागर में सागर

आदरणीय बहिन जया जी, नमस्कार! विश्व स्नेह समाज का अंक मिला. हार्दिक आभार. निसंदेह पत्रिका का कलेवर लघु हैं लेकिन गागर में सागर हैं. मेरी आदत है सम्पादकीय से ही शुरू करता हूँ बहिन कुसुमलता मिश्रा जी का लेखन उनके विचार पढ़ें. अच्छे लगें. जो शेर उन्होंने कोड किया है वह अच्छा लगा इसीलिए उसे अपनी डायरी में नोट कर लिया हूँ. लेख अच्छे लगें. ग़ज़ले राजकुमारी शर्मा, डॉ. रोशन, रमेश चन्द्र श्रीवास्तव, को बधाई.

माता प्रसाद शुक्ल, ग्वालियर, म.प्र.

सम्माननीय श्री द्विवेदी जी,

अप्रैल05 में चिर परिचित लेख नैमिश्वर शम्भू भवानी, पढ़ कर मन खुशी से उछल पड़ा आपका किन शब्दों में धन्यबादा करुं शब्द ही नही मिल रहे हैं. आप मेरा हार्दिक धन्यबाद एवं आभार स्वीकार करें. मुझे पूर्ण विश्वास है कि आगे भी आप इसी प्रकार मुझ पर अपना आर्शीवाद एव स्नेह बनाए रखेगें.

अनिल कोहली,,शिवपुरी, दयाल,गुडगाव

सविनय निवेदन है कि आपके प्रकाशन की कम्पलीमेन्टरी कापी मिली. आपका प्रकाशन काफी रसप्रद एवं मोहिनीप्रद पाया गया. समाज के हर स्तर, जाति, संप्रदाय के लोग इसमें समाहित नजर आते हैं. **राजु त्रिवेदी,** कार्यालय अधीक्षक, भावनगर

सादर नमन वंदे, विश्व स्नेह समाज मिली. बहुत ही सराहनीय है लेख, कविता अच्छे हैं. हम सबको यह पत्रिका अच्छी लगी. सभी साथियों को मेरा सादर प्रणाम. **लक्ष्मीकांत प्र. दाभाडकर** जालना,

प्रथम बार लोकयज्ञ के माध्यम से विश्व स्नेह समाज के बारे में जानकारी मिली. मैं हास्य व्यंग्य पर लिखता हूँ. क्या आपकी पत्रिका में इस हेतु स्थान मिल सकता हैं?

क्या मैं पूर्व प्रकाशित रचना भी भेज सकता हूँ? प्रकाशित रचना की फोटो प्रति मान्य है अथवा नहीं. मुझे आपके पत्र की प्रतिक्षा रहेगी. धन्यबाद

भवानी शंकर 'तोसिक' पीसांगन, जिला–अजमेर, राजस्थान

विश्व स्नेह समाज का नवीन अंक प्राप्त हुआ. इसके लिए मैं आपको कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ. आशा करता हूँ कि आप भविष्य में भी मेरी रचनाएं प्रकाशित करते रहेगें. महाशय, मेरी एक कविता 164 पंक्तियों की है, हां संसद पर हमले फिर से' क्या वह आप प्रकाशित करेंगें. कृपया पोस्टकार्ड द्वारा सूचित करने की कृपा करेगें.

शरद कुमार,, मुजफ्फरनगर, बिहार

आपका दिसम्बर का लिखा हुआ पत्र एवं विश्व स्नेह समाज का अंक आज ही मिला, दरवाजे के पिछवाडे से. पता नहीं वहॉ कैसे चला गया. विलम्ब के लिए खेद हैं.

विश्व स्नेह समाज का नाम प्रोत्साहन के स्थायी रजिस्टर मे लिखा लिया हैं. प्रोत्साहन का नवीनतम अंक इस पत्र के साथ प्रेषित हैं. भविष्य में भी प्रोत्साहन के अंक यथा समय आपको मिलते रहेगें. प्रोत्साहन विश्व स्नेह समाज के साथ है. **जीवितराम सेतपाल,** प्रधान सम्पादक, प्रोत्साहन, मुम्बई

बन्धु, स्नेहिल नमन,
आशा है कि सपरिवार एवं साहित्यिक मित्रों सहित आप सानन्द होंगें. आपका स्नेह पत्र मिला. मॉ वाणी आपको साहित्य पथ पर निरन्तर अग्रसर रखें. आपमें हिंदी साहित्यकाश को अपनी कोमल रश्मियों से ज्योतित करने की सामर्थ्य है. ऐसी कामना हैं.

माथे तिलक लगा दें रोली, भरे कामनाओं की झोली,
गले मिलें सब यहॉ प्यार से, देखों कब आये वह होली.

मां बाग्देवी की अनुकम्पा हुई तो किसी साहित्यिक कार्यक्रम में अवश्य आपके स्नेहिल दर्शन होगें.

मुन्ने बाबू दीक्षित, शशांक, हिंदी साहित्य संगम,पीलीभीत,उ.प्र

हम सब साथ–साथ पत्रिका के माध्यम से आपकी पत्रिका विश्व स्नेह समाज के बारे में ज्ञात हुआ. पढ़ने की इच्छा बलवती हुई है. विनम्र अनुरोध है कि एक प्रति भिजवाने का कष्ट करें.

मैं भी उत्तर प्रदेश के मैनपुरी जिले का मूलतः रहने वाला हूँ. आगरा विश्वविद्यालय से पीएचडी करने के बाद दिल्ली में यूपीएससी में सेवारत हूँ. मैं लेखन का भी प्रयास करता हूँ. अनुमती होगी तो रचना भेजने का प्रयास करुंगा.

डॉ0 पूरन सिंह, फरीदपुरी, नई दिल्ली

हम आपकी पत्रिका में विज्ञापन देना चाहते हैं एवं उसके सदस्य बनना चाहते हैं. कृपया हमें अपनी विज्ञापन तालिका एवं पत्रिका के नवीनतम् अंक की नमूना प्रति शीघ्र भेजने का कष्ट

dja विनोद पुस्तक मंदिर आगरा.2

मान्यवर,
पत्रिका का अंक मिला. इसमें निरन्तर प्रगति और सुधार देखने को मिल रहा हैं. शीघ्र ही यह हिन्दी की महत्वपूर्ण पत्रिका हो जायेगी.

ओमप्रकाश वर्मा, जमशेदपुर

मान्यवर द्विवेदी जी
आपके द्वारा प्रेषित विश्व स्नेह समाज का अंक प्राप्त हुआ. अंक में प्रकाशित आपकी बात प्रेरक हैं. साथ ही चिन्तन के नये आयाम भी लिए हुए हैं. श्री राजेन्द्र चढ्डा का मन्थन 'कोढ़ में खाज' बन सकते हैं बंगलादेश के अवैध घुसपैठिए सत्य के काफी निकट है. इस दिशा में हम सभी को सचेत एवं सतर्क रहने की आवश्यकता हैं. प्राथमिक शिक्षा के नाम पर जो फर्ज अदायगी हो रही है वह घोर चिन्ता का विषय हैं. श्री शैलेन्द्र पाण्डेय ने इस राष्ट्रीय अभियान के सम्मुख लग रहे प्रश्नवाचक चिन्ह को व्याख्याति करने का सार्थक प्रयत्न किया हैं. श्री अभिनव ओझा की कहानी 'जायज कमाई' तथा श्री वृन्दावन त्रिपाठी 'रत्नेश की कविता रंगे सियारों की बस्ती प्रशंसनीय हैं. अन्य सामग्री भी रोचक तथा पठनीय हैं.

कुल मिलाकर प्रस्तुत अंक आपके सम्पादन कौशल का विदाध प्रमाण हैं. ऐसी उत्तम प्रस्तुति के लिए हार्दिक साधुवाद. आप विश्व स्नेह समाज के अंक भेजते रहते हैं इसके लिए हृदय से आभारी हूं.

डॉ. गणेशदत्त सारस्वत, सम्पादक, मानस चन्दन, सीतापुर, उ.प्र.

विश्व स्नेह समाज का फरवरी अंक मुझे अब मिला. जरा डाक व्यवस्था की कार्यशैली तो देखिए. खैर.. आवरण आकर्षक है, कागज मामूली है, रचनाएं सामान्य हैं. हॉ कुछ रचनाएं स्तरीय एवं प्रभावशाली भी हैं. कविताओं में स्वामी श्यामानन्द सरस्वती एवं डॉ. राजकुमारी शर्मा राज की ग़ज़ले प्रभावशाली हैं. कुछ अपनी गज़ल एवं एहतराम इस्लाम की प्रेषित कर रहा हूँ. आशा है यथायोग्य स्थान देगें

रमेश नाचीज,कर्नलगंज, इलाहाबाद

आदरणीय संपादक जी,
सादर नमन! आपकी पत्रिका नियमित प्राप्त हो रही हैं. पत्रिका का कलेवर प्रकाशित सामग्री उच्च कोटि की हैं पत्रिका लघु है पर सारगर्भित हैं. यह राजनीतिक, साहित्यिक, अध्यात्मिक तथा आत्मचिंतन की सामग्री से भरपूर है. विभिन्न सामाजिक तथा राजनीतिक पृष्ठभूमि पर लिखी गई संपादकीय अति श्रेष्ठ होती हैं. आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास है कि आपकी पत्रिका विश्व स्नेह समाज पाठको के बीच अपना स्नेह इसी तरह बढ़ाती रहेगी तथा समाज का मार्गदर्शन करते हुए उन्नति की सीढ़ियां चढ़ती रहेगी.

मधुरानी सिंह, संपादक, जनप्रवाह ग्वालियर, म.प्र

लोकयज्ञ में आप द्वारा आमत्रित रचनाओं का विज्ञापन पढ़ा. उनमें रचनाओं की मांग तो की हैं उनमें काव्य या कहॅानी या हाइकू मांगी हैं. इसके बारे में जानकारी उपलब्ध नहीं हैं. कृपया बताने का कष्ट करें. प्रवेश शुल्क, बायोडाटा, पांच वर्ष का योगदान तो आपने स्पष्ट कर दिया हैं. **चन्दन चावला,** सह संपादक, अदबी माला, मुक्तसर, पंजाब

इनके भी पत्र मिलें

पवन कुमार सिद्धार्थ, निदेश राष्ट्रीय समिति, राबर्टसगंज, सोनभद्र
दामोदर भगेरिया, सम्पादक गीता से जुड़े, जयपुर, राजस्थान
सूर्य नारायण शूर, मेजा, इलाहाबाद
नरेश कुमार सचदेवा, गोपाल नगर, हरियाणा
पं. मुकेश चर्तुवेदी, सागर, म.प्र.
रमेश कमार रुहेला, भरतपुर, राजस्थान
पी.सी गुप्ता,समस्तीपुर, बिहार
आफ़ताब अहमद सिद्दीकी,उतरौला, बलरामपुर, उ.प्र.
नरेश हमिलपुरकर,शास्त्री भवन, नई दिल्ली
एम.रामचन्द्र राव, शिवनगर, बरंगल

अपनी बात

संपादकीय

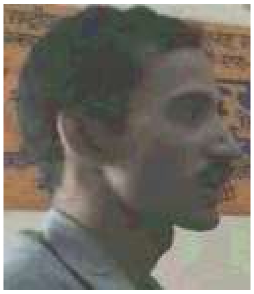

नेताओं के आगमन पर जनता का पैसा पानी की तरह क्यों बहाया जाता हैं?

हमारे देश में जब जननेता अपने दौरे पर आता है तो आमजन को टैफ्रिक व्यवस्था में रुकावट, बैरकेटिग देखकर अनायास ही यह एहसास हो जाता है कि हमारे द्वारा ही चुना गया कोई जनप्रतिनिधी हमारे बीच पधार रहा हैं. जिसें आमजन के बीच होना चाहिए वह आमजन से इतनी दूर होता है कि आमजन उससे अपनी समस्याएं बताना दूर उसके दर्शन करने तक को मशक्कत करनी पड़ती है उसक`बावजूद अगर वह अपने जनप्रतिनिधि के दर्शन पा जाये तो अहोभाग्य ही समझें. अक्सर ऐसा होता है कि जब कोइ नेता मंत्री बनकर हमारे बीच आता है तो लाखों रुपयें पानी तरह उसके आव भगत में खर्च कर दिए जाते हैं. लेकिन जब आमजन अपनी सार्वजनिक समस्याओं बिजली, पानी, सड़क, चिकित्सा की बात करता है तो पैसे की कमी का रोना रोया जाता हैं.

अभी 26 सितम्बर को हमारे प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री, किसान नेता, गरीबों के मसीहा जब इलाहाबाद, वाराणसी, मिर्जापुर मंडलो की समीक्षा करने आए तो बमरौली एयर पोर्ट से सर्किट हाउस तक पूरे जिले की पुलिस, सभी विभागों के आला अधिकारी लगे थें. सर्किट हाउस में उनके व उनहे सहयोगियो के लिए नयी कुर्सीया मंगायी जा रही थी, नयी कॉलीनें बिछ रही थी, बकायदा किसी के घर में बारात या उत्सव के होने जैसी तैयारी हफ्तों पहले से दिख रही थी. उनके आने के एक दिन पहले से बैरकेटिग कर दी गयी. एक दिन पूर्व उनके स्वागत की तेयारी में जिले के सभी आला अधिकारी बीसीयों गाड़ियों को लेकर केवल यह अभ्यास किये कि उनका कैसे स्वागत किया जाएगा. दूसरे दिन जब हमारे माननीय गरीब के मसीहा का आगमन हुआ तो उनक आने के दो घंटे पहले ही सारी ट्रेफिक रोक दी गयी. शाम को जब जाने का समय हुआ तो भी यही हाल रहा. जब तक उनकी जहाज इलाहाबाद एयरपोर्ट को छोड़ नहीं दी तब तक आम जन को रोके रक्खा गया. किसी को आफिस जाना है, किसी को स्कूल जाना है, किसी को अस्पताल जाना, किसी को कचहरी तो किसी कहीं जाना है लेकिन वे सभी लोग गरीबो के मसीहा के आगमन की प्रतीक्षा में टकटकी लगाये अपना समय सड़क पर बिताने को मजदूर थें. वकीलों और पुलिस में हाईकोर्ट के पास लगभग पांच घटे चले पत्थराव जिसमें आमजन ने भी भरपूर सहयोग दिया कहीं न कहीं इस फिजूलखर्ची परेशानी व दिखावे के विरोध स्वरुप ही था. आमजन को इसका विरोध करने का कोई मौका नहीं मिल पा रहा था. यह मौका मिला उन्हें वकीलों की अगुवाई में. अगर ऐसे ही हालात बने रहे तो शायद आने वाले दिनों में कोई क्रांति का बिगुल इन नेताओं के खिलाफ बजे तो कोई अतिश्योक्ति नही होगी. यह आगजनी व पथराव सामान्य दृष्टिकोण से उचित तो नहीं ठहाराया नहीं जा सकता लेकिन भारत के नेता चुनाव जीतने के बाद अपने आप को आमजन का रहनूमा समझ बैठने की भूल कर ही बैठते हैं. उन्हें भारत की भोली भॉलि जनता का शोषण करने में ही मजा आता हैं. यह कोई एक नेता के आने की बात नहीं है ऐसा लगभग प्रत्येक मंत्री या बड़े नेता के आने बाद होता है. क्या नेता सीधे ऐसी जगह पर नहीं उतर सकता जहॉ से पब्लिक को कोई परेशानी भी नहीं हो और उनका काम भी हो जाए. सुरक्षात्मक दृष्टिकोण से भी उनके हित में हो.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायलीय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

स्वामी, संपादक, प्रकाशक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई बाग से मुद्रित कराकर
277 / 486, जेल रोड, चकरघुनाथ नैनी से प्रकाशित किया.

हिन्दी के मूर्धन्य विद्वान डॉ. रामकुमार वर्मा

आधुनिक हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में द्विवेदी युग के बाद का परिदृश्य विशेष उल्लेखनीय हैं. इस परिदृश्य में हिन्दी भाषा और साहित्य को रामकुमार जी के रुप में एक ऐसी उदीयमान प्रतिभा के दर्शन हुए जो अपनी सृजनात्मक क्षमता और सक्रियताओं में पर्याप्त आश्वस्तिकारी थी. रामकुमार जी का जन्म १५ सितम्बर १६०४ ई को सागर, म.प्र. के गोपालगंज मोहल्ले में हुआ था. पिता श्री लक्ष्मी प्रसाद वर्मा डिप्टी कलक्टर थे और माता श्रीमती राजरानी देवी एक धर्म परायण प्रबुद्ध महिला थी. इस समय डॉ. वर्मा जी की जन्म शताब्दी वर्ष मनाया जा रहा है. आशा की जानी चाहिए कि शताब्दी वर्ष के इस अवसर का सार्थक उपयोग डॉ० वर्मा के बहुमुखी और गतिशील व्यक्तित्व के सम्यक् मूल्याकंन और आंकलन के लिए किया जा सकेगा.

बालक रामकुमार की प्रारम्भिक शिक्षा रामटेक, नागपुर नरसिंहपुर और जबलपुर में हुई. जब ये कक्षा दस के विद्यार्थी थे उसी समय महात्मा गाँधी ने असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ किया. इन्होंने स्कूल छोड़ दिया और असहयोग आन्दोलन में सक्रिय भाग लेना शुरू किया. इनकी प्रथम काव्यकृति 'गाँधी गॉन इसी समय रची गयी थी. ब्रिटिश सरकार ने इसे जब्त कर लिया और बालक रामकुमार को कोड़ों की सजा दी गई. वर्मा जी का काव्य राष्ट्रीयता के संस्कारों की उपज हैं.

हाईस्कूल की परीक्षा उर्तीर्ण करने के पश्चात इन्होंने जबलपुर के रोबर्टसन कॉलेज से प्रथम श्रेणी में इन्टर की परीक्षा उत्तीर्ण की, तदुपरान्त इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी.ए. व एम.ए. हिन्दी की परीक्षाएँ उच्च श्रेणी से उत्तीर्ण कर वहीं हिन्दी विभाग में प्राध्यापक नियुक्त हो गये. इलाहाबाद विश्वविद्यालाय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष और प्रोफेसर के गरिमामय पद से वे सन् १६६६ में सेवानिवृत हुए.

वर्मा जी का विवाह सन् १६२६ में रायबहादुर रामानुज प्रसाद जी की सुपुत्री श्रद्धेया लक्ष्मी देवी वर्मा के साथ सम्पन्न हुआ. वे एक रामभक्त विदुषी महिला थी. उनके द्वारा रचित घनाक्षरी और गीत अत्यन्त लोकप्रिय रहें.

वर्मा जी बहुमुखी प्रतिभा के रचनाकार हैं. अपनी यशस्वी कृतियों से उन्होंने हिन्दी साहित्य में विभिन्न विधाओं में श्रीमण्डित किया हैं. वे एक साथ कवि, नाटककार, एंकाकीकार, समीक्षक, सम्पादक और संस्मरण लेखक हैं. डॉ. वर्मा को हिंदी संसार एक स्वर से हिन्दी एंकाकी का जनक स्वीकार करता हैं. जीवन के अन्तिम समय तक वे निरन्तर लिखते रहें और उनकी नव्यातिनव्य कृतियॉ प्रकाशि होती रहीं. वे भारतीय संस्कृति के सम्पोषक साहित्यकार हैं. अपने जीवन में १०१ रचनाएँ रचकर, हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं को समृद्धिशाली बनाकर ५ अक्टूबर सन् १६६० को डॉ० वर्मा वैकुण्ठवासी हुए.

<u>नियुक्तियॉः</u>-सन् १६२६ में एम.ए. परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करते ही वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में नियुक्त हुए जहॉ ३७ वर्षो तक अध्यापन कार्य करते हुए वे विभागाध्यक्ष के रुप में सन् ़६६६ में कार्यमुक्त हुए.

सन् १६४८ में मध्य प्रदेश शासन के निमन्त्रण पर वे प्रौढ़ शिक्षा विभाग के निदेशक होकर एक वर्ष के लिए नागपुर गयें.

सन् १६५७ में सोवियंत संघ के निमन्त्रण पर भारत शासन के द्वारा वे हिन्दी विभाग के अध्यक्ष के रुप में मास्कों, सोवियंत संघ भेजे गयें.

सन् १६६३ में नेपाल के त्रिभुवन विश्वविद्यालय में शिक्षा सहायक के रुप में उन्हें निमन्त्रित किया गया.

सन् १६६७ में श्रीलंका के पैरेदेनिया विश्वविद्यालय में वे भारतीय भाषा विभाग के अध्यक्ष के रुप में भेजे गएं.

सन् १६६६ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग में प्रोफेसर के रुप में नियुक्त हुए.

सन् १६६७ में उत्तर प्रदेश शासन द्वारा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के शासी मण्डल के अध्यक्ष नियुक्त हुए.

सन् १६७५ में प्रयाग में हिन्दुस्तानी एकेडेमी के अध्यक्ष नियुक्त हुए.

सन् १६८१ में श्रीमती इन्दिरा गॉधी द्वारा केन्द्रीय हिन्दी परामर्शदात्री समिति के सदस्य नामित हुए.

सन् १६८२ में राष्ट्रीय ग्रन्थ विकास काउन्सिल के सदस्य नामित हुए.

सन् १६८३ में श्री सुब्रहम्य भारती शताब्दी में भारतीय प्रतिनिधि मंण्डल के सदस्य के रुप में शासन द्वारा सोवियंत संघ भेजे गयें.

सन् १६८८ में महिला ग्राम विद्यापीठ के कुलपति नियुक्त हुए.

<u>विदेश यात्रा</u>- सोवियंत संघ-१६५७, नेपाल-१६६३, श्रीलंका-१६६७, सोवियत संघ-१६८३, अमेरिका-१६८४,

लन्दन-१६८४,

पुरस्कार-

सन् १६२०-नागरी काव्य पुरस्कार, १६२२-बेनी माधव खन्ना काव्य पुरस्कार, १६२६-हालैण्ड स्वर्ण पदक, १६३६-देव पुरस्कार,१६४०-रत्न कुमारी पुरस्कार, १६४७-केन्द्रीय शासन नाटक पुरस्कार, १६५०-उत्तर प्रदेश संस्थान पुरस्कार, १६६०-कालिदास पुरस्कार, १६७०-पुनः कालिदास पुरस्कार इत्यादि १६८६-राष्ट्रपति भवन में महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह द्वारा अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पण, १६८७ में एक लाख रुपये के उ.प्र. साहित्य संस्थान का 'भारत भारती पुरस्कार.

अलंकरण-पी.एच.डी-१६४०, पद्म भूषण-१६६३, रत्न-१६६७, साहित्य वाचस्पति-१६६८, आचार्य-१६६८, डी. लिट्-१६६८

कृतित्व- काव्यः-१६२३-वीर हमीर, १६२६-चित्तौड़ की चिता,१६३०-अभिशाप, १६३०-अंजलि, १६३२-निशीथ,१६३३-रूपराशि, १६३५-चित्ररेखा,१६३७ -चन्द्र किरण, १६३६-आधुनिक कवि-३,१६४८-संकेत, १६४६-आकाश गंगा, १६५७-एकलव्य, १६६६-कृत्तिका, १६६६-ये गजरे तारों वाले, १६६७-उत्तरायण, १६७८-सन्त रैदास, १६८५-ओ अहल्या, १६८६-बालि वध

नाटक- १६४६-कौमुदी महोत्सव, १६५४-विजय पर्व,१६५८-कला और कृपाण, १६६७-अशोक का शोक, १६६७-जौहर की ज्योति, १६६६-नाना फड़नवीस, १६७०-जय आदित्य, १६७१-पृथ्वी का स्वर्ग, १६७१-जय बांगला, १६७१-अग्निशिखा, १६७३-सन्त तुलसीदास, १६७४-जय वर्धमान, १६७८-भगवान बुद्ध, १६७६-समुद्रगुप्त पराक्रमांक, १६८०-जय भारत, १६८०-अनुशासन पर्व, १६८२-सम्राट कनिष्क, १६८२-मालवकुमार भोज, १६८३-कुन्ती का परिताप, १६८५-सरजा शिवाजी, १६८५-कर्मवीर कर्ण

एंकाकी संग्रह-१६३५-पृथ्वीराज की ऑखें, १६४१-रेशमी टाई, १६४२ -चारुमित्रा, १६४२-शिवाजी, १६४७- सप्तकिरण, १६४८-रुपरंग, १६४६- कौमुदीमहोत्सव, १६५०-ध्रुवतारिका, १६५०-रम्यरास, १६५१ - ऋतुराज, १६५२ - रजत रश्मि, १६५३ -दीपदान, १६५५-रिमझिम, १६५७-पांचजन्य, १६५८-साहित्यिक एंकाकी, १६५८-मेरे सर्वश्रेष्ठ एकांकी, १६६५-मयूरपंख, १६६६-ललित एकांकी, १६६६-इतिहास के स्वर, १६७१-अमृत की खोज, १६७३-खट्टे मीठे एकांकी, १६८२-बहुरंगी नाटक, १६८३-चित्र एकांकी, १६८४-समाज के स्वर

शोध ग्रन्थ-१६३१-कबीर का रहस्यवाद, १६३८-हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, १६४७-सन्त कबीर, १६५७-साहित्य शास्त्र, १६८४ - रीतिकालीन साहित्य का पुनर्मूल्यांकन

आलोचनात्मक ग्रन्थः१६३०-साहित्य समालोचना, १६४७-हिन्दी साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन, १६४८-विचार दर्शन, १६४६-समालोचना समुच्चय, १६५२-एकांकी कला, १६५७-अनुशीलन, १६६५-साहित्य चिन्तन, १६८३-कबीर एक अनुशीलन

संस्मरणः१६३६-हिम-हास, १६३०-स्मृति के अंकुर, १६८२-संस्मरणों के सुमन

सम्पादनः १६३२-हिन्दी गीति काव्य, १६३७-कबीर पदावली, १६४२-गद्य परिचय, १६४५-आधुनिक काव्य संग्रह, १६४५-आधुनिक हिन्दी काव्य, १६५५ -काव्यांजलि, १६५५-काव्य कुसुम, १६६४-सरस एकांकी नाटक, १६६४ - आठ एकाकी नाटक, १६६७-बरवै रामायण, १६७१-हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों की विवरणात्मक सूची, १६७१-संक्षिप्त सन्त कबीर

अंग्रेजी में लिखित-१. कबीर बायोग्राफी एण्ड फिलॉसफी, २. चारुमित्रा (लेखक द्वारा अंग्रेजी में अनूदित)

डॉ. रामकुमार वर्मा की प्रथम कविता

जिस भारत की धूल लगी है मेरे तन में,
क्या मैं उसको कभी भूल सकता जीवन में?
चाहे घर में रहूँ, रहूँ अथवा मैं वन में,
पर मेरा मन लगा हुआ है इसी वतन में,
सेवा करना देश की, यही एक सन्देश है।
मैं भारत का हूँ सदा, भारत मेरा देश है।

साहित्यकारों से

१. यदि आप अपनी कृति (काव्य संग्रह, ग़ज़ल संग्रह, कहानी संग्रह, निबंध संग्रह, उपन्यास) का विज्ञापन इस पत्रिका में छपवाना चाहते हैं तो रु० १००/-का मनिआर्डर तथा एक प्रति पुस्तक की भेजें

२. यदि आप अपनी कृति (काव्य संग्रह, ग़ज़ल संग्रह, कहानी संग्रह, निबंध संग्रह, उपन्यास) प्रकाशित करवाना चाहते हैं तो प्रकाशकों के यहाँ बारम्बार चक्कर लगाने से बचें. हमें जबाबी लिफाफे के साथ लिखें

हास्य नाटक

रूप की बीमारी

✍डॉ. रामकुमार वर्मा

पात्र परिचय

(**सोमेश्वरचन्द्र** नगर के धनी सेठ हैं. इनके पास पूर्वजों की अर्जित लाखों की सम्पति हैं. इनकी आयु लगभग ५० वर्ष की हैं. इनके पास एक ही लड़का हैं. उसका नाम है रुपचन्द्र. इसे वे बहुत प्यार करते हैं. एकमात्र यही उनके बुढ़ापे का सहारा हैं. वे उसके लिए सब कुछ कर सकते हैं. इससे बढ़कर वे संसार में किसी चीज को अच्छा नहीं समझते. पुत्र-प्रेम के सम्बन्ध में शायद वे ईसा की शताब्दियों में दशरथ के नवीन संस्करण हैं.

रूपचन्द्र-श्री सोमेश्वरचन्द्र के पुत्र. आधुनिक सभ्यता के पूरे मानने वाले हैं. वे आजकल एम.ए. के विद्यार्थी हैं. अपने पिता के प्रेम और औदार्य से पूर्ण लाभ उठाने की प्रतिभा उनमें हैं. आयु लगभग २४ वर्ष होगी.

डॉक्टर दास गुप्त-इनका पूरा नाम मुझे नहीं मालूम. ये लण्डन के एल.आर.सी.पी हैं. मरीजों से बात करने में विशेष दिलचस्पी लेते हैं. उन्हें बीमारियों को अच्छा करने का तजुरबा भी खूब हैं. बंगाली होने से भाषा का उच्चारण कभी-कभी वे बड़े हास्योत्पादक ढंग से करते हैं, लेकिन इसमें उन बेचारें का कुसूर ही क्या? नगर में लोगों का उन पर पूर्ण विश्वास हैं. आयु लगभग ४५ वर्ष होगी. बन्द कॉलर का कोट, चश्मा और हाथ में छड़ी उनकी विशेषता हैं.

डॉ. कपूर- कपूर इनका असली नाम है और 'सरनेम' भी कपूर हैं. इसलिए लोग कपूर दो बार न कहकर एक ही बार कहते हैं, यों शैतान लड़के तीन या चार बार कपूर कहकर चिढ़ाते हैं. ये बिलकुल अप-टु-डेट हैं. क्लीन शेव. सूट और टाई के रंग का सामज्स्य इनकी रुचि हैं. हिन्दुस्तानी में काफी अगंरेजी बोलते हैं. ये भी मशहूर डॉक्टर हैं. उमर यों बहुत नहीं है, यही ४० के लगभग होगी.

हरभजन/जगदीश- ये दोनों श्री सामेश्वरचन्द्र के नौकर हैं. दोनों बड़े मेहनती हैं, लेकिन अपने मालिक को प्रसन्न नहीं कर पातें. बड़ी सज्जीदगी के साथ काम करते हैं. दोनों की उमर मे ंकोई खास अन्तर नहीं हैं. दोनों लगभग ३०.३५ वर्ष के होगें. हिन्दुओ के घर की परम्परागत वेश-भूषा ही उनकी वेश-भूषा हैं. हॉ, धनी मालिक के नौकर होने के कारण उनके कपड़े अपेक्षाकृत अधिक साफ हैं. स्थानः इलाहाबाद का जार्ज टाउन

काल- १५ सितम्बर १६३५,

सोमेश्वरचन्द्र के मकान का भीतरी भाग. कमरा सजा हुआ हैं. दीवारों पर चित्र लगे हुए हैं. सामने शंकर-पार्वती का एक बहुत बड़ा चित्र हैं. कमरे के बीचोंबीच एक खूबसूरत पलंग बिछा हुआ हैं. जिसमें आगे-पीछे बड़े शीशे लगे हुए हैं. पलंग पर तकियें के सहारे रूपचन्द्र आराम से टिंक कर बैठा हैं. वह कमर तक रेशमी चादर ओढ़े हुए हैं. वह बीमार है, उसकी मुख-मुद्रा से मलीनता टपक रही है.

सिरहाने एक छोटी टेबुल हैं, जिसपर दवाईया, दवा पीने का ग्लास, एक टाइम-पीस घड़ी और थर्मामीटर रखा हैं. पास ही दूसरी टेबुल पर कुछ फल रखे हैं. मेंटलपीस पर फूलदान तथा मिट्टी के खूबसूरत खिलौने सजे हुए हैं. दोनों कोनों पर महात्मा गॉधी और जवाहरलाल नेहरु के बस्त सुशोभित हैं. उनकी विरुद्ध दिशा में लेनिन और स्टेलिन के चित्र हैं. पलंग के समीप तीन चार कुर्सियां पड़ी हैं. कमरे में अगरबत्ती की हलकी सुगन्धि महक रही हैं.

(रूपचन्द्र के पिता सोमेश्वर चिन्तित मुद्रा में कमरे के एक सिरे से दूसरे तक टहल रहे हैं. पुत्र की बीमारी ने उन्हें बहुत अव्यस्थित बना दिया हैं. वे बात-बात पर झल्ला भी उठते हैं. अपने प्यारे पुत्र की बीमारी बेचारे पिता के जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप होकर जैसे कमरे के वातावरण का निर्माण कर रही हैं. इस समय दिन के तीन बजे हुए हैं.)

सोमेश्वरचन्द्रः (कमरे में टहलते हुए); बुढ़ापे में भी चिन्ताएं पीछा नहीं छोड़ती हैं, सोचता था-तुम्हारी पढ़ाई के बाद सारा काम तुम्हें सौंप कर आराम से शंकर का भजन करूंगा, लेकिन पूर्वजन्म के पाप कहॉ जायेंगें? चिन्ता-चिन्ता-चिन्ता! रोज कोई न कोई चिन्ता सिर पर सवार हैं. आज सिरदर्द तो कल पेट मे ंदर्द (ठहर कर) तुम बीमार हो गये! रूप, तुम क्या समझो मेरे दिल का क्या हाल हो रहा हैं? कितनी मुश्किलों से तुम्हें इतना बड़ा किया हैं. ऑखों के तारे की तरह तुम्हें बचाया हैं. तुम्हारी मां के जाने के बाद मैं तो और भी कमजोर हो गया, जैसे हाथ-पैर टूट गये. मैं अकेला आदमी. रोजगार भी संभालूँ और तुम्हें भी देखूं. और क्यों न देखूं? तुम्हारी मां जैसे मेरे दिल में बैठ कर बार-बार कह रही हैं-मेरे रूप को अच्छा रखना, मेरे रूप को अच्छा रखना..... रक्खूंगा देवी रक्खूंगा. इधर तुम बीमार हो गये! अब मैं क्या करूं! रूप तुम अच्छे हो जाओं- जल्द अच्छे हो जाओं. मैं तुम्हारे लिए सब कुछ करने के लिए तैयार हूँ...(गहरी सॉस लेकर) आज तुम्हारा टेम्परेचर कितना था रूप? (थर्मामीटर उठाता हैं)

रूपचन्द्रः(धीरे स्वर में)-नाइण्टी-नाइन प्वाइण्ट सिक्स!

सो०: (दुहरा कर अशान्ति से)नाइण्टी-नाइन प्वाइण्ट सिक्स! इन कम्बख्त डॉक्टरों की जेबों में रुपये भरा करूं और मेरे रूप की तबियत ठिकाने पर न आयें! इन डाक्टरों के लिए कोई सजा भी तो कानून ने नहीं बनाई. रोगी की जिन्दगी के साथ रुपये का सौदा करते हैं. ये डॉक्टर नहीं, बीमारी के वकील हैं. रुपये खाकर बीमार को भी खा डालने का हूनर सीखे हुए हैं. रोजगारी कहीं के! अगर यह दलाली करते हैं तो मुझसे करें, मेरे रुप के पीछे क्यों पड़े हुए है. उसे अच्छा कर दें, फिर मुझसे निपट लसें! (टेबुल पर फलों को देखकर) रुप, आज तुमने फल-वल कुछ खायें? ये टेबुल पर कैसे हैं? (पुकार कर) जगदीश! जगदीश!!

जग०: (बाहर से) आया हुजूर! (जगदीश का प्रवेश)

सो०ःतुम बाजार से फल-वल लाये थें?

जग०: सरकार, लाया था.

सो०: ये फल कैसे हैं? (टेबुल पर रखे हुए फलों की ओर सकेंत)

जग०: सरकार, ये कल के हैं.

रुप.: बाबूजी, मुझसे खाये ही नहीं गयें.

सो०ः(झल्ला कर) खाये कैसे जायें? बासी

और सड़े फल भी कहीं खाये जा सकते हैं! बाजार की सबसे सड़ी चीज मेरे यहॉ लाई जायेगी! इन कम्बख्त नौंकरों से भी कहीं कोई अच्छा काम हुआ हैं? गोया मेरे घर के पैसे बाजार में फेंकने के लिए हैं! (एक फल को हाथ में लेकर) ये देखो! आज नहीं तो कल जरुर सड़ जायॅगें. इन्हें कोई खा कर और बीमार पड़ें! ठहरों; मैं यह सब तुम्हारी तनख्वाह में काटूंगा. आयन्दा देखता हूँ कि तुम ठीक फल लाते हो या नहीं. आज बाजार से ताजे फल लाये थें?

जग०: लाया था सरकार!

सो०: क्या-क्या लाये थें?

जग०: सेब, सन्तरे, अनार, अंगूर.

सो०: और मोसम्मी नहीं लायें?

जग०: सरकार, मिली हीं नहीं.

सो०:(व्यंग से) मिली ही नहीं! मिले कैसे? जब आप लोग मेहनत करें तब न मिलें? बेगाार जैसा काम! मिली ही नहीं-तुमने खोज की थी?

जग०:सरकार, बहुत खोजी, मिली हीं नहीं.

सों०: कहॉ खोजी?

जग०: कटरे में.

सो०: (दुहरा कर) कटरे में! चौक तो जा ही नहीं सकते. जनाब के पैरो में दर्द होता हैं. चौक जाने में पैर घिस जायॅगें. आप लोग है किस मर्ज की दवा? चलिये बैठिए घर पर. तमाखू पीजिए. मैं जाऊँगा फल लेने.

जग०:सरकार, दवा भी लानी थी, इसलिए चैाक नहीं जा सका.

सो०: (चिढ़ कर) अरे, तो क्या तुम्हीं अकेले घर में नौकर हो? हरभजन से कह दिया होता. वह सुअर कहॉ मर गया था? वह दवा ले आता. कहॉ हरभजन?

जग०: सरकार, फल धो रहा हैं.

सो०: बुलाओ उसें. (जगदीश जाता हैं.) इन बेईमानों से सौ बार समझा कर कहो; लेकिन इन लोगों की अक्ल में बात समाती हीं नहीं. कहॉ-कहॉ के नौकर मेरे यहॉ इकट्ठा हुए हैं. गोया मेरा मकान यतीमखाना हैं. खायेंगे भर पेट, लेकिन काम? काम, रत्ती भर भी नहीं.

रुप०: (शान्ति से) जोन दीजिए बाबूजी.

सो०: तुम्हें तकलीफ जो होती हैं, बेटा! एक रोज की बात हो तो जाने भी दूं. रोज-ब-रोज ये लोग सिर पर चढ़ते चले जाते हैं. गोया हम लोगों का सर इन्हीं लोगों से बकझक करने के लिए....(जगदीश हरभजन को लेकर आता हैं.) क्यों रे हरभजन, क्या कर रहा था.

हर०:सरकार, फल धो रहा था.

सो०: दस घंटे तक फल ही धोये जायॅगें?

हर०: सरकार, छोटे सरकार के पैर मींज कर अभी तो गया था.

सो०: अभी तो गया था. बड़े भोले है जनाब! जैसे इन से कोई कसूर हो हीं नहीं सकता! फल कैसे धो रहे हो?

हर०: सरकार, बहुत अच्छी तरह से धो रहा हूॅं.

सो०:(पुनः दुहरा कर) बहुत अच्छी तरह से ध ाो रहा हूॅं. गधे कहीं के. मै पूछता हूॅ पानी में परमेगनेट पोटास मिलाया हैं?

हर०: हॉ सरकार, रोज 'परमेनग पुटास' मिलाता हूॅ. आज भी मिलाया हैं.

सो०: खाक मिलाया हैं. मैं तो इन लोगों से हार गया. जाओ, फल ठीक करों. (हरभजन जाता हैं) जगदीश, अभी डॉक्टर नहीं आयें?

जग०: नहीं, सरकार.

सो०: अभी क्यों आयेंगें? रास्त देखिए, इन्तजार कीजिए, दस घंटो तक. बिना दस बार नौकर गये, नाज हीं नहीं उठते. मैं तो मरा जा रहा हूॅ इन डाक्टरों के मारें. गोया लाट साहब हैं. एम.बी.बी.एस. क्या हो गये हैं, जैसे दुनिया भर के चचा हैं. दवा से फायदा हो चाहे न हो, फीस लेंगें और बेचारे रोगी को पीस लेगें. (ठहर कर) रुप, इन डॉक्टरों ने तुम्हें बहुत तंग किया लेकिन बतलाओं मैं क्या करुं? तुम इस बार अच्छे हो जाओं, फिर देख लूंगा इन सारे डाक्टरों को. (फिर ठहर कर)और तुम उदास रहते हो तो जैसे मेरा रोयॉ-रोयॉ दुखी हो जाता हैं. तुम हॅसा करों, जरा खुश रहा करों. फिर देख लंगा एक-एक डॉक्टर कों. तुम खुश तो हो जाओं. (हॅसने का अभिनय कर) हॉ, हॉ, जरा हॅसों. (रुपचन्द्र मुस्कुरा देता हैं.) वाह, वाह, क्या कहना! अब तुम बिलकुल अच्छे हो जाओगें! अरे हरभजन, जरा फल तो ला!

हर०: (भीतर से) लाया हूजूर!

सो०: अरे जल्दी ला. मेरा रुप अब बहुत जल्दी अच्छा हो जाएगा. हरभजन बहुत अच्छे फल धोता हैं. फलों को धोकर पाव भर तो गन्दा पानी निकालता हैं. जगदीश, तुम बाहर बैठों, जैसे ही डॉक्टर आयें, मुझे खबर दो. समझें?

जग०: बहुत अच्छा सरकार! (जाता हैं)

सो०: फल खाने से बहुत फायदा होता है. वह क्या कहलाता है? विटामिन! हॉ विटामिन, क्यों रुप? (रुप सिर हिलाता हैं) मैं तो कुछ जानता नहीं. इन्हीं कम्बख्त डॉक्टरों ने न जाने क्या-क्या खोजकर निकाला हैं. (हरभजन फल लेकर आता हैं) वाह, हरभजन, तू बहुत अच्छे फल धोता हैं. ला, मैं अपने हाथ से तेरे छोटै सरकार को कुछ खिलाऊँ. (कुर्सी पर बैठ जाते हैं)

रुप०: बाबूजी, खाने की तबीयत नहीं होती.

सो०: नहीं रुप, देखो हरभजन ने कितने अच्छे फल धोये हैं! मेरी तक खाने की तबीयत होती हैं. अच्छा, ये लो अपने हाथ से तुम्हें अंगूर खिलाऊँ. देखों, ये अंगूर की कैसी छोटी-छोटी गोलियॉ हैं! (रुप को अपने हाथ से अंगूर खिलाते हैं. प्रसन्नता से) एक बार बड़े दिनों में मैने कलक्टर साहब को डाली दी. डाली में बड़े अंगूरों को मुॅह में डालते हुए साहब ने कहा-बेल सेठ साहब, तुम गोली में हमारा शराब लाया हैं! (दोनों हॅसते है! हरभजन भी मुस्कराता हैं. हरभजन से) हरभजन, तुम बाहर बैठों. डॉक्टर साहब आयें तो खबर देना. अच्छा? तुम बहुत अच्छा फल धोते हो. समझें?

हर०: बहुत अच्छा सरकार! (बाहर जाता हैं)

सो०: क्यों रुप, कल से तुम्हारा जी कुछ हलका हैं?

रु०: (मलीनता से,) नहीं, बाबूजी!

सो०: (खडे होकर) कैसे होगा! हिन्दुस्तानी जिस्म में अंगरेजी दवा कितना फायदा कर सकती हैं? वह तो मन नहीं मानता, नहीं तो वैद्यों को बुलाता. और अगर वैद्य वेबकूफ न होते तो इन डॉक्टरों का मुॅह भी न देखता. मुॅह देख कर सौ बार नहाता.

(हरभजन का प्रवेश)

हर०: सरकार, डॉक्टर साहब आये हैं!

सो०:कौन डॉक्टर?

हर०: डॉक्टर दास गुप्ता.

सो०: और डॉक्टर कपूर नहीं आयें?

हर०: अभी तो नहीं आये सरकार!

सो०: (चिढ़कर) अभी क्यों आयेगें? अच्छा

बुलाओं इन्हीं को.

(हरभजन जाता हैं)

सो०ः रुप, तुम साफ-साफ क्यों नहीं कह देते कि इस दवा से फायदा नहीं होता. देख रहा हूँ, दस रोज से तुम बीमार हो. तबीयत में दवा से कुछ तो आराम होना चाहिए.

(हरभजन के साथ डॉक्टर दास गुप्ता का प्रवेश)

सो०ः आइए डाक्टर साहब, आज फिर टेम्परेचर नाइण्टी-नाइन प्वाइण्ट सिक्स हैं!

दास०ः(टेबुल पर अपना बैग रखते हुए)की हुआ? धीरे-धीरे तो नारमल होगा. हाम बोला जे दावाई ठिक टाइम पर देने से शाब ठिक होने शकेगा. (रुप से) तुम दवा पिया?

रुप०ः हॉ, डॉक्टर साहब, आठ बजे और बारह बजे की दो खुराकें तो पी चुका.

सो०ः हरभजन, ये घड़ी ठीक मिली है या नहीं?

हर०ः सरकार, अनवरसीटी के घंटे से मिलाई थी.

सो०ः यूनीवर्सिटी के घंटे से! वह घड़ी अक्सर बन्द भी तो हो जाती हैं. आज शाम को स्टेशन से मिलाकर लाओ, समझें!

हर०ः बहुत अच्छा, सरकार!

दास०ः (अपने कोट से घड़ी निकाल कर) नहीं, टाइम ठिक हैं. तीन आधा बजता हैं.

रुप०ः कितना, साढ़े तीन?

दास०ः हॉ, येई बात.

रुप०ः इस वक्त रोज मुझे हरारत बढ़ जाती हैं.

सो०ः हॉ, डॉक्टर साहब, जरा मेहरबानी करके देखिए. मेरे रुप को बड़ी तकलीफ हैं.

दास०ःआच्छा, हब अबी टेम्परेचर लेते. (थर्मामीटर रुप के मुंह में लगाते हैं.) तूमरा हाथ देखाओं.

(रुप हाथ आगे बढ़ाता हैं. डॉ० साहब नारी देखते हैं. आधे मिनट तक निस्तब्धता रहती हैं. सोमेश्वरचन्द्र कभी रुप और कभी डॉक्टर के मुँह की तरफ देखते हैं. आध मिनट बाद डॉ० साहब थर्मामीटर रुप के मुँह से निकाल कर देखते हैं.)

सो०ः (उद्विग्नता से) क्यों डॉक्टर साहब, कितना टेम्परेचर हैं?

दास०ः (थर्मामीटर को हरभजन के हाथ में देते हुए) खबरदारी से धो लाओं. (सोमेश्वर से) जासती नेई. दुइ प्वाइण्ट वाडा हय. पाल्श तो ठिक हैं. वेशी दिन नाहीं लागेगा.

सो०ःडॉक्टर साहब, दस दिन तो हो गये इस फिकर में.

दास०ः सेठ साहब, घबराने से की होता?(रुप साहब), तूमरा पेट का दरद?

रुप०ःयह तो वैसा ही हैं. और कुछ बढ़ता नजर आता हैं.

सो०ः (रुक्षता से) देखिए डॉक्टर साहब, दस दिन से आप लोग दवा कर रहे हैं. मैं तो फिकर से मरा जा रहा हूं. कुछ आराम ही नहीं होता. इधर इनकी पढ़ाई चौपट हो रही हैं. इसी साल एम.ए. में बैठना है. ऐसी बीमारी में कहीं एम.ए. हो सकता हैं? आप लोग मेहरबानी कर के इन्हे जल्द अच्छा कर दें. आप तो देखते हैं, मैं रुपया पानी की तरह बहा रहा हूं. फिर भी तबीयत वैसी-की-वैसी.

दास०ः डॉक्टर, कोपूर आया था?

हर०ः नहीं सरकार, अभी तो तो नहीं आये!

दास०ः अबी जाके बोलाओं.

हर०ः बहुत अच्छा सरकार (जाता हैं)

सो०ः इसीलिए मैनं दो-दो डॉक्टरों को तकलीफ दी कि वे आपस में समझ-बूझ कर दवा करें. (इस भय से कि कहीं डॉक्टर साहब को बुरा लग जावे)आप तो अपनी-सी बहुत करते हैं; लेकिन तबीयत को जाने क्या हो गया कि आप जैसे डॉक्टरों की दवा भी फायदा नहीं पहुँचाती! मैं तो चिन्ता से डॉक्टर साहब, आध ा हो गया हूँ. चाहता था, रुप की पढ़ाई खत्म हो तो इनको काम सौंप कर आराम से शिवशंकर का भजन करता लेकिन पूर्वजन्म के पाप कहॉ जायॅगें? चिन्ता-चिन्ता चिन्ता. घर छोड़कर ऋषिकेश चला जाऊँ तो सब ठीक हो जाय.

दास०ः आप रिशीकेश केयों जाता? रुप बाबू अभी ठिक होता.

सो०ः नहीं डॉक्टर साहब, अब मैं दुनिया से ऊब गया. बाप-दादों की कमाई ई लाखों रुपये की जायदाद अब मुझसे नहीं सॅभलती. दिनभर बकझक करता हूँ; लेकिन कुछ होता नहीं. सॅभाले आपके रुप बाबू. मैं अगर जायदाद खराब कर दूँ तो ईश्वर के सामने और अपने बाप-दादों के सामने क्या मुँह दिखाऊँगा? अपनी बेवकूफी से अगर रुपया बरबाद करुँ तो रुप बाबू का हक मारता हूँ. अब तो जितनी जल्दी हो मैं इस दुनिया से उठ जाऊँ तो अच्छा. शिवशंकर! मुझे उठा लों. (शंकर जी के चित्र की ओर हाथ जोड़ते हैं)

दास०ः अरे, आप कैशी कोथा बोलते? आप तो बहुत होशियार हैं. हाजार का लाख तो आप ही किया हैं. अबी तो आपका उमर बहूत हैं.

सो०ः अजी सब हो चुका. आप मेरे रुप को अच्छा कर दें. आप शहर के मशहूर डॉक्टर है, इसलिए आपके हाथ में रुप को सौंपा हैं.

(हरभजन के साथ डॉक्टर कपूर का प्रवेश)

हर०ः सरकार, डॉक्टर साहब रास्ते ही में मिल गए.

क०ः गुड ईवनिंग सेठ साहब, गुड ईवनिंग डॉक्टर, आइ वाज इन दि वे. क्या तबीयत कुछ ज्यादा खराब हैं? (रुप की ओर देखकर) गुड ईवनिंग मिस्टर रुप.

(गुड ईविनंग का शिष्टारचार)

क०ः क्यों, क्या तबीयत कुछ ज्यादा नासाज हैं?

दास०ः नाहीं, शेठ साहब घाबरातें.

क०ः मिस्टर रुप, यू आर क्वाइट आल राइट. टेम्परेचर लिया?

दास०ः हॉ, दुइठो प्वाइंट जासती राहा. नाइन्टी-नाइन प्वाइंट एट्.

सो०ः लेकिन आपकी दवा पीते हुए इस बुखार को बढ़ना क्यो चाहिए?

रुप०ः और पेट का दर्द भी कुछ ज्यादा मालुम होता हैं.

क०ः हॉ, बढ़ना तो नहीं चाहिए! इसकी दवा दे दी गई थी.

रुप०ः वह दवा चार बजे सुबह की थी. मुझे नींद आ गई थी. वह खुराक मैं भी पी नहीं सका.

दास०ः आछा-आछा, जागाना ठिक नेई था. शो तो ठिक राहा.

क०ः लेकिन जागने पर तो मेडिसिन लेनी चाहिए थी. मेडीसिन, निगलेक्टेड, इम्प्रूवमेंण्ट निगलेक्टेड.

सो०ः खैर, डॉक्टर कपूर, अब दवा दे दीजिए.

क०ःआप फिजूल घबराते हैं. आपके घबराने से रोगी की तबीयत और खराब होगी.

सो०ः तो आप जल्दी-से-जल्दी इसे अच्छ कर दें.

क०: आप इतमीनान रखिए. हैव फेथ आन अस. डॉक्टर दास गुप्ता को कितना तजरुबा हैं. एल.आर.सीस.पी हैं. इन्होंने हजारों केसेज अच्छे किए हैं. शहर की आधी जिन्दगी इन्हीं के हाथें में है और मैं भी १२ वर्षो से मरीजो को देखता आ रहा हूँ. इनकी तबीयत आज नहीं तो दो-तीन दिनों में अच्छी हो जायगी.
सो०: देखिए, जब आप ऐसा कहते हैं, तो मुझे इत्तमीनान होता हैं.
क०: होना चाहिए. आप चिन्ता कर खुद अपनी तबीयत खराब न कर लें! आप ये सब बाते हम लोगों पर छोड़ दीजिए. आप अपना काम देखिए. मैं तो देखता हूँ कि आप पिछले ७-८ दिनों से अपना सारा काम छोड़े हुए बैठे हैं.
सो०:मैंने तो बहुत-से जरुरी कागज भी नहीं देखें.
क०५ तो फिर उन्हें देखिए. अपना सब काम चलाइए. जब आपने मिस्टर रुप को हम लोगों के सुपुर्द कर दिया है तो अब आप बिलकुल बेफिक्र हो जाइए. हम लोग कुछ बाकी उठा न रखेगें.
दास०: ठिक बोला, जे हाम लोग बाकी उठाय न राखेगें.
क०: और फिर मिस्टर रुप की बीमारी भी कोई ऐसी सीरियस नही हैं. आप अपने काम का इतना हर्ज क्यों करते हैं? सुना है, आपने दूकान जाना भी छोड़ दिया हैं.
सो०: हॉ, जाया भी तो नहीं जाता.
क०: नहीं, जाइए अवश्य, दुनिया में तो बीमारियॉ चला ही करती हैं. कोई हमेशा तो तन्दुरुस्त रहा नहीं, कभी-न-कभीा तो बीमार पड़ेगा ही. आप दूकान जाइए, अपना काम देखिए. फिर थोड़ी देर बाद आप आ जाइयेगा.
दास०: हॉ, फिर आने शाकता.
सो०: अच्छा तो ठीक है. अगर मेरा रुप अच्छा रहे तो मैं क्यो इतना परेशान होऊँ.
क०:तो सेठ साहब, परेशान होने की बात नही हैं.
सो०: तो फिर मैं कागज देख लूँ? रसात रोज से देखने की फुरसत भी नहीं मिली. दलाल लोग यों ही मटक कर चले जाते हैं. कभी यहॉ तक चक्कर लगाते हैं.
क०: आप तो उनसे दूकान पर ही निबट लिया कीजिए.
दास०: हॉ, आप जाने शाकते. हम डॉक्टर कोपूर शे बाते करुँगा.
क०:हॉ, तब तक हम लोग म्युचुअल कंसल्टेशन करते हैं. आप अपना काम कीजिए. जिस नतीजे पर पहुॅचेगें आपको बतला देगें.
सो०५ हॉ, डॉक्टर साहब, आप लोग खूब होशियारी से कंसल्टेशन कर लें. मुझे भी इतमीनान हो जायगा. अच्छा, तो मैं जाऊँ?
क०: हॉ, जरुर. आप इतमीनान से अपना काम कीजिए.
दास०: जोरुर, काम तो जरुर देखते होता, भाई.
सो०: अच्छा तो रुप, मैं थोड़ी देर के लिए काम देख आऊँ? चला जाऊँ? ये दोनों डॉक्टर तुम्हारे पास हैं.
रुप०: हॉ, बाबूजी, जाइए.
सो०: अच्छा रुप, तो मैं जाता हूँ.
(रुप को देखते हुए सोमेश्वर का प्रस्थान. एक क्षण बाद फिर लौटते हैं.)
सो०: देखिए, डॉक्टर साहब, आप लोग खूब ध्यान से कंसल्टेशन कीजिए. मुझे अपने रुप के बारे में इतमीनान हो जाय.
क०: हम लोग बड़ी सावधानी से कंसल्टेशन करेंगें.
दास०: फारक पाड़ने नेई शाकता.
सो०: अच्छा रुप, मैं अभी आता हूँ. जाऊँ?
रुप०५ जाइए, बाबूजी. मेरी तबीयत यों बुरी नही हैं.
सो०: वाह, रुप, जब मैं तुम्हारे मुॅह से यह सुनता हूँ तो मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहता. अच्छा, जाता हूँ.
(रुप की ओर देखते हुए सोमेश्वर का प्रस्थान. भीतर से सोमेश्वर की आवाज)
अरे हरभजन, ओ हरभजन, अरे चल इधर, काम बगैरह कुछ देखना भी है या नहीं? ये कम्बखत नौकर मेरे किसी काम के हीं हैं.
(हरभजन भीतर से.....आया सरकार, आया)
क०: पूअर फादर! कितने अफैक्शनेट फादर हैं.
दास०: बहूत! रुप को तो बहुत भालो बाशतें.
रु०: सचमुच मुझको बहुत प्यार करते हैं. रात-दिन मेरी चारपाई के पास ही रहते हैं. ऐसे फादर बहुत कम होगें.
क०: आप उनके इकलौते बेटे भी तो हैं?
दास०:हॉ एकाकी.
रुप०:फिर जब से मेरी मॉ की देथ हुई है तब से और भी इनका प्रेम मुझ पर बढ़ गया हैं.
दास०: ऐशा होना शाभाविक हैं.
क०: यू मस्ट रेसपेक्ट यूअर फादर इम्मेंसली. मिस्टर रुप, ही इज वरदी आव् दैट्.
रुप०:दैट आई डू.
दास०: बिलकुल ठिक हैं.
क०: अच्छा तो मैं, मिस्टर रुप, तुम्हें जरा एग्जामिन कर लूं?
रुप०: जरुर.
(कपूर अपना स्टेथेस्कोप निकाल कर रुप के चेस्ट की आवाज लेते हैं.)
दास०: हाम तो काल जॉच लिया था. कोई ऐसा बात नेई!
क०.: हॉ, कोई ऐसीा बात नही हैं. अच्छा दर्द कहॉ होता हैं?
रुप०: पेट में.
दास०: दारद किश जागा से निकालता?
क०: याने किस जगह से शुरु होता हैं?
रुप०:(पेट पर ॲगुल रख कर घुमाते हुए) यहॉ से उठकर ऊपर की तरफ जाता है, डॉक्टर साहब!
क०: कल क्या खाया था?
रुप०: वही जो आपने बतलाया था. फ्रुटजूस और वार्ली वाटर.
दास०: पेट कुछ भारी मालूम देता?
रुप०: कुछ-कुछ.
दास०: मोशन हुआ था?
रुप०: कुछ-कुछ.
दास०: ये दर्द 'कालीक' होने शाकता.
क०: लेकिन 'कालिक' समझना कठिन हैं. 'कालिक' में-तो बावेल्स में ग्रिपिंग पेन होना चाहिए. ऐसा तो नही हैं?
रुप: कभी-कभी ऐसा नहीं होता.
क०:शार्प और स्पेसमोडिक पेन तो नही हैं?
रुप०: नहीं.
क०: तब 'स्पेसमोडिक कालिक' नही हैं. कै की तबीयत तो नहीं होती?
रुप०: नहीं.
क०: तब 'विलियस कालिक' भी नहीं हैं. अच्छा, खट्टी डकार तो नहीं आती?
रुप०: नहीं.
क०: तब 'फ्लेटुलेट कालिक' भी नहीं.
दास०: आछा, पेट के अन्दर जोलान तो नहीं

मालूम देता?
रुप०: नहीं.
क०: तब 'इन्फ्लेमेटरी कालिक' भी नहीं. रात में दर्द ज्यादा रहता है दिन में?
रुप०: रात में बढ़ जाता है. पेट में मरोड़ सी होती हैं.
क०:कब्ज से हो सकती हैं. 'एक्सीडेंटल कालिक' हो सकता हैं.
रुप०: नहीं, खाया तो कुछ जाता नही. खाता ही नहीं, कब्ज कहॉ से होगा?
क०: खाया न जाय तो क्या कब्ज न होगा?
दास०: आछा, पेट दबाने शे दारद हालका पड़ता?
रुप०: कुछ-कुछ. रात में तो पेट के बल ही सोता हूँ.
दास०: (हाथ पर हाथ मार कर) ओ! बीमारी को धार लिया. अब केधर जाता हैं. 'इन्फ्लेफ्टरी कालिक' तो नाहीं हैं.
क०:फिर 'कालिक' का कौन-सा टाइप हो सकता हैं डॉक्टर? कुछ सोच सकते हैं?
दास०: आछा मिस्टर रुप, ये दारद डाओने शाइड हाय या बायॉ शाइड?
क०: आइ मीन, राइट आर लेफ्ट साइड?
रुप०:राइट साइड.
क०: (सोचते हुए)लेकिन डॉक्टर, फीवर भी तो हैं. अगर 'इन्फ्लेमेटरी कालिक' नहीं है तो फीवर तो 'कालिक' में हो ही नहीं सकता.
दास०: लेकिन जाशती फीभर तो नहीं हैं. नाइंटी-नाइंन प्वाइंट शिक्श, क्यों मिस्टर रुप?
रुप०: नाइंटी-नाइन प्वाइंट एट्.
दास०: ओ एक ही हाय! देखूँ तूमरा पेट (पेट देखते हैं) ओ, बावेल्श ठि काम नहीं किया. डाआने तरफ एबडोमेन टेण्डर हाय. 'एक्शीडेण्टल कालीक' होने शाकता.
क०: लेकिन डॉक्टर, मैं आप से डिफर करता हूं. फ़ीवर होने से 'इन्फ्लेमेटरी' कालिक के सिम्पटम्स हो सकते हैं.
दास०:लेकिन पेट में जोलान तो नाही हैं. शीरफ फीभर होता हाय.
रुप०: हॉ फीवर तो हमेशा रहता हैं.
दास०५ आछा तो 'हेपेटिक' होने शाकता. गॉल-डॉक्ट में श्टोन होने शाकता.
कपूरः ओ यस, यही हो सकता हैं. नाऊ आइ कम्प्लीटली एग्री विद् यू. यही है 'हैपेटिक कालिक' हैं.

दास०: देख के हाम मालूम कर लिया. जोदि 'एक्शीडेण्टल' नेई तो 'हैपेटिक' तो होने होगा. तूम हामको फीभर का याद दिलाया तो हाम बोल दिया जो 'हैपेटिक कालीक' ही होने शाकता. उसमें हालका फीभर होने होता, डॉक्टर कोपूर.
क०: ठीक है, तब तो परगेटिव मेंडीसंस देना हीं नहीं चाहिए.
दास०: ओ नो. उहेन कालीक रान्श इन्टू शाच कांडिशांश पारगेटिव शूड ना बी गिउहेन. (रुप से) मिश्टर रुप, पेन दो तारा होता. इन्फ्लेमेटरी दाबाने शे बाढ़ता, इरीटेटीभ दाबाने शे घाटता. ये दारद कोल्ड, रियूमेटिजम, आर इनडाइजेशन शे होने होता. जोदि जाइंट मे होता तो गाउट आर टुबर कुलार भी होता. खालीपेट में होने शे एशीडिटी आर डिशपेपशीया होने होता. शारे बादन में होने शे इन्फ्लूएन्जा शारे बादन में होता?
रुप०:जी नहीं, सिर्फ पेट में.
दास०: तो तिन तारा का दारद होने शाकता. (अपनी अॅगुलियों पर गिनते हुए) एक्शीडैटल होने शाकता, इन्फ्लेमेटरी होने शाकता. आर हैपैटिक होने शाकता. हम शोचता जे हैपैटिक होने शाकता. शार ऊलियम मूर बोलता जे- ऊहेन एभर पेन इज डेंजिरस देयर इज जानरली फिभर.
क०: तो फिर हम लोग बगल के कमरे में डिसाइड करें क्या ट्रीटमेंट होना चाहिए.
दास०: हॉ चोलिए.
(जाने को उद्यत होते हैं)
रुप०:(आग्रह से) नहीं डॉक्टर साहब, आप लोग यहीं डिसाइड कीजिए कि आप मेरा ट्रीटमेंट कैसा करेगें.
दास०: तुम 'नारभस' तो नाहीं होगा?
रुप०: मैं बच्चा तो हूँ नहीं. एम.ए. में पढ़ता हूं. मेरी तो आप लोगों की बातों में दिलचस्पी ही बढ़ रही हैं.
क०: आलराइट, डॉक्टर, यहीं डिसाइड करें. कोई ऐसी बात तो नहीं. मिस्टर रुप इज एन् एज्यूकेटेड यंग मैन.
दास०: ओ कोई बात नेई. डिशाइड कारने शाकते.
क०: ठीक है, तो इनका एलमेंट 'हैपैटिक कालिक' है.(सोचते हैं)
क०: लेकिन डॉक्टर, अगर 'हैपैटिक कालिक' होने से गाल डॉक्ट में स्टोन है तब तो ऑपरेशन करना होगा.
रुप०: (घबड़ा कर) क्या आपरेशन?
क०:हॉ, 'हैपेटिक कालिक' है तो ऑपरेशन तो करना ही होगा. क्यों डॉक्टर?
दास०: जोरुर, 'हपेटिक' का शराल दबाई नाही हैं. ऑपरेशन कारने होता.
रुप०:(अपने स्थान पर ही कुछ विचलित होकर) ओह, ऑपरेशन!
दास०: हॉ, आपरेशन, आप डारते क्यों?
रुप०:क्या बिना आपरेशन के अच्छा नहीं हो सकता.?
दास०:जाब हैपेटिक होता तो आपरेशन जोरुरी करना होता, भाई.
रुप०: ओह, मुझे छोड़ दीजिए. आप लोग जाइए. मैं यही मर जाऊँगा. ओह, आपरेशन. !!
क०: आप ऐसी बाते क्यों करते हैं? सेठ सोमेश्वर साहब ने कहा है कि आपके अच्छा करने मे कोई बात उठा न रक्खी जावें.
रुप०:ओह, अब तो मैं बे-मौत मरा.
क०: आप इतना क्यों घबराते है मिस्टर रुप? देखिए, आप पढ़े-लिखें आदमी हैं. आपको इतना 'नरवस' होना अच्छा नहीं मालूम देता हैं. ऑपरेशन कितनी अच्छी चीज हैं. जो बीमारी हजार दवाओं से अच्छी न हो बस 'ऑपरेशन' से 'ओपन' कर सब चीच ऑख से देखकर खट-खट अच्छा कर दिया. और अब तो दुनियां में ऑपरेशन से क्या-क्या नही होता.
दास०:ऑपरेशन शे एक लॉग नीकाल के फेंक देता. शीरफ एक लॉग से आदमी जिन्दा रहने शाकता! ऑपरेशन शे हड्डी नीकाल के लोहा लगा देता.
क०: यू शुड अण्डरस्टैंड आल दिस, मिस्टर रुप.
रुप०: यह तो सब ठीक हैं. लेकिन ऑपरेशन टल नही सकता?
दास०: हाम टालने शाकता, लेकिन बीमारी बाढ़ने का बात होगा. आपको परेशानी भी होगा और टाका भी खरच होगा.
क०:ऑपरेशन में थोड़े दिनों की तकलीफ होगी फिर जिन्दगी भर के लिए आराम. आप ऑपरेशन करा लीजिए.
रुप०: ओह, अब क्या करुं!

क०: आपके करने की कुछ जरुरत नहीं. मैं सेठ सोमेश्वर साहब को सब कुछ समझा दूंगा. वे सब बात समझ जायेंगें. जिस बात में आप जल्द अच्छे होगें, उसी की सलाह वे भी देगें.
रुप०: मैं अपनी जान खतरे में नहीं डालना चाहता.
क०: खतरे में कैसे? हम लोग तो हैं.अगर बीमार लोग यही समझने लगे तो फिर हम लोगों का प्रोफेशन तो गया!
रुप०: तो क्या अपना प्रोफेशन चलाने के लिए आप लोग ऑपरेशन करते हैं?
दास०:जे बात नेई. हाम तो दुनियॉ को आराम देने ऑपरेशन कारते.
रुप०: मुझे ऐसा आराम नहीं चाहिए.
क०: तो फिर आप बीमार रहिए. पढ़ना-लिखना चौपट कीजिए. अपने फ़ादर को 'वरीड' रखिए. पैसा फूँकिए और डॉक्टरों की फीस दीजिए.
रुप०: मैं इस सबके लिए तैयार हूँ.
क०: फिर ऑपरेशन के लिए तैयार क्यों नही हैं?
रुप०:यों हीं.
क०: माफ कीजिए. हम लोग आपकी बात नहीं मान सकते. अगर पेशेण्ट के कहने पर डॉक्टर चले तो वह डॉक्टरी कर चुका.
दास०: हॉ, शो तो नाहीं होने शाकेगा.
क०: सुनिए, मिस्टर रुप, या तो आप हम लोगों की बात मान ऑपरेशन कराइए या फिर हमारा 'गुडबाई'. हम सेठ सोमेश्वर साहब से सब कुछ कह देगें. फिर आप जानिए और आपका काम.ताज्जुब की बात है कि आप इतने एज्युकेटेट होकर इस तरह नासमझी की बाते करते हैं. आइ एम रीयली वैरी सॉरी.
रुप०: तो बिना ऑपरेशन के काम नहीं चलेगा?
क०: नहीं, अगर आप हम पर फेथ नहीं रखते तो फिर आप से कुछ नही कहना.
दास०:आप शे की बोलूं रुप. हम नेई जानता था आप इतना काचा आदमी हाय!
रुप०: ऑपरेशन कराना ही होगा?
क०: हम लोगों की राय में.
रुप०: अच्छा, तो फिर एक बात....(रुक जाता हैं.)
दास०: बोलिए, बोलिए, रुक केयों गिया?
क० हॉ, कहिए न?
रुप०: देखिए.....(फिर रुक जाता हैं)
क०: क्या......?
रुप०: बाबू जी कहॉ हैं?
क०: वे काम करने गये हैं. शायद दूकान पर.
रुप०: नहीं, देख लीजिए.
क०: (पुकार कर) जगदीश.
जग०: (आकर) जी.
क०: सेठ साहब इस वक्त कहॉ हैं?
जग०: दूकान की तरफ गये हैं. अभी दस मिनट में आने को कह गये हैं.
रुप०: देखो जगदीश, तुम भी जाओं.
क०: इसे क्यों भेज रहे हैं? किसी काम की जरुरत हुई तो?
रुप०: नहीं इस वक्त कोई काम नही हैं. देखो जगदीश, बाबू जी से कहना कि आते वक्त ताजी मोसम्मी लेते आवें.
जग०: बड़े सरकार ने कहा था, यहीं रहना.
रुप०:नहीं, तुम जाओं. क्या तुम मेरे कहने पर नहीं जाओगें?
जग०:नहीं सरकार, जाऊंगा.
रुप०: तो तुम जाओं.
जग०: बहुत अच्छा! (जाता हैं)
क०: बहुत फल तो रक्खें है! अंगूर, अनार वगैरह.
रुप०: नहीं, मेरी मोसम्मी खाने की इच्छा हैं.
क०:अच्छा, वह क्या बात है जो आप कहना चाहते थें?
रुप०: जगदीश गया?
क०: (सामने की खिड़की के समीप जाकर देखते हुए) हॉ, वह जा रहा हैं.
रुप०: देखिए डॉक्टर साहब, मैं एक बात कहूँ.
दास०: बोलिए ना.
क०: आप तो ड्रामा कर रहे हैं.
रुप०: ड्रामा नहीं. देखिए, मै बिलकुल बीमार नही हू. (उठकर बैठ जाता हैं)
क०: (साश्चर्य) अच्छा!
दास०: (आश्चर्य से) आच्छा?
रुप:देखिए डॉक्टर साहब, मैं बिलकुल बीमार नहीं हूँ. टेम्परेचर तो यूं ही बिस्तर में पड़े-पड़े हो गया. यों मैं बिलकुल अच्छा हूँ.
क०: फिर यह बीमारी का स्वॉग क्यों कर रक्खा हैं? सबको फिक्र में डाल रक्खा हैं?
दास०: ये की बात भाई? ऐशा तो हाम शुना नेई.
कपूरः गुड फार नथिंग. सबको मुफ्त की चिन्ता!
रुप०: डॉक्टर साहब, मैं ही बहुत चिन्ता में हूं. (उठ खड़ा होता हैं) शरीर से मैं बिलकुल अच्छा हूँ, लेकिन मन से बहुत दुखी, बहुत दुखी!
क०: अच्छा!
दास०: ये की बात?
रुप०.:सुनिए, आप लोग मेरी दवा क्या करेंगें, (टहलता हुआ) कोई बीमारी भी हो! मैं ऑपरेशन की बात सुन कर अपने भेद को नहीं छिपा सका, आपसे कहना ही पड़ा. मुफ्त में मैं अपना पेट नहीं कटवा सकता.
कपूर:अरे, तो हम लोगों को क्या मालूम!
रुप०:मैंने बीमारी का बहाना किया हैं, यह जानते हुए भी कि बाबूजी का बहुत रुपया खर्च हो रहा हैं. लेकिन मैं लाचार हूँ. कोई दूसरा रास्ता ही नहीं हैं.
क०: ऐसी क्या बात है, आखिर?
रुप०:मैं वह नहीं बतलाना चाहता.
दास०: बाबा, हम तो ये रोकम केश कोभी नाहीं देखा.
रुप०: तो अब देख लीजिए.
क०: लेकिन आप बतलाना क्यों नही चाहते? बीमार है, बीमार नहीं भी हैं. फिक्र है, लेकिन फिक्र की बात आप छिपाना भी चाहते हैं. यह बात क्या है?
रुप०: इसलिए कि आप लोग कोई मेरी मदद नहीं कर सकतें.
क०: यह आप कैसे कह सकते हैं?
दास०: बाबा, हमारा अकिल तो काम नेई करता.
क०: हम लोग पेशेण्ट की मदद हर प्रकार से करने के लिए तैयार है. मालूम तो होना चाहिए.
रुप०:तो क्या आप मदद कर सकते हैं?
क०: क्यों नहीं. अगर हमारे बस की बात हो तो क्यों नहीं करेगें?
रुप०: नहीं, आप मदद नहीं कर सकतें.
क०: तो फिर कोई बात नहीं, हम लोगों को अब यहॉ से चले जाना चाहिए.
रुप०: अच्छी बात हैं, फिर मुझे लेटना चाहिए; बीमार होना चाहिए.

रुप०:की बोलते रुप बाबू! ठेकाने की कोथा बोलो.
रुप०:डॉक्टर साहब, मैं बिलकुल सच बोल रहा हूं. मेरी तबीयत अच्छी नहींहैं.
दास०: ताभी तो हम लोग आया.
रुप०: आप लोग तो आपरेशन करने आये हैं. यह दवा नहीं हैं.
क०: मैं भी कुछ नहीं समझ सकता. अच्दी बात है, तो हम लोग सेठ साहब से क्या कहें?
रुप०: यही कि रुप बहुत बीमार हैं. उसकी दवा होनी चाहिए.
दास०: ये तूम की बोलता बाबू?
रुप०: ठीक-ठीक तो कह रहा हूँ कि मैं बीमार हूँ.
क०: अभी आप कह रहे थे कि मैं बीमार नहीं हूं.
रुप०: हूँ भी और नहीं भी. आप लोग मेरी सहायता कर हीं नही सकतें.
क०: कुछ कहेंगें भी आप.
रुप०: अच्छा तो सुनिए....(सोचता हैं)
(कपूर और दास गुप्ता सुनने के लिए शान्त मुद्रा में होते हैं)
रुप०: कहूँ.....(रुक कर) अच्छा जाने दीजिए, मुझे बीमार ही रहने दीजिए.
दास०: आप बोलते केयों नाहीं? हाम अपनी दावा में कोई बात उठा नाहीं राखेगें!
रुप०: दवा की बात नहीं है, डॉक्टर साहब!
क०: तो फिर बतलाइए न!
रुप०:आप..कु...सु...म...को जातने हैं?
क०: कुसुम......?
दास०: कू.....शू......म?
रुप०:हॉ, कुसुम, ओह! कितना अच्छा नाम है! (दास और कपूर एक दूसरे को देखकर मुस्कराते हैं)
रुप०: आप लोग मुस्कुराएं नहीं.मैं सच कहता हूँ....
क०: क्या?
रुप०: इसी तरह मेरी सहायता करना चाहते हैं?
क०: मैं इन बातों में क्या सहायता कर सकता हूँ, मिस्टर रुप?
दास०: हाम की कोरेगा बाबा! ऐसा डॉक्टरी हम नाहीं किया.
रुप०: अब कीजिए. अभी आप लोगों के सामने लम्बी जिन्दगी हैं.
क०: ठीक है, लेकिन अब मैं जान गया कि यह बीमारी हम लोगों से नहीं संभल सकती हैं.
रुप०: अब जब आपने यह बात मुझसे कहला ली है तो पूरी ही सुनाऊंगा और आपको मेरी मदद करनी होगी.
क०: आलराइट दैन गो ऑन.
रुप०: तो आप कुसुम को नहीं जानतें? (कुर्सी पर बैठता हैं)
क०: नहीं, मैं नहीं जानता.
रुप०: जिसने म्यूजिक कानफ्रेंस में पार साल फर्स्ट प्राइज पाया था.
दास०: हें, वह तो हामरे बाड़ी के पाश रेहता.
क०: अच्छा! मुझे भी याद पड़ता है कि मैंने उसका गाना सुना था. उसने वायलीन भी अच्छा बजाया था शायद.
रुप०: हॉ, वायलीन, वायलीन. लाजबाव बजाती है वह.
क०: इसमें क्या शक हैं?
रुप.: मैं ....मैं...चाहता हूं कि...
क०: क्या चाहते है आप.....?
रुप०: मैं चाहता हूँ कि वह वायलीन फिर एक बार बजावें....
दास०: तो बीमार काहे को पड़ा?
रुप०: मैं चाहता हूँ कि वह बीमारी में एक बार मुझे अपना वायलीन सुनावे. एक बार वह मुझे अपना संगीत सुना जाय, खास कर मेरी बीमारी में...
क०: लेकिन आप बीमार तो नहीं हैं.
रुप०: नहीं हूं, लेकिन हूँ, शारीरिक रुप से नहीं, मानसिक रुप सें.
क०: तो आप सिर्फ गाना सुनना चाहते हैं या और कुछ....?
रुप०: मैं पहले गाना सुनना चाहता हूँ डाक्टर! (उठ खड़ा होता हैं) ओह, जब वह गाती है तो मालूम होता है जैसे दुनिया फूल की तरह नरम होकर हिल रही हैं. एक-एक राग जैसे अंगूर की बल हैं जिसमें मिठास के फल झूल रहे हैं. उसके वायलीन के तार जैसे जीती-जागती भावना की लहरें हैं, जो दुनिया को लपेट कर खुद उसमें लिपट जाती हैं. (भावावेश में ऑखें बन्द कर लेता हैं) वह संगीत........
दास०: ये कोविता है बाबा!
रुप०: उसका ध्यान ही कविता है डॉक्टर! आप लोग शायद यह नहीं समझ सकतें. चीर-फाड़ करने वाले सुन्दरता को क्या समझे? वे तो सुन्दरता को काट कर रख देना जानते हैं. हड्डी जोड़ने वाले कहीं दिल जोड़ सकते हैं?
क०: तो क्या आप समझते हैं कि डॉक्टरों के पास दिल नहीं होता? वे क्या पत्थर के बने हुए हैं?
रुप०: दिल होता हैं, लेकिन उस दिल में सिर्फ खून ही रहता हैं. उसमें होनी चाहिए एक पूरी दुनिया, जिसमें-जिसमें हॅसी का वसन्त आता है और ऑसू की बरसता होती हैं. जिसमें किसी से मिलने की चॉदनी निकलती हैं और न मिलने का ॲधेरा होता हैं.
दास०: ई बात हाम नाहीं समझा. फिर शे बोलो!
रुप०: क्या बोलूं, जो लोग प्रेम की गर्मी को थर्मामीटर से नापते हैं, उनसे क्या बोलूं?
क०: तो क्या आप समझते है कि हम लोग प्रेम करना जानते ही नहीं?
रुप०: प्रेम? प्रेम की जब उमंग उठती हें तो आप लोग उसे लोशन से धो डालते हैं. और वह लोशन से धुलते-धुलते चाहे जो कुछ रह जाय, प्रेम नहीं रह पाता. आप लोगों के दिमाग में किसी सुन्दरी को देख कर उसके 'स्केलिटन' की भावना आ जाती होगी. उसकी बोली सुनते आप लोग 'ओबुला' की बात सोचते होगें. उसके केशों के नीचे 'स्कल' होता है, यह आप लोग सोचते है या नहीं?
क०: आपकी बात सुनकर तो मुझे अपनी नर्सो की पुरानी दुनियां याद आ रही हैं. मैं आपके दर्द को महसूस कर रहा हूँ.
रुप०: तब तो आपकी मुझसे सहानुभूति होनी चाहिए. और मेरी सहायता करनी चाहिए.
क०: जरुर, जरुर. अच्छा, अब आप अपनी पूरी बात बतलाइए.
दास०: फिर तो हम भी शुनूँगा.
रुप०: देखिए, मैं जो बीमार बना था, वह इसलिए कि वह आकर मुझे गाना सुना जाय! मैं ऐसी परिस्थिति लाता कि उसे आना ही पड़ता. वह आती और मुझे गाना सुनाती.
क.: फिर आपने ऐसा क्यों नहीं किया?
रुप०: आप लोग मेरा ऑपरेशन करने लगें! मेरा पेट काटने की बात सोचने लगे तो मुझे असली बात जाहिर कर ही देनी पड़ीं.

दास०: संगीत सुनने से की होता?
रुप०: मुझे शान्ति मिलती. मैनें तो उसे जान ही लिया हैं. अगर वह भी मुझे पहचान सकती.
क.: तो आप चाहते है कि यह पहचान दूर तक बढ़ जायं?
रुप०: शायद.
क०: तो मालूम होता है कि आप उसे चाहने लगे हैं.
रुपः मुमकिन हैं.
क०: चाहने का मतलब क्या हैं?
रुप०: चाहने का मतलब? एक आदमी क्यों हॅसता है, क्यों रोता हैं? उसे प्यास क्यों लगती हैं? ठण्ड मे ंवह गरम कपड़े क्यों पहनता है? गर्मी में वह पंखा क्यों करता हैं? उसे भूख क्यों लगती हैं?
दास०: ये तो नेचर का नेशेशिटी हैं.
रुप०: मेरी यही नेसेसिटी है डॉक्टर! मैं इससे ज्यादा क्या बतलाऊं कि मेरे दिल में उसकी चाह हैं. मुझे उसके रुप की बीमारी हैं.
क०: ठीक है, मैं समझता हूँ मिस्टर रुप! एक्सीडेंट देखिए, रुप को ‘रुप की बीमारी‘ हैं.
रुप०: इसे यो कहिए तो ठीक है कि रुप, रुप की बीमारी में कुरुप हो रहा हैं.
दास०: (महज कुछ बोलने के लिए) तो उसको चिकेन शूप पीने होगें.
रुप०:डॉक्टर साहब, आप बहुत बड़े डॉक्टर हैं.
क०: अच्छा तो ये बात हैं.
रुप०:हॉ, डॉक्टर कपूर यही मेरी चाह हैं.
क०: लेकिन इस चाह का नतीजा?
रुप०: अगर मुमकिन हो सका तो....
क०: आप शादी करेगें उससे?
रुप०: मुझे कोई आपत्ति न होगी.
क०: तो आप तो शादी यूं ही कर सकते थें. उसके लिए इतने बीमार पड़ने की जरुरत ही क्या थी?
रुप०:डॉक्टर, मैं ऐसी शादी नही करना चाहता. अन्धों की तरह. एक तो मैं शादी करना जरुरी समझता ही नहीं, ऐसा नेचर भी कहता है; लेकिन चूँकि मैं इण्डिया ेमें हूं, शादी की रस्म होनी ही चाहिए. मैं समाज की परवाह नहीं करता. मै सिर्फ ख्याल रखता हें अपने ओल्ड फादर का. अगर मैं शादी न करुंगा, तो उनकी हद दर्जे का सदमा पहुॅचेगा. मैं उनका इकलौता बेटा हूॅ. उनकी सारी उम्मीदें मुझ पर ही हैं. ऐसी हालत में प्रेम और विवाह को मुझे मिला देना हैं. यों मैं इन दोनों को अलग-अलग रखने का पक्षपाती हूं.
क०: यू आर डुइंग ए ग्रेट सेक्रिफाइस दैन.
रुप०.: यही समझिए! उधर देखिए. (लेनिन के चित्र की ओर संकेत करता है) लेकिन! इसने मैरिज इन्स्टीट्यूशन की यूजलैसनेस को समझा हैं. मैं तो कहता हे कि इस बदलते हुए जमाने मे ंशादी से अच्छे सिटीजन पेदा न होगें. प्रेम से अच्छे सिटीजन पैदा होगें. खैर, इण्डिया अभी रशा नहीं हो सकता. मैं प्रेम और विवाह में समझौत करुंगा.
दास०:अब हाम समझा जे तूम बहुत होशियार है, रुप बाबू!
रुप०:इसलिए डॉक्टर साहब, मैं चाहता हूॅ कि कुसुम भी धीरे-धीरे मुझे अच्छी तरह समझ जाय. मैं तो उसे अच्छी तरह समझता ही हूॅ. बिना आपस में एक-दूसरे को समझे शादी, शादी नहीं, वह दिल की शादी नहीं, दुनिया को दिखलाने की शादी है. अगर वह भी मुझे पहचान सकी तो मेरी इच्छा पूरी होगी.
दास०: लेकिन उसका मॉ-बाप नेई हैं. उसका मामा जोरुर हैं.
रुपः इसीलिए मुझे उसके साथ विवाह करने में आसानी होगी. क्या डॉक्टर साहब, आप मेरी मदद नही कर सकते? क्या आप सिर्फ शरीर ही अच्छा कर सकते है, हृदय अच्छा नहीं कर सकते?
क०: (सोचते हुए) आपने कैसी समस्या हम लोगों के सामने रखी है, कुछ समझ में नहीं आती.!
दास०: तो जाब शेठ साहब पूछेगा तो हम बोल देगा जे रुप बाबू बीमार नेईहैं.
रुप०: कोई बात नहीं. आप मेरी इतनी लम्बी कहानी सुनकर भी कुछ नहीं समझ सकें, तभी तो मैं कहता हूॅ कि डॉक्टर लोग प्रेम की गर्मी को थर्मामीटर से नापना जानते हैं. उनके पास दिमाग होता है, दिल नाम की कोई चीज नहीं होती.
क.: सचमुच डॉक्टर दास, यह बात मेरी समझ में आ रही हैं.
दास०: तुम भी रुप बाबू की तरह बोलते डॉक्टर कोपूर?
क०:नहीं डॉक्टर, रुप बाबू के कहन में सचाई हें.
रुप०: और देखिए डॉक्टर दास गुप्ता, बाबूजी से ऐसा कहकर आप मुझे बहुत सदमा पहॅुचायेगें. आप मेरा नुकसान तो करेगें ही आप अपना भी बहुत नुकसान करेंगें.
दासः की रोकम?
रुप०: आपकी इतनी लम्बी फीस बन्द हो जायगी.
दास०: लेकिन जब आप बीमार नेई तब हम फोकट में फीश क्यों लेगा?
रुप०: फोकट क्यों? आप अपनी दवा कीजिए. आप सिर्फ ऑपरेशन भर न करें. मैं बीमार बना रहूं, आप मुझे अपनी दवा दीजिए. आपको दवा की कीमत मिलेगी और आपके आने की फीस!
दास०: लेकिन सेठ साहब का टाका तो खारच होता!
रुप०: वह रुपया मेरा हैं. मैं ही तो उनका एअर हूं? वे मेरे लिए ही तो अपना रुपया छोड़ेगें? मेरे सिवाय उनका और कौन हैं? मॉ है ही नहीं. सारे घर में अकेला हूॅ; उनका इकलौता लड़का, जिसके लिए वे जान देते हैं.
क०: मिस्टर रुप, आपकी सारी बाते ंमेरी समझ ेमें आ गई. मैं आपसे पूरी सिम्पैथी रखता हॅं. लेकिन जब आप बीमार नहीं हैं तब आपके फादर से फीस लेना मेरा कानशंस अलाऊ नहीं करता.
रुप०: अगर आपकी सिम्पैथी मुझसे हैं तो आपको मेरी मदद करनी चाहिए. आपका मुझ पर बहुत एहसान होगा. उसे मैं शायद जिन्दगी भर न भुला सकू।. डॉक्टर दास गुप्ता, मैं उसे आजीवन नहीं भुला सकूंगा.
दास०: शो तो ठीक हाय.
क०: देखिए, अगर मदद की जाय, तो किस तरह की मदद की जाय?
रुपः देखिए, आप बाबूजी से यह सब कुछ न कहें. आप यहीं कहें कि रुप बीमार हैं. उसकी दवा होनी चाहिए. फिर बीमार रहकर मैं कोई रास्ता निकालूंगा, कुसुम से मिलने का. आप लोग दवा कीजिए और अपनी फीस लीजिए. जितने दिनों तक मेरी दवा होगी उतनी ही ज्यादा फीस आपको मिलेगी.
दासः ऐशा तो मुझसे नाहीं होने शाकेगा.

रुप०: न सही, लेकिन सोच लीजिए. डॉक्टर दास गुप्ता, ऐसे मौके बार-बार नहीं आते. डॉक्टर कपूर, ऐसे मौके बार-बार नहीं आतें.

दास०: शो तो ठिक है, तो इस पर भी कांशल्टेशान कर लो डॉक्टर.

क०: मैं तो तैयार हूँ. अगर इससे रुप बाबू का भला होता हैं तो मुझे कोई आब्जेक्शन नही हैं! अभी तक हम 'बाडी' का ट्रीटमेंट करते थे, अब 'माइंड' का करेंगें. हम लोग फींस लेगें तो क्या दवा न देगें? लेकिन असली बात तो आप किसी से न कहेंगें?

दास०: आप तो नहीं बोलेगा?

क०: मैं क्यों कहने चला? मिस्टर रुपचन्द्र की इच्छा पूरी हो, हम लोगों को खुशी होगी.

दास०:हामरा भी खुशी होगा. बाबा, पेशेण्ट आछा हो, हामरा तो येई बात.

रुप.:मैनी-मैनी थैक्स डॉक्टर. आई शैल नेवर फारगेट यूअर काइंडनैस. अच्छा तो मैं अब लेटता हूँ. आप बाबूजी से यही कहे कि तबीयत अभी थोड़े दिन और खराब रहेगी. ऐसी बीमारी इतनी जल्दी अच्छी नहीं होती. हॉ, एक बात अगर आप लोग कह सके तो यह भी कर दीजिए कि इनको अच्छा करने के लिए संगीत सुनना बहुत जरुरी हैं. जब वे पूछेंगे कि कैसा प्रबन्ध करना चाहिए, तो आप कुसुम का नाम ले लीजिए. अगर आप यह कह सकें तो सारा मामला ही सुलझ जाय. और मैं इस बात के लिए तैयार हूँ कि आप बड़ी से बड़ी कीमत पर यह काम कर सकें.

दास०:जे कोइ बात नेई. हामरा बाड़ी के पाश ओ रेहता हैं. हाम उशको बोल देगा जे तूमरा को बिमार का काष्ट दूर काना उचित. ओ आ जाइगा!

रुपः डॉक्टर साहब, आप मेरी यही दवा करें.

क०: ठीक है, आपने जैसा कहा, वैसा मैं सेठ साहब से कह दूंगा. आप कोई फिक्र न करें.

रुप०: थैक्स, तो मैं अब लेटता हूं.

(रुपचन्द्र पलंग पर मुस्कुराते हुए लेटता है, और फिर कमर तक चादर ओढ लेता हैं)

क०: तो अब कालिक की दवा तो न दी जाय?

रुप०: देखिए, अगर आप शर्बत बना कर भेजेंगे तो मैं पी लूँगा. और कोई दवा भेजने पर मैं उसे पीने के बहाने तकिये पर या नीचे गिरा दूंगा. दवा की कीमत तो मिलेगी ही. शर्बत के लिए कीमत कुछ बढा लीजिए, फीस बदस्तूर. और देखिए, मेरे बिल्कुल अच्छे होने पर प्रेजेन्ट!

क०:बिल्कुल अच्छे हो जाने पर......

रुप०: आप बिलकुल अच्छे हो जाने का मतलब समझते हैं?

क०: हॉ, समझता हूँ.

दास०: (हँसते हुए) फीर 'हैपेटिक कालीक' का आपरेशन नेही होगा?

रुप०: अब आप मेरे दुश्मन का आपरेशन करें.

क०: तो मिस्टर रुप, अब आप को दर्द कहॉ होता हैं?

रुप०: (हंस कर) पेट के कुछ ऊपर जहॉ दिल हैं. (सब हॅसते हैं. जगदीश आता हैं.)

जग०:डाक्टर साहब, सरकार आ रहेहैं.

क०: हॉ, हम लोगों ने कंसल्टेशन भी कर लिया.

दास०: बहुत आछा कांसल्टेशन!

(सोमेश्वर का मोसम्मी का थैला लिए हुए प्रवेश)

सो०:(आते ही) रुप, मैं आ गया. मैं आ गया. (कपूर से) कहिए डॉक्टर साहब, आप लोगों ने कंसल्टेशन किया? कैसा है मेरा रुप? कब तक अच्छा हो जायगा. कोइ खास बात तो नहीं हैं?

क०: नहीं, कोई खास बात नही हैं. हम लोगों ने काफी कंसल्टेशन किया. रुप बाबू की तबीयत खराब जरुर हैं, लेकिन कोई ज्यादा खराब नही हैं.

दास०: फिकर का जारुरत नेई, शीगेर आछा होगा. थोरा दीन लागेगा. कोई बात नेई.

सो०: (शान्ति की सॉस लेकर) ओह डॉक्टर, अब मुझे सच्ची शान्ति मिली. आप लोगों ने सचमुच मुझको बचा लिया. नहीं तो रुप की चिन्ता मुझे खाये जाती थी. अब बहुत अच्छा हैं. (मोसम्मी की गठरी पर दृष्टि जाती हैं.) देखिए, मैं अपने रुप के लिए कैसी अच्छी-अच्छी मोसम्मी लाया हूँ. बिल्कुल ताजी. (हाथ में मोसम्मी लेते हुए) बाजार से अपने हाथ से चुनकर. रुप देखों ये मोसम्मी. अब तुम बिल्कुल अच्छे हो गये. डॉक्टरों ने एक आवाज से कह दिया कि कोई बात नहीं. (कपूर से) डॉक्टर साहब, आपने ध्यान से तो कंसल्टेशन किया हैं? (डॉक्टर दास गुप्ता से) डॉक्टर साहब, कोई बात रह तो नहीं गई? डिसकशन तो ठीक हुआ?

दास०: डीशकशन तो बेशी हुआ, लेकिन बात ठिक हैं. फिकर केयों करते? 'एक्शीडेंटल कालीक' में कोई बात नेई होता.

क०: हॉ, 'एक्शीडेंटल कालीक' में ज्यादा घबड़ाना नहीं चाहिए. पेशेंट के मन में शान्ति होनी चाहिए.

सो०: मैं तो रुप से कहता हूँ कि शान्त रहें. खुश रहें. लेकिन वे हमेशा उदास रहते हैं. (मोसम्मी दिखला कर) रुप, ये मोसम्मी देखों; अच्छा हुआ तुमने जगदीश से कहला भेजा कि ताजी मोसम्मी चाहिए. ये देखों मैं अपने हाथ से ताजी मोसम्मी लाया हूं. जरा खुश हो जाओ रुप, तुम्हारी मोसम्मी खोजने में ही तो थोड़ी देर लग गई, नहीं तो मैं और पहले आ जाता.

दास०: ओ कोई बात नेई.

क०: अच्छा हुआ, थोड़ी देर लग गई. क्यों रुप?

रुप०: हॉ, ताजी मोसम्मी खाने को मिलेगी.

सो०: मैं जानता हूँ, मेरे रुप को क्या अच्छा लगता हैं. लाते हैं अनार, अंगूर, केले. क्यों रुप, तुम्हें मोसम्मी अच्छी लगती है न?

रुपः हॉ, बाबूजी.

सो०: बस, तो तुम अब खुश हो जाओ. अब तुम उदास मत रहना.

क०: यह उदासी एक तरह से दूर हो सकती हैं.

सो०:कैसे? जल्दी बतलाइए डॉक्टर, मैं उसका इन्तजाम करुंगा.

क०:वह ऐसे कि इन्हें गाना सुनाया जाय.

सो०:तो घर में रेडियों तो हैं.

क०: रेडियो का गाना......

दास०: जे बात तो हम शोचा नेई.

रुपः बाबू जी रेडियों की आवाज मुझे अच्छी नहीं लगती. कुछ दबी हुई सी, मेटेलिक-सी होती हैं. और जब रेडियों सामने बजता है तो मालूम होता है जैसे मुरदे से आवाज निकल रही हैं. रेडियों से मुझे डर लगता हैं.

सो०: ना, ना! तब रेडियों को फेंकों. अरे जगदीश, जगदीश.

जग०:(आकर) जी सरकार!

सो०: देखो मुनीम जी से कह देना कि आज से रेडियों नहीं बजायेगें, जब तक कि मेरा

रुप बीमार हैं. समझे. रेडियों बन्द करके रख दें.
जग०: बहुत अच्छा, सरकार. (जाता है)
सो०:ये रेडियों भी बहुत बुरी चीज हैं. सन्दूक के भीतर से आवाज आती हैं. सचमुच डरने की बात हैं. और जाने कैसी-कैसी आवाज!
दास०: कोभी-कोभी शीटी भी मारता हैं!
क०: जैसे कोई आवाज ऊंची-नीची करके चीख रही हैं.
सो०:इसके बारे में ज्यादा बाते करना ठीक नहीं. मेरे रुप को बीमारी में डर लगता हैं.
रुप०: हॉ, बाबूजी.
सो०: डरने की कोई बात नहीं हैं रुप. इसीलिए तो मैं तुम्होर साथ हरदम रहता हूॅं. बीमारी में डर और भी बढ़ जाता हैं. जिस्म के साथ मन भी तो कमजोर हो जाता हैं. मैं इसीलिए तो तुम्हारे पास ही रहता हूॅं.
हर०: (आकर) सरकार, बाहर कुछ दलाल आपसे मिलना चाहते हैं.
सो०: (झुझला कर) मैं कहता था कि न कि दलाल आते होगें. इन कम्बख्तों को यही वक्त मिलता है जब मैं अपने रुप के पास रहता हूॅं. अभी दस मिनट के लिए दुकान पर था, तब नही आयें. बेईमान कहीं कें. जाके कह दो इस वक्त मैं रुप से बातें कर रहा हूॅं. जानते नहीं, रुप बीमार हैं?
हर०: सरकार, मैनें तो कहा था, लेकिन उन्होनें कहा कि जरुरी काम हैं०
सो०: मेरे लिए सबसे जरुरी काम इस वक्त रुप की बीमारी को अच्छा करना हैं.
दास०: आप जाने शाकतें.
सो०: अजी डाक्टर साहब, आप भी क्या कहते हैं! मैं अपने रुप को इस वक्त नही छोड़ सकतात्र. अभी आया हूॅं और अभी चला जाऊं? रुपये से रुप मुझे ज्यादा प्यारा हैं. देखो हरभजन उनसे कहो कि जब तक रुप अच्छा न हो जाय तब तक उनके आने की जरुरत नही हैं.
हर०: बहुत अच्छा सरकार (जाता हैं)
सो०: ये लोग भी अजीब खोपड़ी के आदमी हैं. जानते हैं कि मेरा बेटा बीमार है, तब भी दुश्मन की तरह सिर पर सवार रहना चाहते हैं.
क०: जाने दीजिए. हमें तो रुप को अच्छा करना है म्यूजिक सुना कर.
सो०: हॉ तो डॉक्टर साहब, क्या करुं? रेडियों रुप को अच्छा नहीं लगता. फिर क्या इन्तजाम करें? ग्रामोफोन?
रुप०: बाबूजी, उसको सुनते-सुनते तो ऊब गया. वही गाना बार-बार सुनों. कालेज की पढ़ाई की तरह एक ही बात दस बार पढ़ों, दस बार रटों.
सो०:फिर बतलाइए, क्या किया जाए डॉक्टर? संगीत सुनाना बहुत जरुरी हैं? डॉक्टर?
क०: बहुत जरुरी हैं. अगर आप चाहते है कि मिस्टर रुप, जल्दी ही अच्छे हो जायें.
सो०: मैं तो यही चाहता हूॅ भाई. जल्दी से जल्दी यहीं चाहता हूॅं. कोई अच्छा गाता हो तो उसे बुलाया जाय? क्या आप कोई ऐसा इन्तजाम कर सकते हैं, डॉक्टर कपूर?
क०: (सोचता हुआ) मैं? मैं क्या इन्तजाम करुं? (सिर खुजला कर) हॉ, याद आया. पारसाल म्यूजिक कानफ्रेंस में एक लड़की ने बहुत अच्छा गया था. उसे ही फर्स्ट प्राइज मिला था. सबसे अच्छी गाने वाली वही ठहराई गई थी. ओह माराबलस! वायलीन भी फर्स्ट क्लास बजाती हैं. अगर वह गाना सुना सके तो ये बहुत जल्द अच्छे हो सकते हैं.
सो०: उसके सिवाय क्या और कोई अच्छा गाना नहीं गाता?
क०: यों गाने वाले तो बहुत है; लेकिन.
सो०: मेरे कहने का मतलब ये कि कोई अच्छा गाने वाला हो जो रात-दिन यही रह सकें और मेरे रुप को जब चाहे तब अच्छा गाना सुना सकें!
क०: हॉ, ये भी हो सकता है; लेकिन 'मेल वायस', 'फीमेल वायस' को पा नहीं सकती. लड़की के गाने में जो मिठास होती हे, वह किसी लड़के के गाने मे हो नहीं सकती. वह तो गाना ही दूसरा हो जाता हैं.
दास०: 'फीमेल वायश' तो चोमत्कार होता. ओ बीमारी ठिक कारने शाकता.
क०.: इसीलिए मैनें 'सजेस्ट' किया. यों आप चाहे जिसकों बुलावें.
सो०: नहीं डॉक्टर साहब, अगर आप किसी लड़की का गाना सजेस्ट करेते हैं तो उसी का इन्तजाम होगा. रुप की तबीयत अच्छी हो जानी चाहिए.
क०: इसीलिए मैने कहा. म्यूजिक इन ए फीमेल थ्रोट विकम्स ए डिवाइन मिलोडी. मेरे कहने का मतलब यह है कि गाने की ब्यूटी तो फेयर थ्रोट मे ंही हैं. यह आदमियों की ज्यादती है कि वे औरतों के इस आर्ट पर कब्जा करें.
दास०:ॅन्यू जानरेशन तो इश पर आन्दोलन कारने शाकता!
सो०: तो आपके कहने का मतलब यह है कि गाना किसी लड़की को गाना चाहिए.
क०: हॉ, मैं तो यही सोचता हूॅं, यही समझता हूं.
सो०: और गाना वही लड़की गाये? क्या नाम बतलाया उसका आपने डॉक्टर कपूर?
क०:(दास गुप्ता से)क्या नाम है डॉक्टर उसका?
दास०:ओ.....नाम? नाम विस्मृत हो गिया. (सिर खुजलाता हैं)
रुप०: मैं गाना नहीं सुनूंगा. आप मेरे सिर में (कपूर की ओर देख कर) जबाकुसुम तेल ही डाल दीजिए. गाना-वाना छोड़िए.
क०: (जबा कुसुम नाम सुनकर) यह कुछ नहीं, अगर अच्छा होना है तो जो मैं कहता हूॅं, वह करेंगें या अपने मन की? हॉ, याद आया, उसका नाम है कुसुम.
सो०: क्या नाम बतलाया, कुसुम? तो वह कैसे आवें?
क.: कोई मुश्किल बात नही हैं. उसके मां-बाप तो कोई है नहीं, उसके मामा को एक खत लिख दीजिए. वह चली आयेगी. लिख दीजिए कि उसे ५/ दिन मेहनताना दिया जायगा.
सो.: ५/क्या, मैं अपने रुप को अच्छा करने के लिए १०/दे दूंगा! उसके मामा का क्या नाम है डॉक्टर कपूर?
क०:डॉक्टर दास गुप्ता जानते होगें.
दास०: ओ तो हामरे बाडी के पाश ही रेहता. उशका नाम धोनपात चॉद.
सो०:ओ धनपतचन्द. मैं तो उसको जानता हूं. मेरी दुकान से पहले उनका हिसाब-किताब रहता था. लेकिन उनका दिवाला निकल गया. अब तो बहुत गरीब हैं.
क०: अच्छा ये बात हैं? तब तो ५/,१०/ दिन पर वे बहुत जल्द राजी भी हो जायंगें.
सो०: हॉ, राजी हो सकते हैं. बहुत गरी हैं. मुझे तो बड़ा रंज है उनके लिए, अपनी जात-विरादरी के लोग हैं.
क०: ओ, ऐसी बात हैं? तब तो इस तरह आप अपने विरादरी के एक भाई की मदद

करेगें.
सो०: हॉ, यह बात ठीक हैं. वाह डॉक्टर साहब, क्या कहना हैं! आपने कितना अच्छा नाम बतलाया! वाह, क्या कहना! हमारा काम निकलेगा और बिरादरी के एक भाई की मदद भी हो जायगी. कुसुम बेटी से कह दूंगा कि बेटी, तू इतना काम कर दें. इसको अपना ही घर समझ.
क०: हॉ, यही कहना चाहिए. आप एक खत अभी लिख दीजिए.
(डॉक्टर कपूर रुपचन्द्र की ओर देखते हैं)
रुपः बाबूजी, तबीतयत तो कुछ सुनने की होती नही हैं, लेकिन अगर डॉक्टर कहते हैं तो सुनना पड़ेगा. खैर सुनूंगा.
सो०: रुप, तुम जल्दी अच्छे हो जाओगें. अच्छा, तो मैं अभी लिख देता हूॅ. (पुकार कर) जगदीश, ओ जगदीश!
जग०: (आकर) कहिए सरकार!
सो०: जरा कागज-कलम तो ले आ.
जग०: बहुत अच्छा सरकार! (जाता है)
दास०: नाम है धोनपत चॉद, लेकिन गोरीब हाय.
क०: लोग अपनी हसरत नाम रख के ही मिटा लेते हैं.
सो०: इनके बाप-दादे तो अच्छे पैसे वाले थे, लेकिन अब दिन खराब आ गयें.
(जगदीश कागज, कलम और दावात लेकर आता हैं)
सो०: इन बेवकूफों से कोई काम ही नहीं होता. कागज लाने को कहा तो इतना छोटा कागज लाया हैं! अरे, दवाई की पुड़िया नहीं बनाना, चिट्ठी लिखना है. कहॉ-कहॉ के जाहिल नौकर मेरे यहॉ इकट्ठे हुए हैं!
क०: हॉ, और देखिए सेठ साहब, आप अपने नौकरों पर नाराज बहुत होते हैं. इससे रुप बाबू की शान्ति में गड़बड़ी होती हैं.
सो०: (घबड़ा कर) ओ, ऐसी बात हैं? नहीं-नहीं, मैं नाराज नहीं होऊंगा, ओ जगदीश, अब मैं तुम लोगों पर नाराज नहीं होऊंगा, भाई.
जग०: बहुत अच्छा सरकार!
सो०: और देखो, हरभजन कहॉ हैं? उससे भी कह दो कि अब मैं नाराज नहीं होउंगा.
जग०: बहुत अच्छा सरकार!
सो०: अरे तो जाकर कहते क्यों नहीं? यहीं खड़े-खड़े 'बहुत अच्छा सरकार!'बक रहे हो! (जगदीश जाने को उद्यत होता हैं) धीरे-धीरे क्यों जाते हो? जल्दी जाओ. (चिढ़ कर)इन कम्बख्तों के मारे (नाराज होने की भूल का स्मरण कर डॉक्टरों की ओर देखते हुए)... ..अरे भैया जगदीश! (जगदीश लौट कर आता है)कह देना. इतनी जल्दी कहने की जरुरत नहीं है, भैया! क्या करुं, मेरी तो नाराज होने की आदत-सी पड़ गई हैं.
दासः शो ठीक होने शाकेगा.
क०: बस आप खत लिख दीजिए. गाने का इन्तजाम हो जायगा, इधर हम लोग साथ-साथ दवा देगें तो बहुत जल्दी आराम हो जायगा.
रुप०: और क्यों डॉक्टर, पेट के दर्द में ऑपरेशन की जरुरत तो नहीं पड़ेगी?
सो०: (चौक कर)आपरेशन.....
क.: नहीं-नहीं, जब मन की बेचैनी मिट जायगी तो पेट का दर्द आप से घट जयगा. आपके संगीत सुनने का इन्तजाम जल्द ही होना चाहिए. सेठ साहब...?
सो०: नहीं -नहीं, मैं अभी खत लिखता हूं. (बैठ कर घबराहट में खत लिखना चाहते है)
दास०: मन में बेचैनी होने से बीमारी बाढ़ने शाकता. बाढेगा नेई. हाम दावा भी देगा.
सो०: बस दवा ही दीजिए. आपरेशन नहीं, गाना सुनाइए, दवा दीजिए, बस. डॉक्टर कपूर, घबराहट मे मुझसे ठीक नहीं लिखा जाता, आपकी मेरी तरफ से लिख दीजिए.
क०: हॉ-हॉ, लाइए मैं लिख दूं. (खत लिखते हैं.)
रुप०: यह संगीत क्या रोज-रोज सुनना पड़ेगा बाबूजी, बड़ी मुसीबत हैं.
सो०: (बड़े प्रेम से) रुप, अच्छे होने के लिए सुनना ही पड़ेगा. सुन लो बेटा, डॉक्टर लोग कहते हैं. मैं कहॉ कहता हूॅ? रुप, सिर्फ थोड़े दिन की बात हैं. फिर तो जिन्दगी भर के लिए अच्छे हो जाओगें.
रुप०: अच्छी बात हैं. बाबूजी, जैसा कहेगें, करुंगा. आपकी आज्ञा से बाहर तो जा नहीं सकता.
सो०: वाह, क्या कहना है. मेरा बेटा रुप! मेरा बेटा रुप!!
क०: लीजिए, दस्तखत कर दीजिए.
सो०: (पढ़ कर) वाह, कितना अच्छा लिखा है डॉक्टर! अब तो वह जरुर आ जायगी. (दस्तखत करता है. कपूर से) वाह, कितना अच्छा लिख-'मैं उसको अपनी ही बेटी समझूंगा' आप बहुत अच्छी चिट्ठी लिखते हैं डॉक्टर साहब, क्या डॉक्टरी में ये भी बतलाया जाता हैं.
क०: (मुस्करा कर) ऐसी कोई बात नहीं हैं. अच्छा, अब इसे भिजवा दीजिए.
सो०: वह मैं अभी भिजवाता हूॅ. (पुकार कर) जगदीश!
जग०: (आकर) सरकार!
सो०:देखों, तुम लाला धनपतचन्द का मकान जानते हों?
जग०: जी सरकार! जिनका दिवाला निकल गया था?
सो०: हॉ, वहीं. जाानते हो अब वे कहॉ रहते हैं?
जग०: जी, करनलगंज में......
सो०: हॉ, वहीं! यह चिट्ठी उन्हीं के हाथ में देना. जरुरी है, समझें.
जग०: जी सरकार!
सो०: जाओ (जगदीश जाता हैं)
सो०: (संतोष की सॉस लेकर) अब कहीं चैन मिला. अब मेरा रुप बहुत जल्दी अच्छा हो जायगा, क्यों डॉक्टर?
क०: अभी कुछ दिन तो लगेगें, फिर बिल्कुल अच्छे हो जायंगे. बहुत दिनो के लिए.
दास.: (प्रसन्नता से) हामरा डॉक्टरी मामूलली हाय?
सो०: नहीं डॉक्टर साहब, आप लोगो ने ही तो रुप को अच्छा करने की तरकीब निकाली हैं.
क०: अब रुप की बीमारी अच्छी हो जायगी.
रुप५ जब आप लोगों ने मुझे अच्छा करने की इतनी कोशिश की है तो ऐसा लगता है कि मैं अभी से अच्छा होने लग गया हूॅ.
सो०: (प्रसन्नता से झूम कर)क्या कहना! क्या कहना! **पर्दा गिरता हैं.**

एकता के लिए हिन्दी जरुरी,
बिना इसके प्रगति अधूरी।
हमें सकल्प करना होगा,
हिन्दी भाषा को अपनाएं,
हिन्दी भाषा का संदेश,
सारे जग में फैलाएं।
दर्शन सिंह रावत

डॉ० रामकुमार वर्मा के हास्य एकांकी

✍ उपासना पाण्डेय

"बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ० रामकुमार वर्मा महान् कवि, उत्कृष्ट समालोचक, गम्भीर समीक्षक और सफल नाटककार तथा एकांकीकार हैं. ये एकांकी नाट्य -शिल्प के प्रणेता हैं. उन्हें 'एकांकी सम्राट' होने का गौरव प्राप्त हैं. वैसे तो उनको सभी विधाओं पर समान अधिकार प्राप्त था परन्तु साहित्य जगत् में उन्हें ख्याति नाटककार और एकांकीकार के रुप में अधिक प्राप्त हैं. प्रसंगतः यहॉ कहना उचित प्रतीत होता है कि विविध आयामों में समानाधिकार रखने वाले डॉ० वर्माजी के नाटककार स्वरुप के समक्ष उनके महान् कवि रुप को वह स्थान साहित्य जगत् ने नहीं दिया गया, जिसके वे अधिकारी हैं.क्योंकि वह मूलतः कवि ही हैं.

डॉ० वर्मा जी ने एंकाकी के क्षेत्र में आदर्शवाद को मान्यता देते हुए पात्रो का मनोवैज्ञानिक पद्धति से विश्लेषण चरम सीमा का क्रमिक विकास, परिष्कृत रंग सूचनाओं के प्रयोग और अभिनेयता का समावेश हिन्दी साहित्य के सम्मुख नये प्रयोग और नई सम्भावनाओं को प्रस्तुत किया. अपनी साधना, कल्पना और अथक परिश्रम के द्वारा उन्होंने एकांकी शिल्प का निर्माण किया.

एकांकीकार वर्माजी ने अनेक उत्कृष्ट एकांकियों की रचना की. इन एकांकियों में विविध विषयों पर अपनी लेखनी चलाई हैं. विषय वस्तु के आधार पर एकांकियों का वर्गीकरण इस प्रकार है-

१. ऐतिहासिक एकांकी- कौमुदी महोत्सव, चारुमित्रा, समय-चक्र, पानीपत की हार, बादशाह अकबर का दीने-इलाही, बापू, दीपदान, वीर जवाहर आदि.

२.सामाजिक एकांकी-जीवन का प्रश्न, शहनाई की शर्त, शक्ति-संजीवनी, चक्कर का चक्कर, घर का मकान आदि.

३.साहित्यिक एकांकी-छायावाद युग, कविता का युग-पथ, प्रसाद परिचय, भारतेन्दु-मण्डल, सूर-संगीत, मन मस्त हुआ तब बोले आदि.

४.वैज्ञानिक एकांकी-प्रगति के चरण, चन्द्रलोक आदि.

५.पौराणिक एकांकी-जैसे-शैल शिखर.

६. मनोवैज्ञानिक एकांकी- औरंगजेब की आखिरी रात

७. बाल एकांकी-मेढ़का के बीज

८. हास्य एकांकी- पृथ्वी का स्वर्ग, कवि पतंग, रुप की बीमारी, रंगीन-स्वप्न, फैल्ट हैट, एक तोला अफीम की कीमत, नमस्कार की बात, छोटी सी बात, इलेक्शन आदि.

यह कहना समीचीन प्रतीत होता है कि वर्माजी के एकांकी नाटक पश्चिम की प्रवृत्ति से प्रभावित होकर भी भारतीय नाट्यशास्त्र के क्रोड़ में पोषित और पल्लवित हुए हैं. शायद यहीं कारण था कि उनके नाटकों में यथार्थवाद से उद्भूत एक नैतिक आदर्शवाद था. यद्यपि वर्माजी ने विविध विषयों पर एकांकियों की रचना की तथापि कुछ विद्वानों का मन्तव्य है कि उन्होंने ऐतिहासिक एकांकियों की ही रचना अधिक की. परन्तु उनके हास्य बोध एकांकियों ने मुझे अधिक आकृष्ट किया.

डॉ. वर्माजी द्वारा लिखित १३० से भी अधिक एकांकियों में ३५ से ४० एकांकी हास्य और व्यंग्य प्रधान हैं. साथ ही उनमें विषयों की पर्याप्त विभिन्नता वर्तमान हैं. वे स्वयं एकांकियों मे यथासम्भव हास्य और व्यंग्य के रहने के समर्थक थें. वे कहते हैं-"मैं नाटक में हास्य, व्यंग्य और विनोद रखने के पक्ष में अवश्य हूँ. इसीलिये मेरे गम्भीर नाटकों में भी यथावसर व्यंग्य और विनोद के चित्र मिल जाते हैं."

डॉ. वर्माजी ने परम्परागत रचनाओं से पृथक होने के लिए तथा नाटकों के क्षेत्र में नवीन प्रयोगों के लिये परिस्थितियों के विचित्र संघर्षो में रस की स्थिति को एकांकियों में आत्मसात् किया. इन नवीन प्रयोगों को ही प्राथमिकता देकर उन्होंने हास्य के विभावों को मनोविज्ञान में स्थापित कर हास्य के पॉच भेद किये हैं, जिसमें प्रत्येक के दो-दो प्रकार हैं-

हास्य-सहज(विनोद,अट्टहास), दृष्टि-विकार(अतिरंजना विद्रूप),भाव विकार (परिहास, उपहास),ध्वनि विकार(व्याजोक्ति, वक्रोक्ति), बुद्धि विकार(व्यंग्य, विकृति)

इस भॉति हास्य सहज विनोद से चलकर क्रमशः दृष्टि, भाव, ध्वनि और बुद्धि के विभिन्न रुपो को ग्रहण कर विकृति में समाप्त होता हैं और अपनी यात्रा में मनोविज्ञान की सभी स्थितियों से गुजरता हैं. इस प्रकार हास्य के अन्तर्गत व्यंग्य और विकृति की रचना गहरी दृष्टि और विस्तृत अनुभव की अपेक्षा रखती हैं. इससे सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि वर्माजी ने कितने श्रमसाध्य प्रयत्न किये होगें.

डॉ. वर्माजी इन एकांकी नाटको के शिल्प-विधान में पर्याप्त कुतूहल व संकलनत्रय को स्थान देते हैं, जो कि एकांकी विधा के लिए आवश्यक तत्व हैं. इन एकांकियों के माध्यम से वर्माजी ने समाज की विभिन्न समस्याओं व विकृतियों का सम्यक् समाधान शिष्ट हास्य के रुप में प्रस्तुत किया हैं. डॉ. वर्माजी कहते है-"मेरे हास्य और व्यंग्य का उद्देश्य अतिरंजित और अनुपातरहित दृश्यों की अवतारणा कर दर्शकों को हॅसाना भर नहीं हैं वरन् उनके हृदय का परिष्कार भी करना हैं. मेरे हास्य सुधारात्मक प्रवृत्ति के हैं और जिस पात्र को मैंने अपने हास्य का लक्ष्य बनाया हैं, उसके प्रति मेरी पूर्ण सहानुभूति हैं."

वर्माजी का भाषा ओर शब्द विन्यास पर पूर्ण अधिकार हैं. शब्द का चयन और उनका वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों से सहज ही जोड़ देना वर्मा जी की अपनी विशेषता रही हैं. दृष्टत्य है 'शहनाई की शर्त' एकांकी में राजन् का संवाद- राजन- उठकर, पढी लिखी लड़की! ना मॉ! पढ़ी लिखी लड़की से भगवान बचाए! आजकल की पढ़ी लिखी लड़कियां तो ऐसी है जैसे इंश्योरेन्स पॉलिसी. हर महीने एक भारी प्रीमियम भरते जाओं. फिर आज यह चाहिये कल वह चाहिए. जब बाहर निकलेगी तो मालूम होगा कि चलती फिरती नुमाइश जा रही हैं. कहीं नरगिस की नकल, कहीं शीला की शकल. ऐसे मॅहगें सौदे को इस टूटी चारपाई पर सजाऊँगी? तुम्ही बोलों, मॉ! इस इन्द्रधनुष को अपने जैसे गधे की पूॅद से बाधूगां?

'पृथ्वी का स्वर्ग' नामक एकाकी विनोद के अन्तर्गत आता है. इसमें सरल हास्य के माध्यम से आधुनिक जीवन के एक ध ान-लोलुप व्यक्ति का चित्र और ईमानदार तथा निर्धन भिखारिन का चित्र दो परस्पर प्रवृत्तियों के प्रतीक के रुप में उपस्थित किया गया हैं.

वर्माजी ने आजकल के विश्वविद्यालय तथा कॉलेजों के विद्यार्थियों के प्रेम-प्रसंग की मनोवृत्ति को हास्य कथानक के रुप में लेकर, इस मनोवृत्ति के दोनों पार्श्वो पर आधारित 'रंगीन स्वप्न' और 'रुप की बीमारी' एकांकी लिखी. जिसमें प्रथम एकांकी पार्श्व विनोद का निर्माण तो द्वितीय पाश्व अट्टाहास का निर्माण करता हैं. 'रुप की बीमारी सबसे अधिक मंचित एकांकी हैं. इसमें डॉक्टर दासगुप्ता नामक पात्र, जो बंगाली होने से भाषा का उच्चारण कभी-कभी वे बड़े हास्योत्पादक ढंग से करता है.

इसी प्रकार 'फैल्ट हैट' में दो पीढ़ियों का सघर्ष हैं. वर्तमाना नवयुवक जीवन मे उपयोगितावाद को अधिक महत्व देता हैं. अतः जब किसी नये हैट का उपयोग वह मूॅगफली रखने में करता है तो छोटी-छोटी वस्तुओं को संवारने वाली प्राचीन परम्परा से उसका सघर्ष होता हैऔर इसी संघर्ष की क्रमिक परिस्थितियों में अट्टाहास जन्म लेता हैं.

वर्माजी कर कथन है कि-"हास्य की स्थिति बहुत कुछ अनुपातहीनता तथा अतिरंजना में हैं." किसी भी व्यक्ति में किसी गुण की अनुचित अधिकता हास्य को उत्पन्न करने वाली होती हैं. 'कवि पतंग' नामक एकांकी में कवि में स्त्री-सुलभ सुकुमारता की अधिकता के कारण उसकी भावुकता चरम सीमा को पार कर गई हैं; अतः उसका चित्र दर्शकों को 'अतिरंजना' का परिचय देते हुए हॅसाने में समर्थ हैं.

पतंग-(ऑखें फाड़कर) पत्नी? मेरे पास कहॉ हैं? अनंग जी! पत्नी और कविता मे चूहे-बिल्ली का सम्बन्ध हैं. पत्नी आई कि कविता गई. पत्नी नही हैं, तो कविता आनन्द से उछलती है, कूदती है निकलती हैं, बिल में समा जाती हैं. (स्मरण कर) आयें, कहीं मेरी कविता पुस्तक तो किसी बिल में समा नहीं गई?

'नमस्कार की बात' और 'एक तोला अफीम की कीमत' नामक एकांकी विद्रूप कोटि के अन्तर्गत आते हैं. जहॉ 'नमस्कार की बात' के द्वारा वर्माजी ने ५०वर्षीय निर्माता द्वारा तरुण अभिनेत्री को रिझाने का असफल प्रयास सफलतापूर्वक संवादों द्वारा प्रस्तुत किया है, वहीं 'एक तोला अफीम की कीमत' में असफल आत्महत्या के प्रयत्न को भी. इन नाटकों का मनोवैज्ञानिक दृष्टि से जो पात्रों के संवादों व चरित्रों का क्रमिक विकास वर्माजी ने किया है, वह अन्यत्र दुर्लभ हैं.

'फीमेल पार्ट' एक उपहास है. इसके द्वारा रंगमच के क्षेत्र में 'नारी भूमिका' में लड़कियों के संकोच के कारण आगे न आने पर, विद्यार्थियों के समक्ष उपस्थित कठिनाइयों का वर्णन हास्यपरक संवादों में व्यक्त किया गया हैं.

'ऑखों का आकाश' एक परिहास है, जिसमें मात्र दो पात्र (नवदम्पति) हैं. नाटक का कथानक, धागों के समान उलझने वाले, उनके मनोविकार पर आध ारित है. जो जरा सी बात पर झगड़ते है और उससे भी कम बात पर मेल कर लेते हैं. पति-पत्नी के झगड़ों का स्वाभाविक चित्रण इसमें उपस्थित हैं.

वर्माजी ने 'छींक' व्याजोक्ति के अन्तर्गत अन्ध विश्वास का बड़ा मनोरंजक चित्र प्रस्तुत किया हैं, जो गहरे विश्वास के रंगो से भरा गया हैं. 'छोटी सी बात' वक्रोति सत्य का मनोरंजक इतिहास हैं. इसमें पात्रों व संवादों के माध्यम से लेखक वर्माजी ने स्पष्ट किया है कि महान घटनाओं के आधार छोटे होते हैं परन्तु उसकी विशालता को देखकर उसका आकलन करना कठिन हैं.

व्यंग्य के अन्तर्गत 'कहॉ से कहॉ' और 'आशीर्वाद' एंकाकी आती है, जिसमें मध यम वर्ग के परिवार का जीवन चित्रित हैं. प्रथम व्यंग्य 'कहॉ से कहा' में दो पीढियों (सास-बहू) के संघर्ष तथा सन्धि ा का मनोवैज्ञानिक प्रस्तुतिकरण हैं. द्वितीय आर्शीवाद में लाटरी के इनाम को पाने के लिए उत्सुक मध्यमवर्गीय दम्पति की मनोवृत्ति के चित्रण द्वारा आधुनिक वैभव के प्रति तीखा व्यंग्य हैं.

'इलेक्शन', 'सही रास्ता' और 'सॉप' विकृति पर आधारित एकांकी हैं. इनमें से इलेक्शन में किसी भी संस्था में निर्वाचन पद्धति की कशमकश का चित्रण हैं. 'सही रास्ता' में समाज के अनेक वर्गो में व्याप्त भ्रष्ट्राचार पर निर्मम प्रहार हैं. इसमें वर्माजी विकृति के आश्रय से जो संकेत नाटक में देते हैं, वे दोषों के निराकरण के लिये प्रयुक्त होते हैं.

'सॉप, एकांकी वास्तव में समाज के विकृत स्वरुप को प्रस्तुत करता हैं. वर्तमान युग में नारी की असहाय अवस्था को वर्माजी नाटक के पात्रों द्वारा सम्यक्

रुप से प्रस्तुत करते हैं. वो इतिहासकार नामक पात्र के संवादक के द्वारा कितना तथ्यपूर्ण कथन कहते हैं कि नाटककार-देश की स्वतंत्रता के २५ वर्ष बाद भी नारी कितनी अरक्षित हैं. नाटककार:(दृढ स्वर से) देखिए,जो लड़की यहॉ बैठी थी वह उस बुढ़िया की (संकेत करते हुए) बेटी थी. (गुंडो की ओर संकेत कर) इन लोगों की धर्म बहिन थी और आप लोगों की कजिन. और तीनों ने उसे एक साथ छोड़ दिया? और आप लोग कौन हैं? (दृढता से) सही-सहीं अपना परिचय दीजिए. (अधिक दृढ़ता से) दीजिए अपना परिचय. (सब एक दूसरे का मुंह देखते हैं) नाटककारः (दृढता से) आप लोग है सॉप, जो उसे डसना चाहते थे. एक सांप तो मार दिया गया. बाकी आप लोग जिन्दा हैं.

इस प्रकार हम देखते है कि डॉ. रामकुमार वर्माजी एकांकी के पात्रों, संवादों और कथानकों के माध्यम से पाठको और रंगमंच के दर्शकों को समक्ष महत्वपूर्ण सामाजिक समस्याओं तथा व्याप्त विकृतियों को प्रभावोत्पादक ढंग से प्रस्तुत करते हैं और साथ ही उसके समाधान का संकेत भी करते हैं. उनकी एकांकीकियों में तरुण वर्ग, दम्पति, स्वार्थान्ध सेठ, अनुत्तरदायी अधिकारी वर्ग, वकील, प्रोफेसर आदि पात्रो का स्वरुप व चित्रण बड़े ही मनोवैज्ञानिक ढंग से हुआ हैं. सच्चे अर्थो में वह 'एकांकी सम्राट' के विरुद्ध के अधिकारी है और अद्वितीय एकांकीकार हैं.

शोध छात्रा, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

जय हिन्द – जय हिन्दी
यही है हमारे पहचान की बिन्दी
जितनी जाति, उतनी भाषा,
लेकिन हिन्दी सबकी भाषा।
हिन्दी हो सबकी पहचान,
मिलकर बोलो एक जबान

दर्शन सिंह रावत

संस्मरण

डॉ रामकुमार वर्मा और हम

राजेश कुमार सिंह

हिन्दी साहित्य के एकांकी सम्राट,
डॉ0 रामकुमार जी वर्मा।
बहुमुखी प्रतिभा के महान धनी,
पदम भूषण से सम्मानित वर्मा।।1

सुयोग्य पिता के सुयोग्य तनय,
रामकुमार वर्मा जी थे।
कवियित्रि और विदुषी माता,
डिप्ली कलेक्टर श्री पिताजी थे।।2

20वीं शताब्दी के पॉचवे वर्ष,
15 सितम्बर को वर्माजी का जन्म
गॉव–गोपालगंज–सागर जनपद,
मध्य प्रदेश हुआ था जन्म।।3

गॉधी जी का असहयोग आन्दोलन,
सन् उन्नीस सौ इक्कीस में था।
स्कूल–कॉलेज छोड़ने का नारा,
शौकत अली का नरसिंह पुर था।।4

इस आन्दोलन के पहले विद्यार्थी
सोलह वर्षीय श्री वर्मा जी थे।
राष्ट्रपिता के विचार–प्रचारक,
सर्वश्रेष्ठ अग्रणीय वर्मा जी थे।।5

प्रथम श्रेणी की सारी डिग्री,
एम.ए. तक वर्मा के पास।
सामाजिक परिवेश धरा के,
अतुलित–मुखरित वर्मा के पास।।6
वसुधैव कुटुम्बकम के प्रबल समर्थक,
जातिवाद–प्रान्तीयता से काफी दूर।
दयाभाव–समरसता के देव,
अमृत वाणी से भर–पूर।।7

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में वर्मा,
हिन्दी विभाग के थे अध्यक्ष।
सोवियत संघ लंका नेपाल की,
भ्रमण किये थे श्री अध्यक्ष।।8

हिन्दी साहित्य में अमिट निशानी,
डॉ0 रामकुमार वर्मा की है।
जीवन के हर क्षेत्र संदर्भित,
लेखनी ओजस्वी वर्मा की है।।9

ऐसे महान पुरुष से मेरा,
सम्पर्क रहा कुछ वर्षो तक
नशाखोरी के बढ़ते कदम को,
वे कहते थे सबसे घातक।।10

वे चाह रहे थे मैं लिख डालूं,
मद्य निषेद पर कोई काव्य ग्रंथ
उनके जीवन काल में प्रकाशित
नहीं कर पाया ऐसा ग्रंथ।।

'मधुशाला की मधुबाला' मेरी,
डॉ0 वर्मा की अन्तर मन।
गोकुलेश्वर द्विवेदी का अनुपम अनुराग,
जग ज्योतित है भव्य प्रकाशन

आत्मज श्री पंचम सिंह, बायोवेद शोध फार्म प्रभारी, 103/42, मोतीलाल नेहरु रोड, प्रयाग, इलाहाबाद–2

आवश्यकता हैं

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका **'विश्व स्नेह समाज'** हेतु भारत के विभिन्न क्षेत्रों मे **संवाददाता, ब्यूरो, एजेन्ट, विज्ञापन प्रतिनिधियों की.**

हिन्दी साप्ताहिक पत्र **द हंगामा इंडिया** हेतु उत्तर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों **संवाददाता, ब्यूरो, एजेन्ट, विज्ञापन प्रतिनिधि** कार्य करने के इच्छुक व्यक्ति जबाबी लिफाफे के साथ लिखेंः संपादक, विश्व स्नेह समाज,
एल.आई.जी-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद दूरभाषः ६३३५१५५६४६

ऐतिहासिक नाटक

पृथ्वीराज की आँखें

डॉ. रामकुमार वर्मा

पहले संकल से(महाकवि चंद ने अपने ग्रंथ पृथ्वीराज-रासो के छियासठ समयों-बड़ा लड़ाई समयों में पृथ्वीराज का कैद होकर गोर जाना लिखा हैं. सरसठ समयों-बान-बेध समयों में पृथ्वीराज की धनुर्विद्या का वर्णन और अंत में पृथ्वीराज के शब्द-बेधी बाण से शहाबुद्दीन गोरी का वध होना लिखा हैं. इसी दृष्टिकोण को सामने रखकर इस नाटक की रचना की गई हैं, पर ये सब बातें ऐतिहासिक सत्य से परे हैं)

पात्र परिचय

पृथ्वीराज चौहान : दिल्ली और अजमेर का राज

चंद : महाकवि और पृथ्वीराज का मित्र

शहाबुद्दीन गोरीःगोर का सुलतान -११९२

अख्तर : सिपाही

काल : तराइन के युद्ध के उपरांत

(संध्या का समय. गोर के किले में पृथ्वीराज कैद हैं. वह पैतालिस वर्ष के प्रौढ़ व्यक्ति हैं. उनके शरीर से शौर्य अब भी फूट रहा हैं. चढ़ी हुई मूछें और रोबीला चेहरा. उनके हाथ सॉकलों से बँधे हैं. अब वह अपने घुटनों पर दोनों हाथ रक्खें हुए सिर झुकाएं बैठे हैं. सॉकल का एक छोर उनके पैरों तक लटक रहा है, जो हाथों के संचालन-मात्र से ही झूलकर शब्द करने लगता हैं. उनके बाल बिखरे हुए हैं. डाढ़ी बढ आई हैं. वस्त्र बहुत मैले हो गए हैं. घुटनों के पास फटा हुआ चूड़ीदार पाजामा हैं, जिस पर रक्त के धब्बे दिखाई पड़ रहे हैं, पैर में पुराना जूता हैं, जिस पर गर्द छा रही हैं. पृथ्वीराज ऑखें बंद किए हैं. सामने खिड़की से हवा आ रही हैं, जिससे उनके बाल हिल रहे हैं. कुछ समय पहले थोड़ा पानी बरस चुका हैं, इसलिये वायु में कुछ शीतलता आ गई हैं.)

दाहनी ओर महाकवि चंद बैठा हुआ हैं. उसकी आयु पृथ्वीराज की आयु के लगभग हैं. उसके कपड़े साफ-सुथरे हैं. वेश में सादगी हैं, पर मुख पर दुःख की रेखाऍं अंकित हैं. वह पृथ्वीराज को करुणा-पूर्ण ऑखों से देख रहा हैं. कुछ क्षणों तक दोनों स्थिर बैठे रहते हैं. फिर वेदना से सिहर-कर पृथ्वीराज नीचे मुख किए ही, व्यथित स्वर में, बोलता हैं. बोलने के साथ-साथ हिलने से सॉकल बज उठती हैं.

पृथ्वीराज-मत पूछो. कुछ मत पूछों. जिस क्षण ने पृथ्वीराज को पृथ्वीराज न रहने दिया, उसकी-उस निदर्य क्षण की-बात मत पूछों. बड़ी कठिनाई से उस कष्ट को भूला सका हूँ. चंद! आखेट करते समय व्याघ्र के पंजे भी मुझे इस तीक्ष्णता से नहीं लगे. आह!

(सिर झुकाकर सोचता है)

चंद- (दयार्द्र होकर) महाराज, यह आपका शरीर, जिससे शौर्य पसीना बनकर बहा करता था, आज इतना निस्तेज हैं! क्या गोर के आदमी इतने निर्दय होते हैं! एक शक्तिशाली राजा के साथ इतना पशुत्व!

पृथ्वीराज-पशुत्व! ओह, चंद! यदि उस समय तुम होते, तो कॉप जाते! तुम्हारी लेखनी कुंठित हो जाती. मनुष्यता थर्रा उठती. आश्चर्य हैं, माता वसुंधरा यह सब कृत्य कैसे देखती रही! और, इस पृथ्वीराज के शरीर पर इतना अत्याचार देख लेने पर भी वह माता कहला सकती हैं? कवि, घोषणा कर दो कि यह वसुंधरा माता नहीं, पिशाचिनी हैं!!

(भावोन्मेष में कॉपता हैं)

चंद-महाराज!

पृथ्वीराज-(उसी भावावेश में) और यह हवा! इस समय शरीर से लगकर सुख देना चाहती है, पर उस समय? पापिनी....!

(घृणा प्रदर्शन)

चंद-यह उन्माद!

पृथ्वीराज-(तीव्रता से) चुप रहो, चंद! इतना कहने के बाद भी मैं जीवित हूँ, आश्चर्य है. भयंकर रात थी. प्रेयसी संयोगिता के विना वह रात हब्शिन बन गई थी. अंधकार जैसे मेरी ओर घूर रहा था, मेरी ऑखो में घुसकर. इतने में चार मशाले दिखलाई दीं. उनकी लौं इधर-उधर झूम रही थी. जैसे अंधकार-रुपी काले दैत्य की जिहवाएं हों. (सोचते हुए) पॉच आदमी सामने आए. सरदार के हाथ में एक छुरा था. वह बोला-कैदी, तेरी ऑखें जायॅगी.

(शैथिल्य-प्रदर्शन)

चंद-यह धृष्ठता! (भौंहे सिकोड़ता हैं)

पृथ्वीराज-(उसी स्वर में) मैंने कहा, कैद करने के बाद यह ज़ुल्म? मनुष्यता से रहना सीखों, ख़ुदा के बंदों! जान से मार डालों, पर एक राजा की इज्जत रहने दों. चंद, उसने कहा, चुप रह! (गहरी सॉस लेता हैं)

चंद- (तड़पकर) क्या कहा? चुप रह?

पृथ्वीराज-हॉ, यही कहा. दिल्ली और अजमेर को भैांह के संकेत से नचानेवाले चौहान को ये शब्द मेरे कानों मे ंपड़ते, तो...तो हाय, जबान लड़खड़ा रही हैं. बोला भी नहीं जाता.

चंद- (दुःख से) आह, आज महाराज पृथ्वीराज चौहान की यह दशा!

पृथ्वीराज-(अपने ही विचारों से)फिर....फिर सबने मिलकर मुझे जोर से पकड़ लिया! मेरे हाथ-पैर बॅधे थें. मैं बिलकुल असहाय था. चंद, उस समय जीवन में पहली बार-केवल पहली बार -मैंने अपनी ऑखों को ऑसुओं से भरा पाया!

चंद- (करुणा से) महाराज, आपका गला सूख रहा हैं, पानी पी लीजिए.

पृथ्वीराज-(चंद की बात न सुनकर अपने ही विचारों में, मानो वह दृश्य उसकी ऑखों में झूल रहा हों.) दाे गरम सूजे मेरी ऑखों के पास लाए गए. मुझे उनकी गरमी धीरे-धीरे पास आती हुई जाना पड़ी. उस समय मुझे याद आया...मुझे याद आया संयोगिता ने एक बार इसी प्रकार धीरे-धीरे अपने मुख को समीप लाते हुए इन्हीं ऑखों का चुंबन किया था. उस समय उन अधरों की मादकता मेरे पास इसी प्रकार धीरे-धीरे आती हुई जान पड़ी थी!

चंद-(चंचल होकर) अब आगे मत कहिए, मैं नहीं सुन सकूंगा....

पृथ्वीराज-एक क्षण में उन्होंने उन गरम सूजों से मेरी पलकों को छेद डाला, और मेरी पुतलियों को जलाकर.....

चंद-(अधीर होकर) अब न सुन सकॅूगा यह क्रूरता-पूर्ण अत्याचार!

पृथ्वीराज-(शांत होकर) अच्छा, मत सुनो. पर इतना जान लो कि जिन ऑखों में संयोगिता

की मूर्ति अंकित थी, वे ऑखें अब नहीं रहीं. जिन अतृप्त ऑखों में सौंदर्य-सुधा-पान की मादकता थी, वे ऑखें अब नहीं रहीं.
चंद-(दृढता से)और जिन ऑखों ने क्रूर दृष्टि से कितने ही राजाओं को निस्तेज कर दिया, जिन ऑखों ने रक्त-वर्ण होकर रण-क्षेत्र में लोहा बरसा दिया, वे ऑखें?
पृथ्वीराज-वें ऑखें? उफ्, वे ऑखें तो जयचंद के विश्वासघात की आग में जल गई. कवि, क्या रेवा-तट के सत्ताईसवें समयो की याद दिलाना चाहते हों? इस समय मेरे सामने तुम्हारो 'रासों' कवि की कल्पना का साधारण अभ्यास-मात्र हैं. अब तो यह शरीर वह पृथ्वीराज चौहान नहीं रह गया.
चंद-महाराज.....!
पृथ्वीराज-(क्रोध से) बार-बार मुझे महाराज क्यों कह रहे हों? मैं एक कैदी हूॅ.
(सॉकल बज उठती हैं)
चंद-पर, मेरे लिये नहीं. फिर आपका शरीर कैदी है, आत्मा? मुझे विश्वास है, आपकी आत्मा कैदी नहीं हो सकती. आप वही पृथ्वीराज चौहान हैं. उस समय आप भारत में थे, इस समय यहॉ. शेर पिजड़े में बंद रहने पर भी शेर ही कहलाता हैं.
(गर्व की मुद्रा)
पृथ्वीराज-यदि शेर ही रखना चाहते हो, तो चंद कहॉ है तुम्हारी तलवार? फाड़ दो मेरा यह वक्षःस्थल. पृथ्वीराज के गौरव से गिरे हुए इस प्राणी को अब प्राण की आवश्यकता नहीं. इस जीवन का एक-एक क्षण तुम्हारी तलवार की धार से बहुत पैना हैं. (सॉकल का शब्द) लाओ, अपनी तलवार!
चंद-तलवार? वह तो मुहम्मद गोरी के हुक्म से दरवाजे पर ही मेरे हाथों से ले ली गई. मुझसे कहा गया कि मैं उसे भीतर नहीं ले जा सकता. वह तो दरवाजे पर ही ले ली गई.
पृथ्वीराज-(दांत पीसकर) ले ली गई? और हाथ? वे भी गोरी ने वहीं काट लिए? नीच! नारकी! (ठहरकर) चंद, तुम प्राण-हीन होकर मेरे पास आए हो. जानते हो, वीरों के प्राण का नाम है तलवार!
चंद-जानता हूं, पर सुलतान का हुक्म.
पृथ्वीराज-सुलतान का हुक्म? गोरी का? और तुम उस हुक्म के आज्ञाकारी सेवक हों?
चंद-(संभलकर) किंतु, किंतु, यह कटार (छिपी हुई कटार निकालकर) मैंने अपनी आत्मा की तरह छाती में छिपाकर रक्खी हैं. मैं इससे अपना काम कर सकता हूॅ.
(तनकर खड़ा हो जाता हैं)
पृथ्वीराज-(बड़ी प्रसन्नता से) मेरे अच्छे चंद महाकवि, मित्र प्यारे! आओ! मेरे जीवन की श्मशान के समान भयानक आग शांत कर दो. लाओ, तुम्हार माथा चूमॅू. हाय, मैं देखा नहीं सकता, तुम्हारा माथा कहॉ हैं!
चंद-महाराज! विचलित न होइए. मैं चौहान को इस दैन्यावस्था में नहीं देख सकता! मैं अभी मृत्यु....
पृथ्वीराज-(बात काटकर)हॉ, देर न करों. देर न करों. मेरे चंद, महाकवि, मित्र......
चंद-महाराज, मैं देर न करुॅगा. यह छुरी छाती मे घुसकर शीघ्र ही इस दुःख से मुक्त कर देगी. लीजिए, चूमता हॅू यह कटार. (कटार चूमता हैं) लाइए, अंतिम बार आपके चरण स्पर्श कर लूं. (चरण स्पर्श करता है) प्रणाम. मैं आप पर नहीं, अपने ही शरीर पर आघात करूंगा, क्योंकि मैं आपकी यह दशा नहीं देख सकता.
(कटार ऊपर तानता हैं)
पृथ्वीराज-(विचलित होकर) नहीं, नहीं.
(जंजीर बज उठती हैं)
मेरे चंद, यह नहीं हो.......
(चंद आत्मघात करना ही चाहता है कि पीछे से मुहम्मद गोरी निकलकर, हाथ रोककर, कटार छीन लेता हैं. गोरी पैतीस वर्ष का युवक हैं. शरीर गठा हुआ. मुछे तनी हुई. वह फौजी वेष में हैं. कमर में तलवार हैं.)
गोरी-(हंसकर) हॅअ्, सरदार, जिंदगी इतनी नाचीज हैं? यह दुनिया इसी तरह चलती हैं, और चलती रहेगी. तुम इतने मायुस क्यों होते हो? और भोले सरदार! क्या तुम जानते हो कि मेरे घर में क्या हो रहा हैं, इसका पता मुझे नहीं? गोर का सुलतान दीवारों में अपनी दृष्टि रखता हैं.
(चंद मलिन दृष्टि से गोरी को देखता हैं)
गोरी-(उत्साह से) पर वाह! तुम कितने वफ़ादार हो! अपने मालिक की यह हालत न देख सकने वाले सरदार! अपनी वफ़ादारी का इनाम मॉगों.
(चंद चुप रहता हैं)
गोरी-कुछ नहीं? बोलो! अभी तो बोल रहे थें. अंधे का पैर चूम रहे थें. उसकी ऑखें नहीं चूमते? अहा, कैसी खूबसूरत हैं.
(व्यंग्य दृष्टि)
चंद-खूबसूरत? उस शेर की ऑखें अब उसके दिल में हैं.
गोरी-दिल में? बहुत अच्छा. यह शेर तुम्हें शायद उन्हीं ऑखों से देख रहा हैं. पृथ्वीराज, तू मुझे किन ऑखों से देख रहा हैं?
पृथ्वीराज-(स्थिर भाव से) गोरी, तू देखने लायक भी नहीं हैं. अपनी इन अंधी ऑखों से अगर मैं देख सकता, तो भी मैं तुझे देखना पंसद न करता. अच्छा हुआ, तूने इनका उजेला ले लिया. (ठहरकर) मैं तुझे क्या देखॅू? तू भूल गया, उस बार मेरे तीरों से तेरी टोपी उड़ी थी! उस वक्त मैंने तुझे पूरी नजर से देखा था. जब तू मेरे सामने से भागा था, तब मैंने तुझे पूरी नजर से देखा था. तू भूल गया? मुझे दुःख है, सरदारों के कहने में आकर मैंने तेरा पीछा नहीं किया. मेरे तीर तेरे शरीर को न बेध सके.......!
(निराशा)
गोरी-(लापरवाही से) खैर, तेरे तीन न सही, मेरे मामूली सूजे तेरी ऑखो को बेध सके. एक ही बात है, पर तेरे तीर.....
चंद-(बीच ही में) सुलतान, पृथ्वीराज के तीर-पृथ्वीराज आवाज पर तीर मारता हैं.
गोरी-(आश्चर्य से) आवाज पर! मारता होगा, पर अब तो वह अंधा हैं.
चंद-सुलतान, आवाज पर तीर मारने के लिये ऑख की जरुरत नहीं होती.
गोरी-सच?
(आश्चर्य प्रकट करता हैं)
चंद-बिलकुल सच. कल अपने अंधे वीर का यही तमाशा देखिएगा. यही मेरा इनाम समझें.
गोरी-(पृथ्वीराज की ओर देखकर) शाबाश कैदी, (चंद से) अच्छा चंद! कल तुम्हारी खातिर इस अंधे की तीरंदाजी भी देख लूंगा. अच्छा, अब देर हो रही हैं. तुम मेरे साथ चल सकते हो. खुदकुशी पर तुमसे एक कहानी कहनी हैं. कैदी से मिलते का वक्त अब पूरा हो गया. अब एक मिनट भी नहीं.
चंद-यह बतलाना तो सिपाही का काम हैं, आपका नहीं. आप तो सुलतान हैं.

गोरी-तुम हमेशा मुझे सुलतान के बजाय सिपाही ही समझो,सिर्फ सिपाही.
(दृढ़ता से खड़ा होता हैं)
चंद-(पृथ्वीराज से)अच्छा, अब चलता हूँ. प्रणाम महाराज पृथ्वीराज!
गोरी-(व्यंग्य से) महाराज ('महा'पर जोर देकर) पृथ्वीराज! हा हा हा!
(अट्हास करता हैं)
(जोर से) अख़्तर!
(अख़्तर सिपाही का प्रवेश. पूरी वर्दी में तीस वर्ष का जवान ज्ञात होता हैं. मुस्तैदी से प्रवेश. आकर सलाम करता हैं.)
गोरी-महाराज ('महा' पर जोर देकर) पृथ्वीराज की ऑखों में आज रात को नीबूं और मिर्च पड़ेगा. रात के ग्यारह बजे. कितने बजे?
अख्तर-ग्यारह बजें.
गोरी-क्या?
अख्तर-नीबू और मिर्च.
गोरी-हॉ, नीबू और मिर्च पड़ेगा. समझें.
पृथ्वीराज -(दृढ़ता से उसी स्वर में) नीबू के रस में नम मिलाना होगा, समझें.
गोरी-(मुस्किराकर सिपाही से)अच्छा, इसकी मुराद पूरी करों. (पृथ्वीराज से) कैदी! कल सुबह मिलूंगा. रात को अपनी ऑखों में नमक-मिर्च डालकर आराम से सोनां.
(तनकर खड़ा होता हैं)
पृथ्वीराज-(व्यंग्य से मुस्किराकर) बहुत अच्छा बादशाह! सलाम!
(चंद को साथ लेकर गोरी का गर्व से प्रस्थान. पृथ्वीराज स्थिर भाव से बैठा रहता हैं.

डॉ रामकुमार वर्मा की कुछ कविताएं

१.पर तुम मेरे पास न आये।

....पर तुम मेरे पास न आये।
देखो, यह खिल उठी जुही,
यौवन के विकसित अंग छिपाये.
निराकार प्रेमी समीर,
आया है सौरभ-साज सजाये।
मैंने कितनी बार सॉस के,
शत सन्देश स्वयं दुहरायें।
तारे अपने दृग तारों
की धाराओं पर हैं तैरायें।
..पर तुम मेरे पास न आये।
कोकिल की कोमल पुकार ने,
पुष्प-शरीर वसन्त बुलाये।
उषा-बाल की प्रभा देख,
बादल ने कितने वेष बनाये!
मैंने कितने रुप रखे पर,
क्या न तुम्हें वे कुछ भी भायें?
जीवन में सॉसों की गति से,
कितनी हूँ मैं व्यथा छिपाये!
...पर तुम मेरे पास न आये।

२.स्मृति के क्षण

प्राणों में क्यों पीड़ा पाली?
जब जाना यह सुख दो क्षण हैं, प्रिय की सुधि क्यों है मतवाली?
बीती बातों के दो ऑसू,
सुधि में नथे-नथें बन आते।
जो गिर-गिर कर सूख गऐ थें,
वे अब ऑखों में न समाते!
एक सॉस गहरी बस केवल, यह जीवन की है रखवाली!
प्राणो में क्यों पीड़ा पाली?
कल कैसी थी शरद्-चॉदनी
प्राणों में शशि झूल रहा था!
मेरा मिलन लता-कुंजो के
फूल-फूल में फूल रहा था!
आज सॉझ के पहले पल में, रात सिमिट आई हैं काली!
प्राणो में क्यो ंपीड़ा पाली?
मेरा यह संसार-और उसके
खिलते से, कोमल सपने,
जो ऑखों में समा चुके हैं,
फिर भी तो हो सके न अपने।
ऐसे ही तो मेरे प्रिय है, जो मेरे हो सके न आली!
प्राणों में क्यों पीड़ा पाली?

३. ये गजरे तारों वाले

इस सोते संसार बीच,
जग कर सजकर रजनी वाले!
कहॉ बेचने ले जाती हो,
ये गजरे तारां वालें?
मोल करेगा कौन!
सो रही है उत्सुक ऑखें सारी;
मत कुम्हाले दो,
सूनेपन में अपनी निधियॉ न्यारी।।
निर्झर के निर्मल जल में,
ये गजरे झुला झुला धोना;
लहर हहर कर यदि चूमे तो,
किंचित विचलित मत होना।

विश्व स्नेह समाज के मूल्य वृद्धि हेतू सूचना

प्रिय सम्मानित पाठकों आपके सहयोग से पत्रिका विगत पॉच वर्षो से मात्र तीन रुपये में प्रकाशित होती रही हैं. लेकिन कागज के मूल्य वृद्धि के कारण हमें पत्रिका की कीमत बढ़ाने को बाध्य होना पड़ रहा हैं. हमें आशा है आप अपना सहयोग यथावत बनाए रखेंगें.
एक प्रतिः रु0 4/— वार्षिक : रु0 50/ विशिष्टः रु0 100/—
द्विवार्षिकः रु0 90/— त्रैवार्षिक : रु0 140पंचवर्षियः रु0 230/—
आजीवन सदस्यः रु0 1100/— संरक्षक सदस्य : रु0 2500/—
१.विशिष्ट सदस्यों का संचित्र संक्षिप्त परिचय एक बार प्रकाशित किया जाता हैं.
२. आजीवन सदस्यों का पूर्ण जीवन परिचय सचित्र एक बार तथा प्रत्येक वर्ष २/३का विज्ञापन/संदेश निःशुल्क प्रकाशित किया जाता हैं.
३.संरक्षक सदस्यों का एक बार पूर्ण जीवन परिचय, प्रत्येक वर्ष तीन विज्ञापन २/३ का निःशुल्क प्रकाशित किया जाएगा. तथा उपहार स्वरुप प्रत्येक वर्ष अलग से २००रु० तक की पुस्तकें भेंट की जाएगी.

होने दो प्रतिबिम्ब-विचुम्बित,
लहरों ही में लहराना।
'लो मेरे तारों के गजरे'
निर्झर-स्वर में यह गाना।।

४. हार!

छू लो, तो मैं हार मान लूँ।।
'ना' कह कर तुम हँस देती हो,
कैसे मैं इनकार मान लूं।
छू लो, तो मैं हार मान लूं।।
मेरी अपनी करुण कहानी,
तुमने सुन ली किन्तु न मानी।
इतने ही से कैसे अपना
और तुम्हारा प्यार मान लूँ।।
छू लो, तो मैं हार मान लूं।।
सोच सोच कर पिछली बातें,
व्यर्थ बिता दी कितनी रातें।
मन के इस मोहक मिलाप को
क्या मधुमय-अभिसार मान लूं।।
छू लो, तो मैं हार मान लूं।।
अन्तर मेरा और तुम्हारा,
मिटा चुकी ऑसू की धारा,
मुझे देख लो तो तुमको ही
मैं अपना संसार मान लूं।
छू लो, तो मैं हार मान लूं।।

५. तुम्हारी स्मृति

तब मुझे तुम याद आए।
जो हृदय की बात है वह,
ऑख से जब बरस जाए।
जब कि लहरों के हृदय का,
एक छाला फूटता है।
नील नभ से जब अचानक,
एक तारा टूटता है।।
जब कि बिखरी वायु-लहरों पर
'किसी' ने गीत गाए।
तब मुझे तुम याद आए।
तुम न आओगें कभी,
फिर भी प्रतिक्षा है तुम्हारी।
बस, तुम्हारी याद है, प्रिय!
और है यह रात सारी।।
मैं समाया स्वप्न में हूं, स्वप्न में मुझ में समाए।
तब मुझे तुम याद आए।
प्रेम की जो बात है वह,
शब्द से कैसे कहूँ मैं?
देखता हूँ मैं तुम्हें
दृग मूंद कर चाहे रहूँ मै।।
यह उदासी देख कर तुम एक दिन थे मुस्कराए।
तब मुझे तुम याद आए।
❄ ❄ ❄ ❄ ❄ ❄ ❄

३.हिन्दी का अर्थ

मेरी हिन्दी का अथ यही– वाणी। तुम रहना निर्विकार।
जैसे इतना है महाकाश, जिसमें नक्षत्रों का निनाद,
अविरत गति से होता रहता, उठता नहीं कोई विवाद
लघु लघु तारों को भी समेट, बनती ध्वनियों की धवल धार,
उस ज्योति वर्ष में किरण किरण का, जितना है कोमल प्रसार।
गतिद्रूत हो, या कि विलम्बित हो, गूंजे वीणा का तार–तार।
मेरी हिन्दी का अर्थ यहीं, वाणी! तुम रहना निर्विकार।
जैसे इतना व्यापक समीर, जिसमे न रहा है दिशा–भेद,
निर्गन्ध पुष्प को भी छूकर, जिसको न कभी कुछ हुआ खोद,
जो विषय प्रभंजन सब तोड़ना, हठवादी सब शैल–श्रृंग,
पर नव प्रभात के द्वार द्वार पर सींच रहा छवि की उमंग।
ऐसा समीर जो सांस–रुप से, जीवन ही करता पुकार।
मेरी हिन्दी का अर्थ यहीं, वाणी। तुम रहना निर्विकार।
वैसे जलती महा अग्नि, ढलता जिसमे भीषण प्रकाश,
अज्ञान–रुढियों के शव पर, हंसता है क्षण–क्षण महानाश
रखा छदमवेश धन अन्धकार जो छिपा रहा है क्षितिज–रेखा
उसके विघटन के लिये शक्ति बन हिन्दी लिखा दे भाग्य–लेखा।
निष्क्लुष बने सम्पूर्ण विश्व, मिट जाय भेद–गत अहंकार,
मेरी हिन्दी का अर्थ यहीं, वाणी। तुम रहना निर्विकार।
जैसे बहती है सहज धार, जिसमें जीवन का प्रवाह,
प्रंतिपल आगे बढ़ने का ही, जिसमें व्रत है अनुपम अथाह,
जिसकी बूंदों के कण–कण में है नवल तृष्टि का तरल रुप,
जिसकी लहरों का सहज गीत तट की वीणा पर है अनूप
लघु बुदबुद ने भी सिट सिट कर, सानी जीवन में नहीं हार।
मेरी हिन्दी का अर्थ यहीं, वाणी। तुम रहना निर्विकार।
जैसे सजी है तृष्टि पुनः ले सुरभित तन्बंगी तरंग,
जैसी शोभा से सजे राग–रंजित हिन्दी के सहज अंग
संस्कृति के सुरभित सुजन सजे, भूषित हो–रस प्रयोग वृन्त,
बहुरंगी विहंगो के क्लरव में स्वयं चला आए बसन्त,
तब जन–मन के ही सुमन सजें, बन सरस्वती के कण्ठ हार,
मेरी हिन्दी का अर्थ यहीं, वाणी। तुम रहना निर्विकार।

सुन्दर और असुन्दर

समय के अनन्त प्रवाह में जीवन ने बहुत कुछ देखा और सुना है. शैशव से लेकर वृद्धावस्था तक यह मनुष्य अपनी स्मृति में अनेकानेक चित्र सजाता आया है और जिन चित्रों से उसे मोह है, उनमें उसने अपनी कल्पना की तूलिका से गहरे रंग भर लिये हैं. जब यह कल्पना अनुभूति के समानान्तर चलती है, तब वह स्वस्थ होकर जीवन को राग रंजित करती है; जब उसके प्रतिकूल चलती है, तो वह स्वप्नों का रुप धारण करती है. इस भॉति अनुभूति और स्वस्थ कल्पना जीवन को व्यापक और विस्तृत बनाने में सदैव प्रयत्नशील रही हैं.

जीवन की गति अनेक अनुभूतियों की चित्रशाला हो रही हैं. ये अनुभूतियॉ लहरों की भॉति आती है और चली जाती है किन्तु जो लहर सूर्य और चन्द्र की किरण पा जाती है, वह उषा या ज्योत्स्ना की सुहासिनी बनकर जल में बिहार करती है और उसके सुनहले या रुपहले दुकूलों में सरिता का समस्त प्रवाह स्मृति की भॉति लीन हो जाता है. इसी प्रकार जब कोई अनुभूति जीवन की किसी मधुर स्मृति से जुड़ जाती है और किसी की मुस्कान की उषा या ऑसू की ज्योत्स्ना उस पर पड़ जाती है, तो वह अनुभूति ही कला बन जाती है और यही कला जीवन में राग की सृष्टि करती हुई चिरस्मरणीय बन जाती हैं.

चाहे उपनिषद हो, चाहे वेदान्त, चाहे 'ललित विस्तर' हो चाहे 'शुक्रनीति' अथवा वात्स्यायन का 'कामसूत्र' ही क्यों न हो, कला की पहिचान जीवन की ऐसी तरंग रही है जिसने मानवता की उज्जवल सतह पर सौन्दर्य का इतिहास अंकित कर दिया है. चैतन्य पर माया का जो आवरण है उसमें कला की ज्योति सबसे प्रखर हैं. यह आवरण चैतन्य को धूमिल नहीं करता वरन चैतन्य को जड़ पर प्रसारित कर आत्म-संतोष की भूमिका प्रस्तुत करता हैं.

इस भॉति कला जीवन की संचित स्मृति हैं जिसने अनेक साधनों से हमें सत्य की झॉकी दिखलाई हैं. वह साधन चाहे आकाश का वरदान शब्द या नाद हो, चाहे जल का वरदान तरल रहंग हो, चाहे पृथ्वी का वरदान पाषाण हो. यह सत्य जब विश्रृंखलता की झाड़ियों के बीच से फूल की भॉति विकसित हो उठता है तब उसे कला का कमनीय कलेवर मिलता हैं. पाशव-वृत्तियों की हिंसा भरी भूख जब तृप्त हो जाती है तब संतोष के आसन पर जो संत्ता है, वहीं तो कला हैं. आवश्यकता की ऊँचाई को पार कर जब हम भावना की चोटी पर पहुँचते हैं, तब हमारे सामने जीवन का जो दृश्य झूल जाता है, उसमें सौन्दर्यं का स्वर्ग निवास करता हैं.

पूर्व और पश्चिम दोनों ही दृष्टियों ने 'कला' को पहले विशेष कौशल से समुत्यन्त 'कार्य' के रुप में ही देखा, उसका स्वाभाविक जीवन के अभिव्यक्तिकरण से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं था. शुक्रनीति की चौंसठ और प्रबंधकोष की बहत्तर कलाऍ, काश्मीर-पंडित क्षेमेन्द्र की दो सौ आठ प्रमुख कलाऍ तथा भर्तृहरि के प्रसिद्ध श्लोक 'साहित्य संगीत कला विहीन' में कला की विशिष्ट स्थिति इस बात का संकेत करती हैं कि कला अपने आप में जीवन की प्रयत्नसाध्य कुशल अभिव्यक्ति ही रही. इसी प्रकार प्राचीन लैटिन में 'आर्स' का अर्थ ही कारीगरी हैं. बाद मे उसका अर्थशास्त्र हो गया जैसे व्याकरण या ज्योतिष. सत्रहवीं शताब्दी में जब सौंदय्र-भावना और सौंदर्य-रहस्य का विकास हुआ तब कला पर से शास्त्र का आवरण हटता हुआ दिखलाई पड़ा. अट्ठारहवीं शताब्दी ने 'कला' की विशिष्टता स्थापित की और उन्नीसवीं शताब्दी में 'कला कला के लिए' सिद्धात प्रचारित हुआ जब 'उपयोगी कला' और 'ललित कला' के बीच एक विभाजक रेखा खींची गयी. इस भॉति कला का संबंध क्रमशः सौन्दर्य भावना के समीप आता गया और वह धीरे-धीरे एक मात्र ललित भाव मूलक ही निर्धारित हुआ. कला विकास में जब 'उपयोग' की भावना का आधिपत्य हुआ है, तभी कला की सौंदर्यभावना ने विद्रोह किया हैं. उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जब व्यवसाय के लिये कला का प्रयोग भी होने लगा 'कला कला के लिए' का सिद्धात वायुमंडल में गूँजा और यह समझा गया कि कला का अस्तित्व केवल अपने लिए ही है. मानव की रागात्मक भावना के परितोष के अतिरिक्त उसका दूसरा ध्येय हीं नहीं हैं. इसी दृष्टिकोण को अपने समझ रखते हुए यह स्पष्ट किया जा सकता है कि कला के कक्ष में क्या सुन्दर है और क्या असुन्दर हैं.

जहॉ तक सुन्दरता का संबंध है, वह कला के लिये अनिवार्य हैं. रस में स्थायी भाव की तरह, वह कला में आदि से अंत तक वर्तमान हैं. यह सुन्दरता दो प्रकार की हैं, बाहय और अंतरंग. यों तो सुन्दरता का संबंध एक मात्र मनुष्य की रागात्मक प्रवृत्ति से हैं... जिसमें उसकी मानसिक प्रक्रिया सुख और संतोष से सम्मिलित भाव बिन्दु पर जाकर समाप्त होती हैं, किन्तु मानसिक प्रक्रिया को उत्तेजना देने वाली परिस्थितियॉ बाहय भी हो सकती हैं. बाहय परिस्थितियॉ इन्द्रियों को स्पर्श करती हैं और इंद्रियॉ जैसे एक नवीन आलोक से जगमगा उठती हैं. यह जगमगाहट यदि इंद्रियों तक ही सीमित रह गई और उसका प्रतिफलन यदि मन की मादकता में ही रह गया तो वह कला बाळय सौन्दर्य में

सीमित सामान्य कोटि की ही समझी जायगी. यदि बाहय परिस्थितियों से उत्पन्न मानसिक प्रक्रिया इन्द्रियों को पार कर मनुष्य के अंतकरणः को भी जगमगा सकी और उसकी समस्त भावनाएँ परिस्थितियों की परिधि से उठ कर किसी दिव्य आनन्द में लीन हो सकी तो वह उत्कृष्ट कोटि की कलात्मक अनुभूति होगी जो भीतरी सौंदर्य से उत्पन्न हैं. यह कला चाहे काव्य में हो, या संगीत में, चित्र मे हों, या मूर्ति में. सौन्दर्य के आश्रय से कला जीवन का मूल्यांकन करने में समर्थ होती है. दूसरी ओर जीवन भी नये-नये मापदंडो को लेकर कला की कोटियॉ निर्धारित करता हैं. इस भॉति जीवन और कला का अन्योन्याश्रित संबंध है, लेकिन शर्त यही है कि न तो जीवन अस्वाभाविक हो सके और न कला में ही कृत्रिमता का कुत्सित कीट प्रवेश कर सकें. कला अपनी प्रगति में सबसे पहला कार्य यही करती है कि वह जीवन की किसी अनुभूति को ग्रहण करती है, यह अनुभूति सदैव किसी संवेदना से अनुप्राणित होती हैं. इस दिव्य क्षण को वह सौन्दर्य के सॉचें में ढाल लेती हैं. इसके अनन्तर वह उसे अन्य अप्रधान और अनावश्यक परिस्थितियों से अलग करती है और उस एकांत अनुभूति को शब्द से, नाद से, रंग से या टॉकी से, काव्य, संगीत, चित्र या मूर्तियों में घनीभूत कर देती हैं. तब वह अनुभूति इस प्रकार खिल उठती हैं जैसे किसी वृन्त पर फूल, जिसकी मोहकता प्राणों में भी प्रवेश कर जाती हैं. स्वाभाविकता और सौन्दर्य के पार्श्व में सजी हुई यह कृति कला की अभिव्यक्ति कहलाती हैं. इस भॉति सौन्दर्यमयी अनुभूति की पहिचान, उसकी स्पष्टता और उसकी घनीभूत व्यंजना कला के निर्माण की प्रक्रियाएँ हैं.

दूसरी ओर जीवन अपनी पूर्ण अभिव्यक्ति के लिये कला को ही अपना माध्यम बनाना चाहता हैं. 'उपयोगितावाद' के लिए जीवन के अन्य माध्यम खोजने लगा हैं. अर्थशास्त्र और समाज शास्त्र इस उपयोगितावाद की प्रेरणा से ही समृद्ध हुए हैं. जीवन अपनी ललित अनुभूतियों के लिए कला को ही उचित कसौटी समझने लगा है. सभ्यता के बदलते हुए रुचि वैचिव्य ने काव्य के लिए नयी छन्दोबद्धता जो केवल नाद पर ही आधारित है, अथवा छन्दों से पूर्ण मुक्ति स्वीकार की है, भावना के सौन्दर्य की ही एकान्त अभिव्यक्ति काव्य की संज्ञा बन रही हैं. यही दृष्टि चित्र की रेखाओं और रंगों में भी आने लगी है, जहॉ विश्वकवि रवीन्द्र के चित्र अपनी नई कला कोटि निर्धारित करते हैं. संगीत के स्वर लोकगीतों की सहज प्रगति में मुखरित होने लगे हैं. यह अवश्य है कि इनमें संशोधन और परिवर्द्धन होगा तथा ये सौन्दर्य की नवीन अनुभूतियों को लेकर जीवन की गहराइयों मे प्रवेश करेंगें. लेकिन यह सत्य है कि कला का विकास नित्य नई मान्यताओं से होगा और उसकी प्रगति इसी सत्य की सूचना देने जा रही है कि जीवन अधिक से अधिक मात्रा में निर्द्वन्द, स्वाभाविक, सहज और प्रगतिशील हो और जो परंपराएँ अपना महत्व खो बैठी है उन्हें कला के क्षेत्र से निर्वासित कर दिया जाय.

इसी निर्वासन में कला के अन्तर्गत असुन्दर की बात आती हैं. सामान्य रुप ये यह असुन्दर तीन कोटियों में विभाजित किया जा सकता हैं. पहली कोटि तो तब मानी जानी चाहिए जब सौन्दर्य अपना अनुपात खो देता हैं. ऐसी स्थिति में वह सौन्दर्य परिहासोन्मुख हो जाता हैं. कोई स्त्री यदि अपने एक ही नेत्र में अंजन ऑजें या कुंकुम बिन्दु मस्तक पर भैाहों के मध्य में न लगा कर नाक की नोक पर लगा दे तो सौन्दर्य विकृति का पर्याय बन जायगा. इसी प्रकार कवि केशव की रामचन्द्रिका में अलंकारों की इतनी अधिकता है कि कविता का सहज रुप विकृत हो गया हैं. पद-पद पर छंदों में परिवर्तन और एक ही पंक्ति में तीन या चार अलंकर काव्य की सहज आनन्दानुभूति में बाधा उपस्थित करते हैं. काव्य में अलंकार एक पर दूसरे से ऐसे लदे हुये हैं जैसे कोई महाशय सितम्बर के महीने में ही बनियान, कमीज, पुलोवर, कोट तथा चैस्टर पहने हैं और उसके ऊपर उन्होंने कम्बल ओढ़ रक्खा हैं.

असुन्दर की दूसरी कोट वह है जब सौन्दर्य का उद्‌गम अनुराग से न होकर ईर्ष्या अथवा द्वेष से हो. यह समाचार प्रायः पढ़ने को मिलता है कि अमुक ईर्ष्यालु व्यक्ति ने अपनी सुन्दर स्त्री की हत्या कर दी. जीवन की सहज अनुभूति इससे अधिक क्या विकृत होगी? जिस कविता में हम सांप्रदायिकता के आवेश में आकर ईर्ष्या या द्वेष से किसी की निन्दा करते है, क्या उसे हम 'कला' की संज्ञा दे सकते हैं? प्रतिहिंसा से पूर्ण कला कला नहीं है. वह ऑधी की तरह उठती हैं और अपने हाथ कंकड़ पत्थर या सूखे पत्ते ही बटोर सकती हैं. विश्व मैत्री या विश्व बंधुत्व ही कला का लक्षण हैं. तभी तो क्रौंच-मिथुन में से एक क्रौंच के वध पर आदि कवि के नेत्रों में जो अश्रु उमड़े थे, उसी में आदि कला का प्रतिबिम्ब था.

तरी

✍डॉ. रामकुमार वर्मा

निस्पन्द तरी, अति मन्द तरी!
चल अविचल जल कल-कल पर
गुंजित कर गति की लघु लहरी।।निस्पंद
सॉसो के दो पतवार चपल,
सम्मुख लाते हैं नव-नव पल,
अविदित भविष्य की आशंका की
छाया है कितनी गहरी ।। निस्पंद
मेरी करुणा का मृदु सावन;
पुलकित कर दे तन-मन मन-मन,
विस्तृत नभ की व्याकुल विद्युत
पल-पल बन जाती है प्रहरी ।।निस्पदं

असुन्दर की तीसरी कोटि वह है, जब कला में वस्तुवाद इतना प्रखर हो जाता है कि वह वस्तुओं में निहित सौन्दर्य या रहस्य को समाप्त ही कर देता हैं. हमारी भूख जब उभरती है तो हम सेव पर उभरी हुई उषा की अरुणिमा और सिन्दूरी रंग की उलझ कर सुलझती हुई रेखाओं की शोभा नहीं देखते, उसे काट कर हज़म कर जाते हैं. उस समय हममें और वनमानुष में कोई अन्तर नहीं होता. इस बात को संभवतः कृष्ण के विरह में व्याकुल गोपियों ने सबसे अधिक समझाा था जब उद्धव महाशय उन्हें ज्ञान और वैराग्य का उपदेश देने के लिए गोकुल गए थें. उद्धव गोपियें के प्राणों में बसे हुए प्रेम को मोह समझ बैठे. वे गोपियें के प्रेम की गहराई और उसका रहस्य नहीं समझ सकें. तभी तो गोपियें ने उनसे कहा.....

हरि हमते कब हूँ न उदास।
तुम सो प्रेम कथा को कहियों मनहुं काटिबों घास।

जीवन के अन्तर्दष्टा सूरदास ने इस असुन्दर परिस्थिति में भी सुन्दरता की सृष्टि कर दी हैं.

इस प्रकार सौन्दर्य की विकृति, विश्व मैत्री का अभाव एवं परिस्थिति जन्य व्यंजनों के प्रति उपेक्षा, यही कला में 'असुन्दर' की सृष्टि करती हैं. सुन्दर और असुन्दर इन दोनों पक्षो के मध्य में भी एक स्थिति ऐसी हो सकती हैं जिसमें सुन्दर और असुन्दर अपने स्थान पर स्थित रहते हुए भी परस्पर बल ग्रहण करते है. ऐसी एक स्थिति महाकवि तुलसी के रामचरित मानस में हैं जहॉ 'अखण्ड काव्य' मे रावण के मनोभावों का चित्रण हुआ हैं. सीताहरण करते समय जब सीता ने रावण की निन्दा की तो उस स्थिति में रावण का चित्र उपस्थित करते हुए तुलसी ने लिखा-

सुनत वचन दस सीस रिसानां
मन महुँ चरण बंदि सुख माना।

इधर सीता से भर्त्सना सुन कर रावण क्रुध भी हुआ और उसने सीता के चरणों की वन्दना भी की. ये दो विरोधी भाव एक साथ हुए इसका कारण यह था कि रावण यह निश्चय पहले ही कर चुका था कि!

सुर रंजन भंजन महि भारा।
जैा भगवंत लीन्ह अवतारा।।
तौ मैं जाय वैर हठि करऊँ।
प्रभु सर प्रान तजे भव तरऊँ।।

रावण के ऊपरी व्यहवार में सीता 'सुमुखि' और 'सयानी' मात्र थी, पर हृदय में वे जगन्माता थी. रावण के समस्त चरित्र चित्रण में इन दोनों विचार धाराओं का निर्वाह समान रुप से हुआ हैं. 'असुन्दर' और 'सुन्दर' दोनों ही एक मात्र में स्थिर हैं और रावण के इस दुहरे चित्रण में जहॉ धार्मिक भावना की रक्षा हुई है, वहॉ कलात्मक अभिव्यक्ति भी सुलभ हो सकी हैं.

मैंने कला की सृष्टि जीवन के मनोविज्ञानमें ही देखी है, और इस भॉति कला का क्षेत्र अत्यधिक व्यापक हो गया हैं. चाहे कला किसी माध्यम से प्रकट हो या न हों, जीवन का मनोविज्ञान ही कला का सर्वप्रथम माध्यम हैं. इसीलिये कभी-कभी काव्य और संगीत या काव्य और चित्र परस्पर एक दूसरे से मिल जाते हैं. मीरा या महादेवी का काव्य संगीत का आश्रय लेकर हृदय को पवित्र कर देता है, इसी प्रकार प्रसाद का काव्य चित्रात्मकता लेकर सौन्दर्य की साकार सृष्टि करता हैं. श्रद्धा का यह चित्र कितना सजीव है:

नील परिधान बीच सुकुमार
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग,
खिला हो ज्यों बिजली का फूल
मेघ बन बीच गुलाबी रंग

अथवा

घिर रहे थे घुंघराले बाल
अंस अवलंबित मुख के पास
नील घन शावक से सुकुमार,
सुधा भरने को विधु के पास।

संभव है, सभ्यता की प्रगति मे सौन्दर्य की भावना अपनी दिशा बदले अथवा असुन्दर के प्रतीक संशोधित हो, किन्तु मेरा विश्वास है कि जब तक सौन्दर्य का संबंध, मानव की रागवृति से है, तब तक कला का जीवन नित्य और शाश्वत हैं. **(अनुशीलन से)**

तुम

✍ डॉ. रामकुमार वर्मा

तुम मनोहर गीत-सी.
हृदय में संजीवनी-सी, कंठ में नवनीत-सी।।
स्वप्न देखा-इन्द्रधनुषी रेख में
तुम कुछ झुकी हो,
हाथ मेंरा क्षितिज - रेखा है
कि जिससे तुम रुकी हो।
एक गहरी सॉस ली, कुछ उष्ण-सी, कुछ शीत-सी।।
तुम मनोहर गीत-सी
स्वप्न देखा-बादलों को
शशि किरण से धो रही हों,
देखता हूं मैं तुम्हें-तुम
संकुचित-सी हो रही हो।
जीत में मैं हार-सा हूँ, हार में तुम जीत-सी।।
तुम मनोहर गीत सी।

केवल जन्म देने से ही स्त्री-पुरुष को श्रेष्ठ माता-पिता होने का श्रेय नहीं मिल जाता. मां-बाप होकर भी वे अपनी संतान के शत्रु कहलायेंगें, यदि वे सन्तान को उत्तम शिक्षा नहीं देगें. विद्याहीन बालक का, चाहे वह कितने ही समृद्ध कुल का हो, समाज में आदर नहीं होता. उसका वही स्थान रहता है जैसा हंसो में बगुले का. ऊपर से दोनों एक से श्वेत दिखाई देते हैं, मगर गुण में दोनों अलग हैं **आचार्य चाणक्य**

निशा ज्योंति विद्यालय लगातार पॉचवे वर्ष पुरष्कृत

लगभग एक दशक से इलाहाबाद के औद्योगिक क्षेत्र नैनी में कुतूहल व मनोरंजन का विषय बना गणेशोत्सव इस वर्ष भी महाराष्ट्र युवा मण्डल द्वारा सम्पन्न हुआ. इसके उत्सव के आयोजन में मुख्य भुमिका सक्रिय समाज सेवी व भाजपा नेता श्री महेश मधुकर जी की ही रहती हैं. वे अपने कुछ सहयोगियो के द्वारा इतने बड़े आयोजन को अंजाम देते आ रहे हैं.

इस वर्ष कार्यक्रम का शुभारम्भ विश्व हिन्दू परिषद के अन्तराष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोक सिघंल द्वारा हुआ. इसके बाद गणेश बनो व गणेश बंदना प्रतियोगिता प्रारम्भ हुई. प्रतियोगिता में मॉ शारदा विद्या मंदिर, बी.एल. पब्लिक स्कूल, सुमन विद्या निकेतन तथा निशा ज्योति संस्कार भारती विद्यालय के ५ से १० वर्ष के बच्चों ने भाग लिया.

लेकिन इस विगत पांच वर्षो की भांति निशा ज्योति संस्कार भारती विद्यालय के बच्चे ने ही बाजी मारी. विद्यालय की गणेश बनों प्रतियोगिता में स्वाति, नीलम, ऑचल अरोरा व गणेश बदना में आंचल गोस्वामी, हर्षा, अंकिता, ज्योति मीना, राधा तिवारी, आरती सिंह, ज्योति टुटेजा तथा श्रद्धांजली छात्राओ ने भाग लिया. निशा ज्योति स्कूल के लगातार पांच वर्षो से प्रथम स्थान प्राप्त करने के पीछे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने वाली अदभुत कृतित्व की धनी मुख्य शक्सीयत श्रीमती शिखा हैं. जो अपनी काबिलियत को बच्चे के अंदर समाहित कर उन्हें मूर्त रुप देने में, अपनी नवीन सोच को अंजाम देने में कोई कसर बाकी नहीं रखती. वो निश्चित ही बधाई की पात्र हैं. इस तरह के प्रशंसित कार्यक्रम की प्रस्तुति में विद्यालय की कुशल प्रशासिका व आदर्श प्रधानाचार्या श्रीमती सपना गोस्वामी के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता. किसी भी सोच के पी
अगुवा की महत्वपूर्ण भूमिका
विद्यालय के संचालको में
सम्माननीय शायर हृदय, अद्भूत
के धनी श्री मोहित गोस्वामी का
भी कम नहीं हैं. जो बच्चो के
लेकर उनकी नाकामियो को
करने में महत्वपूर्ण भूमिका अ
रहते हैं.

प्रतिभा सम्मान योजना०६

साहित्यिक, सांस्कृतिक संस्था-साहित्यिक, सांस्कृतिक, कला संग अकादमी, प्रतापगढ विगत वर्षो की भांति इस वर्ष भी पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों एवं कला कृतियों की प्रदर्शनी एवं साहित्यिक प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा हैं. अकादमी अप्रैल०६ में अपने २५वें राष्टीय अधिवेशन में चयनित पत्रकारों, साहित्यकारों, कलाकारों को क्रमशः-'पत्रकारश्री, साहित्य श्री, व कला श्री सम्मान प्रदान करेगी. प्राप्त सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों के लेखको को क्रमशः पं. राजाराजत्रिपाठी स्मृति सम्मान, पं. शिव शंकर शुक्ल स्मृति सम्मान, सुश्री राजकिशोरी स्मृति सम्माान, रोहित कुमार माथुर स्मृति सम्मान, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी सम्मान, विवेकानन्द सम्मान, कबीर सम्मान, हिंदी गरिमा सम्मान ०६ व हिंदी प्रतिष्ठा सम्मान ०६ प्रदान किया जाएगा. सभी सम्माना एक हिंदी भाषी व एक-एक अहिंदी भाषी विद्वानों को दिए जायेंगें. मानदोपाधि 'विद्यावाचस्पति' व 'विद्या वारिधि' हेतू अलग से टिकट युक्त लिफाफा भेज कर फार्म मंगाएं. श्रेष्ठ २१ कृतिकारों को रजत-मेडल प्रदान किया जाएगा.

सम्मानोपाधियॉ कृतियों की श्रेष्ठता पर प्रदान की जाती है, अतः लेखक गण अपनी श्रेष्ठ कृतियों की दो प्रतियां, सम्पादक गण अपने प्रकाशन के तीन अंको की दो-दो प्रतियां, कलाकार या चित्रकार बन्धु स्व निर्मित चित्र या फोटोग्राफस के अलग-अलग तीन चित्र भेजें.

सभी प्रतिभागी बन्धु अपना जीवन परिचय, अपना एक चित्र, दो पता युक्त पोस्ट कार्ड ३५ रुपये का डाक टिकट १५ फरवरी २००६ तक अवश्य भेज दें. सभी निर्णय विद्वानों की एक कमेटी द्वारा लिए जायेंगे. अकादमी की सदस्यता ग्रहण करने के लिए लिफाफा भेज कर फार्म मंगा सकते हैं.

वृन्दावन त्रिपाठी 'रत्नेश' सचिव
साहित्यिक, सांस्कृतिक संस्था-साहित्यिक, सांस्कृतिक, कला संग अकादमी
परियावॉ, प्रतापगढ- २२६४१६, उ.प्र.

विकलांगो व असहायों को निःशुल्क शिक्षा : बी एन साहू

एक तरफ जहॉ आज विद्यालयों का बड़े पैमाने पर व्यवसायीकरण होता जा रहा हैं. विद्यालय केवल धनोर्पाजन के लिए खोले जा रहे है, समाज के गरीब, असहायों के लिए अच्छी शिक्षा एक स्वप्न सरीखे होती जा रही हैं ऐसे में इलाहाबाद के ट्रांसपोर्ट नगर में स्थित किशोर गर्ल्स इण्टर कॉलेज व किशोर कान्वेंट स्कूल अपने विद्यालय में विकलांगों व असहायो को निःशुल्क शिक्षा देकर एक अदभुत आयाम पेश कर रहा हैं. विद्यालय के प्रबंधक श्री वी.एन. साहू ने एक भेंट वार्ता में बताया कि विद्यालय की स्थापना १५ अगस्त १९८२ को स्व. किशोरी लाल साहू जी द्वारा किया गया था. तबसे विद्यालय निरंतर प्रगति की ओर अग्रसित हैं. विद्यालय में नर्सरी से कक्षा पांच तक अंग्रेजी माध्यम, एल.के. जी से कक्षा१२ तक हिन्दी माध्यम एवं कक्षा ६ से १२ तक केवल छात्राएँ पढ़ती हैं. विद्यालय ने गत वर्ष विद्यालय के संरक्षक शैलेन्द्र कुमार के सांसद निर्वाचित होने पर विद्यालय के निवर्तमान शुल्क में २०रुपये की कमी की गई. नये छात्रों को निःशुल्क ड्रेस एवं ३ कापी दी जाती हैं. विद्यालय में कम्प्यूटर की शिक्षा भी दी जाती हैं. 'विकलांग व असहाय बच्चों को निःशुल्क शिक्षा दी जाती हैं'. इसके अतिरिक्त समाज के कमजोर वर्ग के छात्रों के लिए शुल्क में आवश्यकतानुसार छूट दी जाती हैं. विद्यालय में बच्चों के आवागमन हेतू दाई एवं ट्राली की भी सुविधा है. पिछले वर्ष से हाईस्कूल व इंटर में पास होने वाली छात्राओं को २१००/-रुपये की नगद धनराशि उपहार स्वरुप प्रदान की जाती हैं. विद्यालय के मासिक एवं प्रवेश शुल्क में कोई वृद्धि नहीं की गई. विद्यालय में योग्य एवं अनुभवी शिक्षक/शिक्षिकाओं द्वारा पाठन की व्यवस्था, बच्चों के लिए खेल-कूद की व्यवस्था, छोटे बच्चे के लिए विशेष खेल द्वारा शिक्षा की व्यवस्था भी की गई हैं. विद्यालय की प्रधानाचार्या सुश्री सविता सिंह भदैरिया पूरे लगन से विद्यालय को बढाने में व शैक्षणिक माहौल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही हैं.

सम्मानार्थ प्रविष्टि आमन्त्रित

विन्ध्यवासिनी जन कल्याण ट्रस्ट (पं०) ई २०६ सी कृष्ण बिहार, नई दिल्ली-४१ ने देश के वरिष्ठ व प्रतिभाशाली साहित्यकारो से सम्मानार्थ प्रविष्टि आमन्त्रित किया हैं. देय सम्मान इस प्रकार है- बाबा दीप सिंह स्मृति सम्मान, सरदार बलवीर सिंह सम्माान, सरस्वती देवी स्मृति सम्मान, पं. अवधेश त्रिपाठी स्मृति सम्मान. प्रतिभागी गण प्रत्येक दशा में ३१ जनवरी ०६ तक अपना जीवन परिचय, अपना चित्र, दो पोस्ट कार्ड ३५ रुपये की डाक टिकट, अपने उत्कृष्ट कृति की दो प्रतियॉ रजि. डाक से भेंज दें. **सुशील कुमार पाण्डेय,** निदेशक

स्नेह व्यंजन

पालक शाही इडली

सामग्रीः पालक आधा किलो, दो कटोरी चावल, एक कटोरी उडद दाल, काजू, किशमिश, बादाम, पिस्ता, नमक, मीठा सोडा, तेल.

बनाने की विधिः दाल व चावल को साफ करके अलग-अलग छह सात घंटे तक भिगों दे. भीगने के बाद उसका पानी निकाल कर अच्छे पानी से धो ले फिर मिक्सी में अलग-अलग पीस लें. पीसने के बाद दोनो को मिला ले और स्वादानुसार नमक डालकर छह सात घटे के लिए ढक कर रखें जिससे कि मिश्रण में खमीर बन जाता हैं जितना ज्यादा खमीर बनता है उतनी ही इडली मुलायम बनती हैं. पालक को साफ करके अच्छी तरह से धोये फिर कुछ देर तक पालक को गरम पानी में रखें जब पालक थोड़ा गल जोय तब पानी से बाहर निकाले और मिक्सी में पीस लें. काजू, बादाम व पिस्ते को दो भागों में करके तेल में सुनहरा होने तक तलिये और किशमिश को कुछ देर तक गरम पानी में रखिये, जिससे किशमिश मुलायम व मोटी हो जाती हैं. पालक को दाल चावल के मिश्रण में मिलाये अगर नमक कम लगे तो और डालिये, फिर थोड़ा मीठा सोडज्ञ डालकर हिलायें.

अब इडली का सॉचा लेकर उसमें तेल लगाये और तैयार किया हुआ मिश्रण सॉचे में डाले ऊपर से काजू बादाम, पिस्ता व किशमिश डाले और गैस पर भाप से पकायें. जब इडली तैयार हो जाये तब सॉचों से बाहर निकाले और गरमागरम पालक शाही इडली चटनी, सांभर व सॉस के साथ पेश कीजिए.

श्वेता मंगल, एन.ए.२/१०२ए अजमेरा, पिपरी, पुणे-१८

सराहनीय रहा नगरिया स्कूल का कार्यक्रम

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर नगरिया पब्लिक स्कूल, नैनी, में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया. कार्यक्रम का शुभारम्भ जहॉगीर मेमोरियल के निदेशक व समाज सेवी डॉ. अनवार अहमद के द्वारा झंडारोहण से हुआ. कक्षा६ की छात्रा प्रतिभा कुमारी व्याख्यान, कक्षा १ छात्र सौरभ सिंह ने 'ऐसा देश बनाउंगा' नामक कविता का सस्वर पाठ किया. इसके पश्चात पर्यावरण सुरक्षा संबंधित अंग्रेजी नाटक अतिथियों व आमजन द्वारा काफी सराहा गया. सुशांत, सौरभ, शुभम्, ऋषि, शिवांगी, प्रयांशू एक एक ईमानदारी की प्रेरणा देता एक लघु नाटक प्रस्तुत किया गया. छात्रों द्वारा प्रस्तुत कव्वाली व छात्राओं द्वारा प्रस्तुत लोकनृत्य भी सराहनीय रहा. कार्यक्रम के अंत में प्रतिभाशाली छात्रों को मुख्यअतिथि द्वारा पुरस्कार वितरण किया गया. मुखय अतिथि के पद से बोलते हुए डॉ. अनवार अहमद ने विद्यालय व विद्यालय की शिक्षिकाओं व बच्चों की प्रशंसा करते हुए विद्यालय को एक हजार रुपये प्रोत्साहन स्वरुप प्रदान किया. कार्यक्रम का समापन विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती गीता नगरिया के धन्यबाद भाषण से हुआ. कार्यक्रम में अन्य अतिथियों में हाइकोर्ट के वकील श्री विद्यानिवास मिश्र, विश्व स्नेह समाज के संपादक श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी आदि उपस्थित थें.

कार्यक्रम को सचालन व तैयार कराने वाली विद्यालय की अध यापिका मिस जागृति नगरिया सहित अर्चना श्रीवास्तव, स्वीटी, भारती, अरविंद गुप्ता, सुशीला , श्रीमती ज्योति नगरिया, राजू आदि ने कार्यक्रम में अपना सहयोग प्रदान किया.

डॉ. राज बुद्धिराजा साहित्य भारती सम्मान से सम्मानित

विश्व के लब्धप्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में हिन्दी अध्यापन और स्वतंत्र लेखन से जुड़ी डॉ. राज बुद्धिराजा ने दुनिया को हिन्दी सिखाने का संकल्प लिया हैं. भारत जापान सांस्कृतिक परिषद की अध्यक्षा श्रीमती राज लगभग ३० देशों के ५० हजार से ज्यादा नागरिकों को सामान्य हिन्दी की शिक्षा दी हैं. जिनमें विभिन्न दूतावासों के अधिकारी और अन्य कर्मचारी शामिल हैं. वह विदेशीयों को उनकी भाषा के प्रतीकों के माध्यम से हिन्दी सिखाती हैं. पोलैंड के राजदूत प्रोफेसर प्रिस्की भी उकने विद्यार्थी रह चुके हैं. जापानी हिन्दी शब्दकोष को तैयार करने में वाली श्रीमती बुद्धिराजा को जापान सरकार ने उन्हें सर्वोच्च अलंकर 'द आर्डर ऑफ सेक्रेटइयर गोल्ड रेस विद नेक रिबन से सम्मानित किया जा चुका हैं. मई माह विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा सर्वोच्च सम्मान साहित्य श्री से भी सम्मानित हो चुकी है. हिन्दी की इस महान विद्धूषी महिला को हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने हिन्दी दिवस के अवसर पर संगीत समिति, इलाहाबाद में आयोजित कार्यक्रम में साहित्य भारती सम्मान से सम्मानित किया. विश्व स्नेह समाज की ओर से उनको हार्दिक बधाई

प्रविष्टियॉ आमंत्रित है

ग्राम भारती संस्थान (पं.) आलापुर, प्रतापगढ़, अप्रैल०६ मे अपने चतुर्थ साहित्यकार सम्माना समारोह में सम्मानार्थ प्रविष्टियॉ आमंत्रित किया हैं. देय सम्मान इस प्रकार है-कवीर सम्मान, पं. सुमित्रा नन्दन पंत सम्मान.

प्रतिभागी गण अपनी श्रेष्ठ पुस्तकों की दो प्रतियां, दो पता युक्त पोस्टकार्ड ३५ रु० की डाक टिकट, अपना जीवन परिचय व एक छाया चित्र जनवरी०६ तक पंजीकृत डाक द्वारा उपलब्ध करा दें. **शीवेन्द्र त्रिपाठी,** निदेशक

भाषा हमारे लिए साधन है, साघ्य नहीं,
मार्ग है, गन्तव्य नहीं आधार है, आश्रेय नहीं।
संविधान में व्यवस्था है, सरकार की अनुमति है
आवश्यक साधन सुलभ है, केवल संकल्प चाहिए।
दर्शन सिंह रावत

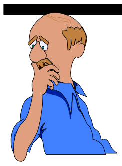

राजरानी चाय

जरा हंस दो मेरे भाय

☠पिता-चांद तुम इतनी देर से मुर्गा क्यों बनी हों.
चॉद-आप ही ने तो कहा था कि जो काम स्कूल में करती हो उसे घर में आकर दुहरा लिया करों. **वीणा सिंह**
पुत्री सत्येन्द्र बहादुर सिंह, नन्दना वार्ड पूर्वी, मास्टर कॉलोनी, बरहज, देवरिया

☠अंग्रेज (नौकर से) यह गमला किसने तोड़ा?
नौकर-साहब, गाय नें.
अंग्रेज-यह गाय क्या होता हैं?
नौकर-साहब, गाय बैल का मेमसाहब होता हैं.

☠ व्याकरण का टीचर-बच्चों, काल कितने तरह के होते हैं?
छात्र-दो तरह के- पहला-लोकल काल, दूसरा एस.टी.डी काल

☠पिता-(पुत्र से)कितना झूठ बोलते हो कि तुम रात १२ बजे तक पढ़ते रहे, जबकि लाईट तो रात ८ बजे ही चली गई थी.
पुत्र-पिताजी, मैं पढ़ने में इतना तल्लीन था कि लाइट जाने का मुझे पता ही नहीं लगा.

☠मम्मी-पारस, तुम क्यों रो रहे हों?
पारस-राजू ने मुझे मारा.
मम्मी-राजू कहां हैं?
पारस-उसकी मम्मी उसे अस्पताल लेकर गई हैं.

☠पोस्टमैंन (किसान से) सर, मुझे आपके इस पत्र के लिए १० किलोमीटर दूर से आना पड़ा.
किसान-कितने मूर्ख हो, इसे पोस्ट ही कर देना था.

☠टीचर- पानी का फार्मूला बताओं?
छात्र- एच.आई.जे.के.एल.एम.एन.ओ
टीचर-यह क्या कह रहे हों?
छात्र-आपने ही तो कहा था एच.टी.ओ.
अम्रिता कक्षा-३बी, सी.ओ-डी.पी.सिंह, १४१३/३, शास्त्री नगर, मेरठ

☠साधु प्रवृत्ति का एक व्यक्ति भगवान से फरियाद कर रहा था, 'हे भगवान! मुझे दर्द दे, सारे संसार का गम दें, कष्ट दे, तकलीफ दे.....'
उसका दोस्त, जो बहुत देर से सुन रहा था, से रहा न गया. वह बोला, 'इतनी डिमांड क्यों कर रहा है, सीधे बीबी हो क्यों नहीं मांग लेता'

☠एक अमेरिकन परिवार का उदारहण-एक वाइफ अपने हबी को फोन कर रही है, 'हाय हनी, जल्दी से घर जाओं. मेरे बच्चे और तुम्हारे बच्चे मिलकर हमारे बच्चों को पीट रहे हैं.

☠एक महत्वपूर्ण सूचनाः अगर आपकी मर्सिडीज या बीएमडब्लू कार के साथ-साथ साढ़े पांच करोड़ रुपये का इनाम चाहिए, तो कृपया लॉग आन करें'
www.apniaukaatpeaaja.com

☠सवाल-बीबी और मोबाइल में क्या समानता हैं?
जवाब-दोनों के आ जाने के बाद एहसास होता है, 'ओह! थोड़ा और रुक जाता, तो बेहतर मॉडल मिल जाता.'

☠मैनेजर-हम तुम्हें जॉब पर रख रहे हैं.
जॉनी-थैंक्स सर.
मैनेजर-अभी तुम्हें १२हजाजर रुपये प्रतिमाह मिलेंगें और तीन महीने बाद १५ हजार मिलेंगें.
जॉनी-फिर सर मैं तीन महीने बाद ही आउंगा.

☠आप अगर पागल हैं तो मिस्ड कॉल करेंगें,
महा पागल है, तो मैसेज करेंगें,
बेवकूफ हैं, तो रिंग करेगें,
और यदि तीनो हैं तो चुप रहेगें.

☠पुलिस-ये गाय और बछड़ा किसके हैं?
टॉम-गाय का तो मुझे पता नहीं लेकिन बछड़ा किसका है यह मैं जानता हूँ.
पुलिस-फिर बताते क्यों नहीं?
टॉम-जी, गाय का.

☠कैप्टन-तुम्हारा दिल कमजोर तो नहीं हैं?
नया पायलट-नहीं सर, मेरा दिल तो इतना मजबूत है कि तीन-तीर बार दिल का दौरा पड़ने पर भी मैं जिंदा हूं.
कैप्टन-दौरे तुम्हें कब-कब पड़े थें?
पायलट- जब माधुरी दीक्षित, काजोल और करिश्मा की शादी हुई थी.

राजा हो या रंक, सबकी पसंद राजरानी चाय

हमारे अन्य प्रोडक्टः

राजरानी सब्जी मसाले, राजरानी हल्दी, राजरानी लाल मिर्च, राजरानी सेवई, राजरानी ऑवला चूर्ण, राजरानी चटपटा, राजरानी हीग, राजरानी मीट मसाला,

निर्माताः श्री पवहारी इण्डस्ट्रीज,इलाहाबाद

चुटकुले भेजिए और पाइए राजरानी चाय के पैकेट मुप्त

अच्छे चुटकुले भेजने वाले व्यक्ति को राजारानी चाय की तरफ से ५ किलों, २ किलों, १ किलों, ५०० ग्राम, २५० ग्राम के चाय पैकेट मुफ्त पाइए.

कूपन सं. 6 अक्टूबर 05
विश्व स्नेह समाज

गर्भनिरोध के कुछ उपाय

अंतिम भाग

☞आधुनिक समय में मेडिकल साइंस की प्रगति के कारण महिलाएं अधिक उम्र में भी सामान्य ढंग से गर्भधारण कर सकती है, लेकिन उन्हें निरंतर डॉक्टरी देखरेख में रहना होता हैं.

☞डॉक्टरी सलाह से आवश्यक जांच करवा लें, जिनके द्वारा जन्म से पहले ही आनुवंशिक दोषों का पता लगाया जा सकता हैं.

☞ अचानक गर्भपात होने का एक विशेष कारण क्रोमोजोम की असमान्यता होता हैं.

☞ ऐसी स्थिति में अगर शिशु का जन्म होता भी है, तो उसमे कई जन्मजात दोष या मानसिक विकृति तक आ सकती है.

☞शिशु का वजन तथा सामान्य बुद्धि भी आनुवंशिकता व घर के वातावरण से निर्धारित होती हैं.

☞शिशुओं में मल्टीफेक्टोरियल डिसऑर्डर भी बहुत सामान्य है, जिनसे कई जन्मजात दोष हो सकते है, जैसे दिल की बीमारियां, मधुमेह, मानसिक रोग आदि.

☞शिशुओं में वंशानुगत दोष भी माता-पिता के जींस से उसी प्रकार आते हैं, जैसे उनके नाक-नक्श, रंगत या कदकाठी.

☞वंशानुगत दोष शिशुओं में तीन प्रकार से आते हैं-डॉमिनेंट, रिसेसिव और एक्स लिंक्ड.

☞पहले दोष में यदि माता-पिता में से किसी एक में बीमारी के जींस हैं, तो शिशु मेंवह रोग होने की आशंका पचास प्रतिशत हैं.

☞दूसरे प्रकार में यदि माता-पिता में से किसी एक में बीमारी के जींस है, मगर रोग के लक्षण ऊपरी तौर पर नहीं दिखते हैं, ऐसी स्थिति में भी शिशु को रोग हो सकता हैं.

☞तीसरी स्थिति का संबंध एक्स-क्रोमोजोम से हैं, जो कि स्त्री में होते हैं.

☞मां को कोई रोग होने पर लड़कियों में यह रोग होने की संभावना पचास प्रतिशत रहती है, जो भविष्य में उनकी बेटियों को भी हो सकता हैं.

☞लड़के भी मां से बीमारी वाले जींस ग्रहण करते हैं, लेकिन वे उसे अगली पीढ़ी में आगे नहीं बढ़ा पातें.

☞डॉक्टरी परामर्श से ही गर्भधारण करें और नियमित जांच करवाएं.

☞यदि किन्हीं दोषों के लक्षण माता-पिता में दिखायी ना भी दें, मगर दोनों परिवारों में रक्त संबंध ी कोई बीमारी है, तो भी इसके विषय में डॉक्टर को अवश्य बताएं.

☞गर्भाधान से पूर्व माता-पिता दोनों अपने आवश्यक टेस्ट अवश्य करवाएं.

☞ यदि इलाजा के बाद गर्भधारण करने व शिशु के जन्म में समस्या आने की आंशका कम होती है, तो पहले अपना इलाज करवाएं.

☞कुछ अति विशिष्ट परिस्थितियों में डॉक्टर मां ना बनने की भी सलाह देते हैं.

☞ऐसी स्थिति में अंधविश्वासों में ना पड़ कर डॉक्टरी सलाह का अनुकरण करें.

☞बच्चे को गोद ले लेना इसका सबसे अच्छा विकल्प होगा.

☞कभी-कभी गर्भावस्था के किसी चरण में बच्चें के दोषयुक्त होने, मानसिक-शारीरिक विकास कम होने का पता चलने पर डॉक्टर इमर्जेंसी गर्भपात की सलाह देते हैं, जो आपके व बच्चे दोनों के लिए उचित हैं.

☞इन परिस्थितियों में धीरज रखें. दोषयुक्त बीमार बच्चे को जन्मदे कर आप व शिशु दोनों ही सुखी नहीं रह सकेगें.

☞स्वस्थ शिशु व अपने परिवार के सुख के लिए सभी आवश्यक उपायों को अपनाएं.

स्वास्थ्य समस्याएं

डॉ. श्रीमती पी. दूबे

प्रश्नः मेरे आगे वाले दांतो के मसूढ़े हटने लगे हैं. मेरी उम्र केवल १८ वर्ष है. पिछले साल कई दिनों तक चले जुकाम की वजह से मेरे दांत ढीले पड़ गए थें. दांतो व मसूढ़ों की मजबूती व सुरक्षा के लिए कोई कारगर उपाय बताएं हैं? नाहिद अख्तर, मुरादाबाद

उत्तरः मसूढ़े हटने से दांत कमजोर हो जाते हैं और उनकी जड़े दिखाई देने लगती हैं. इससे दांतो में इंफेक्शन की संभावना बढ़ जाती हैं. अगर दांत साफ नहीं है, उनके नीचे क्रेस्ट का जमाव है, तो उनकी सफाई करा लें एवं सही तरीके से ब्रश करें. इसके लिए नजदीक के किसी दंग रोग विशेषज्ञ से मिल लें.

प्रश्नः मुझे करीब चार सालों से कब्ज और सिरदर्द की शिकायत हैं. साथ ही मेरी बांहो, पलकों और मूछों में रुसी होने के कारण बाल तीव्र गति से गिर रहे हैं. कोई इलाज बताएं. संतोष कुमार दुबे, गाजीपुर

उत्तरः कब्ज एक आम बीमारी हैं. यह पेट एवं अन्य बीमारियों से जुड़ी हो सकती हैं. समय पर एवं रेशेदार भोजन न करने, पानी कम पीने एवं व्यायाम न करने से भी कब्ज बना रह सकता हैं. इससे अन्य तरह की बीमारियां हो सकती हैं, जैसे सिर में दर्द, सीने में भारीपन आदि. जहां तक रुसी एवं बालों के गिरने की बात हैं, तो यह संतुलित भोजन न लेने से हो सकता हैं. आप रुसी वाली जगह पर नारियल का तेल लगाएं तथा पौष्टिक भोजन, अंकुरित दालों एवं मूंगफली का सेवन करें. आपकी समस्या काफी हद तक हल हो जाएगी.

५५ वें जन्म दिवस पर हार्दिक बधाई

सुप्रसिद्ध बाल्य कवि

डॉ०. विनय कुमार मालवीय,

को १६ अक्टूबर को उनके ५५ वें जन्म दिवस पर हार्दिक बधाई

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी, सचिव

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद

With Best Compliment From

MARVA ENGINEERS

32-B, Industrial Colony, Naini, Allahabad-211008

Ancillary unit of Alstom Ltd.
Naini, Allahabad

Harjeet Singh Marva
M.D.

Ph.: 2697080, **Mo:**9335129191, 9335362425

योग-साधना

ऋषि परंपरा में योग–साधना व आध्यात्मिक ग्रंथों के स्वाध्याय के जिज्ञासु पत्र–व्यवहार करें–

महर्षि गिरिधर योगेश्वर
(एम.ए.-इगलिशं लिट. एवं संस्कृत,हानर्स, गोल्ड मेडलिस्ट)
योगधाम, पो. गुलेर, कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश
पिन-१७६०३३
फोनः ०१९७०-२६५२८९

चौक का दाम अब सिविल लाईन्स में खुल गया कपड़ो का भव्य शो रूम

स्टूडेन्ट्स टेलर्स, शगुन चौक की नई भेंट

THE REVISIT SHOP

Raymond

मीना बाजार के सामने, सेल्स टेक्स आफिस के नीचे सिविल लाईन्स, इलाहाबाद फोन : 2608082

With Complement for

Kishore Girls High Scool & Convent School

Reco. By. U.P.Government
Nursery to Class XII[th]

- Education by experienced Teachers
- Good Atomosphere For Education
- Limited Students in every Class

Cont.: 82/102, Meera Patti, T.P. Nagar, G.T. Road, Allahabad

Manager
V.N.Sahu

30 अक्टूबर 2005 के भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासं/I की राष्ट्रीय अधिवेशन, दारुलसफा, लखनऊ में सभी पत्रकारों बंधुओं से सम्मेलन में शामिल होने की अपील करता हैं.

निवेदकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी, प्रांतीय संगठन मंत्री, भा.रा.प.महासंघ

सभी स्नेही पाठकों को राष्ट्रीय मासिक पत्रिका विश्व स्नेह समाज की तरफ से विजयदशमी व दिपावली की हार्दिक बधाईयाँ